





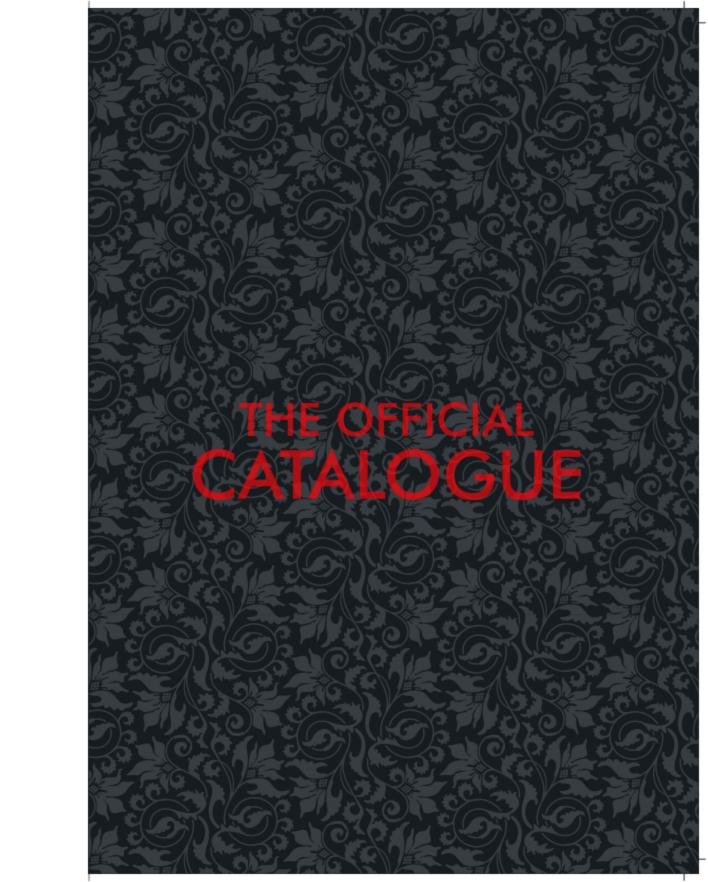


OFFICIAL CATALOGUE



Directorate of Film Festivals
Ministry of Information and Broadcasting.
Government of India Siri Fort Auditorium Complex August Kranti Marg, New Delni-110049 Website: www.dff.nic.in







CONTENTS

DADASAHEB PHALKE AWARD

About Dadasaheb Phalke Award (०९) दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार के विषय में

Dadasaheb Phalke Award Past Recipients (12) दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार : अब तक सम्मानित

Award Committee (16) पुरस्कार चयन समिति

Gulzar : Profile (20) गुलजार : प्रोफाइल

Jury in Process and Overview (28) जूरी की निर्णायक प्रक्रिया और एक समीक्षा

Feature Film Jury Members (30) निर्णायक मंडल सदस्य (फीचर फिल्म)

Non-Feature Film Members 36 निर्णायक मंडल सदस्य (गैर-फीचर फिल्म)

Best Writing on Cinema Jury Members (40) निर्णायक मंडल सदस्य (सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन)

Regional Feature Film Jury Members (42) प्रादेशिक निर्णायक मंडल सदस्य (फीचर फिल्म)

FEATURE FILMS

Feature Films - at a Glance (50) फ़ीचर फ़िल्म्स - एक नज़र में

Best Feature Film (52) सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म

Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director (54) इन्दिरा गांधी पुरस्कारः निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment 56 लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Best Film on Social Issues 60 सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Norgis Dutt Award for Best Film on National Integration (58) निर्मिस दत्त पुरस्कार : राष्ट्रीय एकता पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Best Film on Environment / Preservation (62) पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Best Children's Film (64) सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म

Best Assamese Film (66) सर्वश्रेष्ठ असमिया फिल्म Best Bengali Film (68) सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फिल्म

Best Hindi Film 70 सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म

Best Kannada Film (72) सर्वश्रेष्ठ कन्नड फिल्म Best Konkani Film 74 सर्वश्रेष्ठ कॉकणी फ़िल्म

Best Malayalam Film 76 सर्वश्रेष्ठ मलयालम फ़िल्म

Best Marathi Film 🚜 सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़िल्म

Best Tamil Film 👸 सर्वश्रेष्ठ तमिल फ़िल्म

Best Telugu Film 😡 सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म

Best English Film 🚜 सर्वश्रेष्ठ अंग्रेज़ी फ़िल्म Best Khasi Film 86 सर्वश्रेष्ठ खासी फ़िल्म

Best Sherdukpen Film 🚜 सर्वश्रेष्ठ शेर्द्कपेन फिल्म



FEATURE FILMS

Special Jury Award 90 निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

Best Direction (94) सर्वश्रेष्ठ निर्देशन

Best Actor (95) सर्वश्रेष्ठ अभिनेता

Best Actress 97 सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री

Best Supporting Actor (98) सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता

Best Supporting Actress (99) सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री

Best Child Artist 101 सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार

Best Male Playback Singer 103 सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक

Best Female Playback Singer 104 सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका

Best Cinematography (105) सर्वश्रेष्ठ छायाकार

Best Screenplay (Original) 106 सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौलिक)

Best Screenplay (Adapted) 107 सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित)

Best Screenplay (Dialogue) 108 सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद)

Best Audiography (Location Sound) 109 सर्वश्रेष्ठ पटकथा (लोकेशन साउंड)

Best Audiography (Sound Design) 110 सर्वश्रेष्ठ साउंड डिज़ाइन

Best Audiography (Re-recording of Final Mixed Track) 🕦 सर्वश्रेष्ठ ध्वान्यांकन (फाइनल साउंड मिक्सिंग)

Best Editing 112 सर्वश्रेष्ठ सम्पादन

Best Production Design (113) सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिजाइन

Best Costume Design 114) सर्वश्रेष्ठ वेशमुषाकार

Best Make-up Artist (115) सर्वश्रेष्ठ रूपसज्जा

Best Music Direction (Songs) 116 सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (गीत)

Best Music Direction (Background Score) 117 सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (पार्श्व संगीत)

Best Lyrics 118 सर्वश्रेष्ठ गीत

Best Special Effects 119 सर्वश्रेष्ठ रपेशल इफैक्ट्स

Best Choreography (120) सर्वश्रेष्ठ नृत्य संयोजन

Special Mention 121 विशेष उल्लेख

Synopses- Feature Films 123 सारांश-फीचर फ़िल्म्स

NON-FEATURE FILMS

Non-Feature Films - at a Glance (128) गैर फीचर फ़िल्म्स एक नज़र में

Best Non-Feature Film 130 सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म

Best Debut Non-Feature Film of a Director (132) निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म

Best Biographical Film (134) सर्वश्रेष्ठ जीवनी फिल्म

Best Arts and Culture Film 136 सर्वश्रेष्ठ कला और सांस्कृतिक फिल्म

Best Science & Technology Film (140) सर्वश्रेष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी फिल्म

Best Promotional Film (142) सर्वश्रेष्ठ प्रोत्साहन देने वाली फिल्म

Best Environment Film (146) सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फ़िल्म

Best Film on Social Issues 148 सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Best Educational Film (150) सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फिल्म

Best Investigative Film 152 सर्वश्रेष्ठ खोजपरक फिल्म

Best Short Fiction Film (154) सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फिल्म

Best Film on Family Values (156) पारिवारिक मूल्यों पर बनी सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Special Jury Award 1158 निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

Best Direction (160) सर्वेश्रेष्ठ निर्देशन

Best Cinematography (161) सर्वश्रेष्ठ छायांकन

Best Audiography (162) सर्वश्रेष्ठ ऑडियोग्राफी

Best Editing (163) सर्वश्रेष्ठ संपादन

Best Music Direction (164) सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन

Best Voice Over 165 सर्वश्रेष्ठ वायस ओवर

Special Mention (166) विशेष उल्लेख

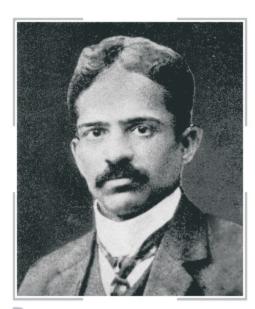
Synopses - Non-Feature Films (170) सारांश - गैर-फीचर फिल्म्स

BEST WRITING ON CINEMA

Best Book on Cinema (174) सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक

Best Film Critic (176) सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक

DADASAHEB PHALKE



hundiraj Govind Phalke or Dadasaheb Phalke (1870-1944) is regarded as the father of Indian cinema. He directed India's first feature film, Raja Harishchandra, in 1913, flagging off a remarkably inventive career. A producer, director and screenwriter, he is believed to have made a significant number of the 95 feature films and 26 short films that his company Hindustan Films made in barely 15 years. His amazing body of films include Mohini Bhasmasur (1913), Satyavan Savitri (1914), Lanka Dahan (1917), Shri Krishna Janma (1918) and Kaliya Mardan (1919).

His rapid career switches, headstrong nature and trips abroad, more closely characterise a teenager in the 21st century, than a family man at the dawn of the 20th century. Starting out in a photography studio, he studied art, was a magician and stage performer, before joining the printing business. Inspired by the painter Raja Ravi Varma, Phalke specialised in lithographs and oleographs. Later, he started his own printing press, and even travelled to Germany to learn more about the latest technology and machinery. However, following a dispute with his partners, he quit the printing business. Greatly impressed by a silent film, The Life of Christ, he decided to make a film. He sailed for London and bought a camera, printing machine, perforator and raw stock, and even got a crash course in film-making. He soon made Raja Harishchandra, on a righteous king who sacrifices his family and kingdom to fulfil a vow and uphold the truth. India's first feature film Raja Harishchandra was exhibited at Bombay's Coronation Cinema in 1913, and was a grand success. Undeterred when World War I brought a severe financial and raw stock crunch, he made shorts. documentary features, educational, animation and comic films. Soon he established a film company, Hindustan Films, in partnership with five businessmen, with a studio, and trained technicians and actors. Again he ran into trouble with his partners and quit.

Phalke directed a few more films, but felt constrained. Moreover, his silent films were unable to cope with competition from the talkies after 1931. Among his last films were Setu Bandhan (1932) and a talkie, Gangavataran (1937). He died in 1944. Dadasaheb Phalke leaves behind a pioneer's legacy, not only of his astonishing films, but a joyous inventiveness, and a resilient, unbowed spirit that weathered many reverses and personal tragedies. Little did he know then that he was laying the foundation for the Indian film industry, today the most prolific and diverse in the world.

भारतीय सिनेमा के जनक ढुंढिराज गोविंद फाल्के या दादासाहेब फालके (1870—1944) ने 1913 में भारत की पहली फीचर फिल्म राजा हरिश्चंद्र के द्वारा एक विलक्षण नवोन्मेषी फिल्मी जीवन की शुरुआत की। निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक के रूप में उन्होंने अपनी कंपनी हिंदुस्तान फिल्म्स के द्वारा सिर्फ 15 सालों में 95 फीचर फिल्मों और 28 लघु फिल्मों का निर्माण किया। उनकी महत्त्वपूर्ण फिल्मों में मोहिनी भरमाखुर (1913), सत्यवान सावित्री (1914), लंका वहन (1917), श्री कृष्ण जन्म (1918) और कालिया मर्दन (1919) शामिल हैं।

तेजी से बदलता कैरियर, हठी स्वमाव और विदेश यात्राएं, 20वीं सदी के उषाःकाल में एक पारिवारिक व्यक्ति की बजाए उन्हें 21वीं सदी के किशोर के ज्यादा नजदीक ले आते हैं। मुद्रण व्यवसाय में प्रवेश करने से पहले उन्होंने फोटोग्राफी स्टुडियों से अपना कार्य शुरू किया। फिर कला की शिक्षा प्राप्त की और वे एक जादूगर और मंच कलाकार भी बने। चित्रकार राजा रिव वर्मा से प्रेरित होकर उन्होंने लीथोग्राफी और औलियोग्राफी में दक्षता हासिल की। बाद में उन्होंने अपना प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया। आधुनिकतम प्रौद्योगिकी और मशीनरी के बारे में सीखने के लिए उन्होंने जर्मनी की यात्रा भी की। हालांकि अपने मागीदार के साथ विवाद होने पर उन्होंने मुद्रण व्यवसाय छोड़ दिया। एक मूक फिल्म दि लाइफ ऑफ क्राइस्ट से गहरे रूप में प्रभावित होने पर उन्होंने फिल्म बनाने का निर्णय

लिया। उन्होंने लंदन से एक कैमरा, प्रिंटिंग मशीन, परफोरेटर और कच्चा माल खरीदा। उन्होंने वहीं पर फिल्म बनाने का क्रैश कोर्स भी किया। इसके बाद उन्होंने भारत की पहली फीचर फिल्म राजा हरिश्चंद्र बनायी। इस फिल्म को 1913 में बंबई के कोरोनेशन सिनेमा में प्रदर्शित किया गया और उसे अपार सफलता मिली। प्रथम विश्वयुद्ध के कारण भयंकर वित्तीय और कच्चे माल का संकट वैदा हो गया था, फिर भी उनका हौसला परत नहीं हुआ। उन्होंने लघु, वृत्तवित्र शिक्षाप्रद, ऐनिमेशन और हास्य फिल्में बनायीं। जल्दी ही उन्होंने पाँच व्यावसायिकों की भागीदारी में एक फिल्म कंपनी हिंदुस्तान फिल्म्स की स्थापना की, जिसमें एक स्टूबियो था और प्रशिक्षित टेक्नीशियन और अभिनेता भी थे। एक बार फिर वे अपने भागीदारों के साथ संकट में फंस गये और उन्होंने कंपनी छोड़ दी।

फाल्के ने कुछ और फ़िल्मों का निर्देशन किया लेकिन वे अब अवरोध महसूस करने लगे थे। 1931 के बाद उनकी मूक फ़िल्में सवाक फ़िल्मों के साथ प्रतिद्वंद्विता नहीं कर पा रही थीं। उनकी अंतिम फ़िल्मों में सेतु बंधन (1932) और सवाक फिल्म गंगावतरण (1937) थीं। 1944 में उनका देहाबसान हो गया। दादा साहब फाल्के अपने पीछे फिल्मों की एक महान परंपरा छोड़ गये हैं। उन्होंने कई विपत्तियों और निजी त्रासदियों को झेला और ऐसे मारतीय फ़िल्म उद्योग की बुनियाद रखी जो आज विश्व में सर्वाधिक सफल और वैविध्यपूर्ण फ़िल्म उद्योग है।



010 DADASAHEB PHALKE AWARD NATIONAL FILM AWARDS 13 011

DADASAHEB PHALKE AWARD - PAST RECIPIENTS







B.N. Sircar = 1970 =



Prithviraj Kapoor = 1971 =



Pankaj Mullick = 1972 =



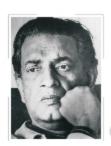
Naushad Ali = 1981 =



L.V. Prasad = 1982 =



Durga Khote = 1983 =



Satyajit Ray = 1984 =



Sulochana (Ruby Myers) = 1973 =



B.N. Reddy = 1974 =



Dhiren Ganguly ■ 1975 ■



Kanan Devi ■ 1976 ■



V. Shantaram = 1985 =



B. Nagi Reddy = 1986 =



Raj Kapoor ■ 1987 ■



Ashok Kumar = 1988 =



Nitin Bose = 1977 =



R.C. Boral = 1978 =



Sohrab Modi = 1979 =



P. Jairaj = 1980 =



Lata Mangeshkar = 1989 =



A. Nargeswara Rao = 1990 =



B.G. Pendharkar = 1991 =

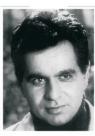


Dr. Bhupen Hazarika = 1992 =

DADASAHEB PHALKE AWARD - PAST RECIPIENTS



Majrooh Sultanpuri = 1993 =



Dilip Kumar = 1994 =



Dr. Rajkumar = 1995 =



Shivaji Ganesan = 1996 =



Shyam Benegal = 2005 =



Tapan Sinha = 2006 =



Manna Dey = 2007 =



V.K. Murthy = 2008 =



Kavi Pradeep = 1997 =



B.R. Chopra = 1998 =



Hrishikesh Mukherjee



Asha Bhosle = 2000 =



D. Ramanaidu = 2009 =



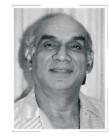
K. Balachander = 2010 =



Soumitra Chatterjee = 2011 =



Pran = 2012 =



Yash Chopra = 2001 =



Dev Anand = 2002 =



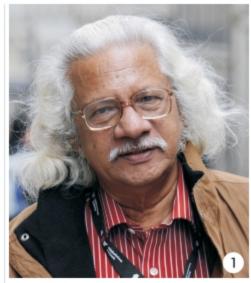
Mrinal Sen ≡ 2003 ≡



Adoor Gopalakrishnan = 2004 =

014 DADASAHEB PHALKE AWARD NATIONAL FILM AWARDS 13 015

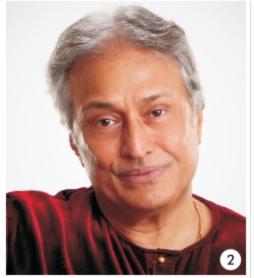
DSP AWARD COMMITTEE



ADOOR GOPALAKRISHNAN

Adoor Gopalakrishnan has played a major role in revolutionizing Malayalam cinema and is regarded as one of the greatest film-makers of India. He graduated from the Film and Television Institute of India in 1965. He founded the Chitralekha Film Co-op in Trivandrum, the first of its kind in India, set up by FTII students as a productiondistribution centre for personal films outside the commercial sector, Adoor's first film, Swayamvaram (1972), pioneered the new wave cinema movement in Kerala. His films have consistently set the benchmark for artistic excellence and have been favourites at international

अंडर गोपालाकष्णन ने मलयालम सिनेमा में क्रांति लाने में प्रमुख भूमिका निभाई और उनकी गिनती भारत के महान फिल्म निर्माताओं में की जाती है। उन्होंने फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया से 1965 में रनातक उपाधि प्राप्त की। उन्होंने चित्रलेखा फिल्म कॉपरेटिव की त्रिवेंद्रम में स्थापना की जो एफटीटीआई के छात्रों द्वारा शुरू किया गया प्रोडक्शन एवं वितरण का भारत में अनोखा केंद्र था जो कमर्शियल सेक्टर के बाहर था। अड्र की पहली फिल्म *स्वयंवरम* (1972) ने केरल में नए सिनेमा की नींव रखी।



AMJAD ALI KHAN

sarod by Songlines World Music Magazine, UK, in 2003, Amjad Ali Khan has performed internationally since the 1960s. He gave his first recital of sarod at the age of 6. He is the subject of two books: The World of Amjad Ali Khan Freedom. He has recently been awarded the 21st Rajiv Gandhi National Sadbhavna Award. He received the Akademi Fellowship for 2011.

अमजद अली खान को ब्रिटेन में संगीत की पत्रिका सोंन्गलाइंस बी सरोजा देवी भारतीय सिनेमा के इतिहास की सबसे सफल में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और 2011 में संगीत नाटक एक रिकॉर्ड है। अकादमी फैलोशिप प्रदान की गई।



B. SAROJA DEVI

Called 'one of the twentieth century's greatest masters of B. Saroja Devi is one of the most successful female film stars in the history of Indian cinema. In a career spanning close to six decades, she has acted in close to 200 films across a number of languages: Kannada, Tamil, Telugu and Hindi. She is referred to as 'Abinaya Saraswathi' by and Abba: God's Greatest Gift to Us (written by his sons Kannada film industry and as 'Kannadathu Paingili' Amaan and Ayaan) - and a documentary, Strings for (meaning Kannada's Parrot) by the Tamil Film Industry. She was at her peak as the main female lead heroine in films in the period 1958-85. Saroja Devi has received the Padma Padma Shri in 1975, the Padma Bhushan in 1991, and the Shri, the fourth-highest civilian honour and Padma Padma Vibhushan in 2001, and was awarded the Sangeet Bhushan, the third-highest civilian award. She holds the Natak Akademi Award for 1989 and the Sangeet Natak record for being the actress with most number of films as the lead heroine: 161 films from 1955 to 1984.

वर्ल्ड म्युजिक वर्ल्ड ने 2003 में 'बीसवीं सदी के महानतम सरोद फिल्मी सितारों में गिनी जाती हैं। करीब छह दशक के अपने फिल्मी बादकों में एक' करार दिया। उन्होंने 1960 के बाद से अंतरराष्ट्रीय जीवन में उन्होंने विभिन्न भाषाओं जैसे कन्नड, तमिल, तेलुगू और मंचों पर प्रस्तुतियां दी हैं। उन्होंने अपना पहला सरोद वादन 6 वर्ष हिंदी की लगभग 200 फिल्मों में अभिनय किया। कन्नड फिल्म की आय में किया। वह दो पस्तकों - द वर्ल्ड ऑफ अमजद अली उद्योग में उन्हें 'अमिनय सरस्वती' के रूप में जाना जाता है और खान तथा अब्बाः गांडस ग्रेटेस्ट गिपट दू असं के किरदार हैं। उन्हें तिमल फिल्म उद्योग ने उन्हें 'कन्नडात् पेन्गिली' (कन्नड की पैस्ट) हाल ही में 21 वें राजीव गांधी राष्ट्रीय सदभावना पुरस्कार से कहा जाता है। फिल्मों के 1958 से लेकर 1985 तक के वीर में वह सम्मानित किया गया। उन्हें 1975 में पदम श्री से, 1991 में पदम महिला फिल्म हिरोइनों में चरम पर गिनी जाती रहीं। सरोजा देवी ने मुषण एवं 2001 में पदम विभूषण से अलंकृत किया गया। उन्हें 1989 1955 से 1984 के बीच 161 फिल्मों में नायिका की भूमिका निभाई जो

016 DSP AWARD COMMITTEE NATIONAL FILM AWARDS 13 017

DSP AWARD COMMITTEE



DAGGUBATI RAMANAIDU

Daggubati Ramanaidu is a veteran Telugu film producer, who has also produced movies in languages such as Hindi, Tamil, Malayalam, Kannada, Bengali etc. He is considered to be the pioneer of the Telugu film industry. He produced founder of Suresh Productions, which has to its credit over contribution to Indian cinema.

दग्ग्बाती रामानायद्ध जाने-माने तेलग् फिल्म निर्माता हैं. जिन्होंने हिंदी, तमिल, मलयालम, कन्नड और बांग्ला भाषा की फिल्में भी बनाई । उन्हें तेलुगू फिल्म उद्योग का पुरोधा भी माना जाता है उन्होंने अपनी पहली तेलग् फिल्म *अनुरागम* 1963 में बनाई और इसके बाद 1964 में एन टी रामाराव को नायक की भूमिका देते हुए *रामांड भीमुं*ड का निर्माण किया। उन्होंने सुरेश प्रोडक्शंस की स्थापना की जिसके बैनर तले 15 भाषाओं में 135 से अधिक फिल्मों का निर्माण किया गया फीचर फिल्में बनाने के लिए इसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी स्थान मिला। उन्हें भारतीय सिनेमा को उल्लेखनीय योगदान के लिए 2009 में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



PRATHIBHA PRAHLAD

Prathibha Prahlad is a celebrated Indian Bharatanatyam dancer. A cultural visionary, besides being a star performer of Bharatanatyam, her work in the field of arts is profound and unparalleled in contemporary dance history. Alongside his first Telugu film Anuragam in 1963, followed by Ramudu a spectacular career in dance, Prathibha Prahlad is equally Bheemudu starring N.T. Rama Rao in 1964. He is the famous for her missionary work in conceptualizing and presenting international arts festivals. Prathibha writes 135 films in 15 different languages. He received the articles in leading newspapers and is a frequent invitee to Dadasaheb Phalke Award in 2009 for his outstanding seminars and other academic activities nationally and internationally. She has produced, directed and acted in television serials. She has also authored books on Bharatanatyam and other related subjects.

प्रतिभा प्रहलाद मशहूर भरतनाट्यम नृत्यांगना हैं और उनकी बहुमुखी प्रतिमा कला जगत में उनके उल्लेखनीय योगदान में प्रकट होना निरंतर जारी है। नृत्य में बेहतरीन प्रदर्शन के अलावा प्रतिभा प्रहलाद अंतरराष्ट्रीय कला महोत्सवों की प्रस्तृति और संकल्पना के लिए भी उतनी ख्याति अर्जित कर चुकी हैं। प्रतिभा प्रमुख समाचार और किसी एक प्रोड्यूसर—डॉ डी रामानायड् द्वारा सबसे अधिक पत्रों में आलेख लिखती रहीं हैं और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की संगोष्टियों में उन्हें अक्सर आमंत्रित किया जाता है। उन्होंने टेलीविजन धारावाहिकों का निर्माण, निर्देशन और उनमें अभिनय भी किया। उन्होंने भरतनाटयम और अन्य संबंधित विषयों पर पुस्तकें भी



RAMESH SIPPY

RS Entertainment in 2005. He has recently been conferred degree in sociology. with the Padma Shri.

निर्देशन किया। उन्होंने 2005 में आरएस एन्टरटेर्न्मेंट की स्थापना की। उन्हें हाल ही में पदम श्री से अलंकृत किया गया।



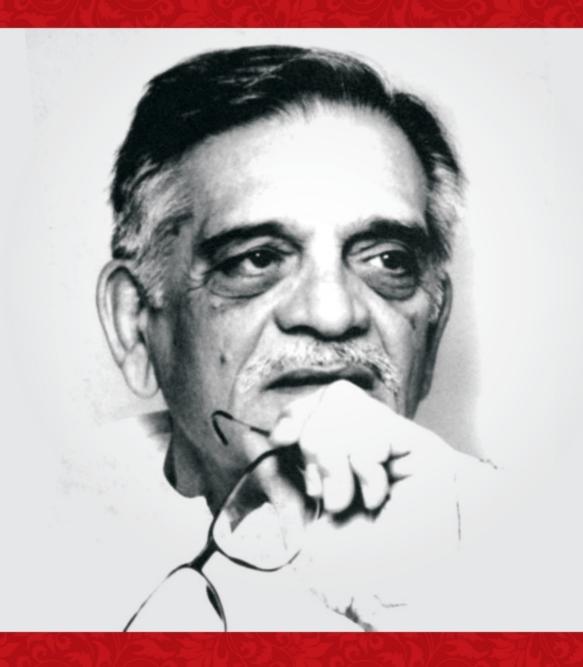
SHARMISTHA MUKHERJEE

Ramesh Sippy is one of the major and influential Hindi Sharmistha Mukherjee is a highly accomplished Kathak film-makers of the 1970s, whose film Sholay is dancer and choreographer with many years of performing acknowledged as the biggest hit and one of the landmarks experience. She has performed all over India and over forty of Indian cinema. Son of producer-distributor G.P. Sippy, countries abroad. She has made a number of television Ramesh Sippy debuted as a director with Andaz (1971). He serials on Indian dance, and a film on contemporary dance followed it up with the Seeta Aur Geeta and then Sholay in India called Beyond Tradition. She is also a regular (1975), which set the benchmark for commercial success in columnist on art. An avid animal lover, she is actively Hindi cinema. He also directed one of the most popular involved with Jeevashram, a charitable veterinary hospital and landmark TV serials in India, Buniyaad. He established and animal shelter in New Delhi. She holds a master's

शर्मिष्ठा मुखर्जी प्रख्यात कथक नृत्यांगना और कोरियोग्राफर हैं रमेश सिप्पी 1970 के दशक के प्रमुख एवं प्रभावशाली हिंदी फिल्म और उन्हें अनेक वर्षों के प्रदर्शन का अनुभव प्राप्त है। उन्होंने सम्पूर्ण निर्माताओं में से एक हैं जिनकी फिल्म *शोले* को भारतीय सिनेमा की भारत और चालीस से अधिक देशों में प्रस्तुति दी है। भारतीय नृत्य के सबसे हिट और बेमिसाल माना जाता है। निर्माता-वितरक जी पी बारे में उन्होंने अनेक टेलीविजन धारावाहिक बनाए और 'बियॉण्ड सिप्पी के बेटे रमेश सिप्पी ने *अंदाज* (1971) फिल्म के निर्देशन से *ट्रेडिशन* नाम से भारत के समकालीन नृत्य पर एक फिल्म का भी शुरूआत की। इसके बाद उन्होंने *सीता और गीता* और फिर *शोले* निर्माण किया। वह कला पर नियमित स्तंत्र लिखती रही हैं। वह (1975) का निर्देशन किया जिसने हिंदी सिनेमा में कमर्शियल जानवरों के प्रति अगाध प्रेम रखती हैं और नई दिल्ली में जीवाश्रम . सफलता के नए कीर्तिमान कायम किए। उन्होंने सबसे लोकप्रिय और जाम के कल्याणार्थ पशु अस्पताल एवं पशु शरणागृह से सक्रिय रूप मील का पत्थर माने जाने वाले टीवी धारावाहिक *बुनियाद* का भी से जुड़ी हैं। उन्होंने समाजशास्त्र में रनोतकोत्तर उपाधि प्राप्त की है।

018 DSP AWARD COMMITTEE NATIONAL FILM AWARDS 13 019

DSPA - WINNER PROFILE





Film-maker, screenplay and dialogue writer, lyricist, poet and author, Gulzar is one of the towering figures of Indian cinema, culture and literature. Born in Dina (now in Pakistan), his career in cinema took off as an assistant to legendary film-maker Birnal Roy with whom he debuted as a lyricist in *Bandini* (1963) with the evergreen gem 'Mora gora ang lei le'. Incidentally, he was a reluctant entrant into cinema, more keen on a career in literature and it was the insistence of songwriter Shailendra that made him meet Birnal Roy.









Gulzar debuted as director in 1971 with Mere Apne, a remake of Tapan Sinha's Bengali film Aponjon, dealing with students politics, violence and youth disillusionment. The film made stars of its main characters Vinod Khanna and Shatrughan Sinha, and also starred Meena Kumari in one of her last roles. Over the next decade and a half, Gulzar made some of the most loved films of Hindi cinema and, with Hrishikesh Mukherjee, epitomized the middle-of-the-road cinema of the era. The films included bravura experiments like Koshish (dealing with a hearing-and-speech impaired couple) and strong relationship dramas with political overtones like Aandhi. His films deal primarily with sensitive human relationships and are marked by an understated ethos which made them stand apart from the larger-than-life cinema of the 1970s. These films, including Parichay, Mausam, Kinara, Khushbao, among others, are also remembered for some of the finest songs in Hindi cinema ever. He formed one of the most well-known director-actor combinations with Sanjeev Kumar who gave his finest performances in films directed by Gulzar. In the 1980s, he made such brilliant films like Namkeen, the laugh riot Angoor, and Ijaazat. Towards the later part of his career he made the films Lekin (which played a big role in reviving good music after the 1980s) and Maachis (a political film and one of his most successful films). His last film as director was Hu Tu Tu. He also directed the TV series Mirza Ghalib, starring Naseeruddin Shah in the eponymous role, Kirdar and Tehreer-Munshi Premchand Ki (a serial on the works of Munshi Premchand).













Apart from being a film-maker with a difference, he is undoubtedly the finest lyricist of India cinema, penning some of the most enduring songs in Hindi films, not only in his own films, but also in those directed by others. These included songs in films like Aashinvad, Guddi, Anand, Khamoshi, Anubhav, Gharanda, Ghar, Golmaal, Masaom, among others. In the last decade and more, he has tasted incredible success as a lyricist with several of his songs, like 'Chhaiyyan, chhaiyyan' in Dil Se, 'Kajra re' in Bunty Aur Babli, 'Bidi jalai le' in Omkara, 'Darling' in Saat Khoon Maaf, 'Dil toh bachha hai ji' in Ishqiya becoming chartbusters, thus demonstrating his ability to appeal to a whole new generation. He has also been a screenplay and dialogue writer for a number of films, including Sungharsh, Andaz, Anand, Namak Haram, Griha Pravesh, Chupke Chupke, Ek Pal, Hip Hip Hurray, New Delhi Times and the recent Saathiya.

Gulzar is also one of the greatest figures in Indian literature. He has published a number of poetry collections, Raat Pashmine Ki, Pukhraaj, Raat Chaand Aur Main, Kuchh Aur Nazmein, Pandrah Paach Pichhatar, Triveni, Pluto. Translations of his poetry have been published as Silences, Selected Paems, Neglected Paems, 100 Lyrics. As a short story writer he has a number of volumes to his credit, including Ravi Paar and Dhuaan. He is also one of finest writers for children in the country with his song for Jungle Book, 'Chaddi pahan ke phool khila hai' becoming an anthem for children. He has made several Doordarshan programmes for kids such as Jungle Book, Alice in Wonderland, Guchche and Potli Baba Ki. He has more recently written and narrated for the children's audiobook series Karadi Tales. He has also translated a number of poets and writers, including Rabindranath Tagore, into Hindustani.

He has been the recipient of the Filmfare Award 21 times, the National Award 7 times including for documentaries on Amjad Ali Khan and Bhimsen Joshi, the Sahitya Akademi Award in 2003, the Padma Bhushan in 2004. In 2008 he was awarded an Oscar for his song 'Jai ho' in Slumdog Millionaire and also received a Grammy for the same in 2010. He has been appointed as the chancellor of Silchar University in Assam by the President of India.

022 DSPA WINNER PROFILE NATIONAL FILM AWARDS 13 023

2/01/7/7 दादासाहेब फाल्के पुरस्कार विजेता, 2013

फिल्म निर्माता, पटकथा एवं संवाद लेखक, गीतकार, कवि और लेखक गुलज़ार भारतीय सिनेमा, संस्कृति और साहित्य जगत की कददावर हस्तियों में से एक हैं। दीना (अब पाकिस्तान) में जन्मे गुलज़ार का फिल्मी केंरियर जाने—माने फिल्म—निर्माता बिमल रॉय के सहायक के रूप में शुरू हुआ था जिनके साथ 1963 में उन्होंने बंदिनी में गीतकार के तौर पर काम किया और 'मोरा गोरा अंग लई ले जैसे सदाबहार गीत रचकर अपने सिनेमाई सफर की शानदार शुरूआत की। गौरतलब है कि वे शुरूआत में सिनेमा की दुनिया में अनिच्छा से आए थे क्योंकि उनका मन साहित्य के संसार में गोता लगाने का था और सच तो यह है कि गीतकार शैलेन्द्र के जिद करने पर ही वे बिमल रॉय से मिले थे।

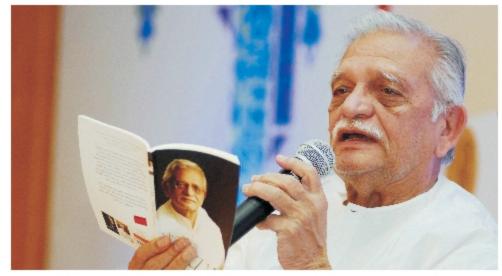
गुलजार ने 1971 में मेरे अपने के साथ निर्देशक के तौर पर शुलआत की। यह फिल्म तपन सिन्हा की बांग्ला फिल्म अपोनजन का रीमेक थी जो छात्र राजनीति, हिंसा और युवाओं के मोहभंग पर आचारित थी। फिल्म में विनोद खन्ना और शत्रुध्न सिन्हा प्रमुख भूमिकाओं में थे और मीना कुमारी भी इस फिल्म में अपनी अंतिम भूमिकाओं में दिख रही थीं। अगले लगभग डंढ़ दशक तक गुलज़ार ने हिंदी सिनेमा की कुछ बेहद पसंदीदा फिल्मों का निर्माण किया और हृषिकेश मुखर्जी के साथ मिलकर तो उन्होंने उस युग की मध्यमार्गी फिल्मों का दौर शुरू किया। इन फिल्मों में कुछ लीक से हटकर प्रयोगधर्मी फिल्में शामिल हैं जैसे कोशिश (जो कि मूक—बधिर दंपत्ति की कहानी हैं) और आंधी जैसी फिल्म है जो संबंधों की सघन नाटकीयता का बयान है। उनकी फिल्में मुख्यतः संवेदनशील इंसानी जज़वातों और संबंधों को केंद्र में रखती हैं और इन मूल्यों ने ही बल्कि सत्तर के दशक में उन्हें फिल्मों की भीड़ में एक अलग पहचान दिलायी। परिचय, मौसम, किनारा, खुशबू जैसी फिल्मों को अपनी और तमाम खूबियों के अलावा उन बेहतरीन गीतों के लिए भी याद रखा जाता है जो हिंदी सिनेमा में अब तक के उन्दा नगमों में गिने जाते हैं। संजीव कुमार के साथ मिलकर गुलज़ार ने बेहतरीन निर्देशक—अमिनेता की जोड़ी बनायी और गुलज़ार के निर्देशन में बनी फिल्मों में संजीव कुमार का श्रेष्ठ अभिनय आज भी याद किया जाता है। 1980 के दशक में, उन्होंने नमकीन बनायी और फिर आयी हास्य फिल्म अंगूर तथा इजाज़त। अपने केंरियर के उत्तरार्ध में उन्होंने लेकिन (जिसने 1980 के दशक में बाद एक बार फिर फिल्मों में उन्दा संगीत के दौर की वापसी करायी) और माथिस (राजनीतिक विषय पर बनी बेहद सफल फिल्मों में शुनार) जैसी फिल्में सिनेमा प्रेमियों को सौंपी। वतौर निर्देशक उनकी अंतिम फिल्म हु तु तु रही। वे टीवी धारावाहिकों मिर्ज़ा गृतिब (जिसमें नसीरु विशाह निर्वा ना शाह ने शानदार भूमिका निगायी थी), किरदार और तहरीर — तथा मुंशी प्रेमचंद की कृतियों पर आधारित मुंशी प्रेमचंद का भी निर्देशन किया।

अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले फिल्ममेकर के अलावा, वे निरसंदेह भारतीय सिनेमा के बेहतरीन गीतकारों में से हैं जिन्होंने हिंदी फिल्मों को कई सदाबहार नगमे दिए जो उनकी अपनी फिल्मों के अलावा दूसरे निर्देशकों के फिल्मों की भी पहचान बने। ये गीत जिन फिल्मों में







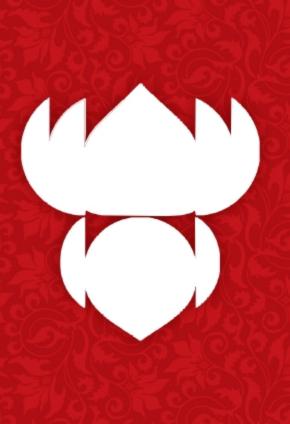


शामिल किए गए, वे हैं आशीर्वाद, युड़डी, आनंद, खामोशी, अनुभव, घरोंदा, घर, गोलमाल, मासूम आदि। पिछले एक दशक से कुछ अधिक की अविध में तो गीतकार के रूप में उन्हें जबर्दस्त कामयाबी मिली है और उनके कई गीतों का जादू लोगों की जुबान पर लंबे समय तक छाया रहा है। इनमें प्रमुख हैं — दिल से का 'छैया, छैया', बंटी और बबली का 'कजरा रे', आंकारा का 'बीड़ी जला ले', सात खून माफ में 'ढालिंग', इश्किया में 'दिल तो बच्चा है जी'। और इन गीतों की जबर्दस्त सफलता ने साबित कर दिया कि गुलज़ार अपने लफ्ज़ों से हर पीढ़ी को लुभाने का माददा रखते हैं। वे संघर्ष, अंदाज़, आनंद, नमक हराम, गृह प्रवेश, चुपके—चुपके, एक, हिप हिप हुई, न्यू डेल्ही टाइम्स तथा हाल में साथिया जैसी अनेक फिल्मों के पटकथा और संवाद लेखक भी रहे हैं।

गुलज़ार भारतीय साहित्य जगत की महानतम हरितयों में से हैं। उनके कई काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें प्रमख हैं — रात पशिमिने की, रात चांद और मैं, कुछ और नज़में, पंद्रह पांच पिचहत्तर, त्रिवेणी, प्लूटो। उनकी कविताओं के अनुवाद साइलेंसेज़, सलेक्टेड पोयम्स, नैग्लैक्टेड पोयम्स तथा 100 लिरिक्स में प्रकाशित हो चुके हैं। ये उन्दा लघु कथा लेखक भी हैं और रावी पार तथा धुंआ समेत उनके कई लघु कथा संग्रह प्रकाशित हुए हैं। वे देश में बाल साहित्य के भी बेहतरीन रचनाकारों में से हैं और जंगल बुक के लिए उनका रचा गीत 'चब्डी पहन के फूल खिला है' तो बच्चे—बच्चे की जुबान पर है। उन्होंने दूरदर्शन के लिए बच्चों पर कई कार्यक्म बनाए हैं, जैसे जंगल बुक, एलिस इन यंडरलैंड, गुच्छे तथा पोटली बाबा की। हाल में उन्होंने वच्चों के लिए बच्चों पर कई कार्यकम बनाए हैं, जैसे जंगल बुक, एलिस इन वंडरलैंड, गुच्छे तथा पोटली बाबा की। हाल में उन्होंने वच्चों के लिए ऑडियो बुक सीरीज़ कराडी टेल्स का लेखन किया और इन कहानियों को अपनी ही आवाज़ में रिकार्ड भी किया। वे रबिंद्रनाथ टैगोर समेत कई कियों तथा लेखकों की कृतियों का हिंदुस्तानी में अनुवाद भी कर चुके हैं।

गुलज़ार को 21 बार फिल्मफ़ेयर अवार्ड, अमजद अली खान तथा भीमसेन जोशी पर डॉक्यूमेंट्री समेत 7 बार नेशनल अवार्ड, वर्ष 2003 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 2004 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है। वर्ष 2009 में उन्हें रलमडॉग मिलियनेयर में 'जय हो' जैसे भारी सफलता अर्जित करने वाले गीत के लिए ऑस्कर पुरस्कार और 2010 में इसी के लिए ग्रेंमी पुरस्कार भी मिल चुका है। उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा असम के सिल्बर विश्वविद्यालय का कुलाविपति नियुक्त किया गया है।

024 DSPA WINNER PROFILE NATIONAL FILM AWARDS: 13 025



JURY IN PROCESS









An Overview:

Chairperson of the Feature Films Jury Saeed Akhtar Mirza

At the 61st National Film Awards 2013, a new lot of 30 debut film-makers made it to the final round. These films were made with a lot of passion, honesty and innovative narrative. It seems the day of bigbudget and glamorous films are over and a fresh wave has successfully made its mark. In nearly 40 awards in various categories, it became very difficult to decide as to which of the competing ones could be selected. There was equal competence in each of these categories for the awards. Often one had to resort to the ballot and this resulted in awarding the deserving ones but also left a lot of deserving quality aside. Competition is the best way to better the quality of all aspects of cinema. These awards of 2013, we hope, will create the right atmosphere for better cinema in India.

61 वां राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, 2013 में अपनी पहली फिल्म लेकर आए 30 नए फिल्म निर्माताओं ने फाइनल दौर में प्रवेश किया। ये फिल्में अत्यंत जोश, ईमानदारी और नवीनता से बनाई गई। ऐसा प्रतीत होता है कि बड़े बजट और ग्लैमर की चकाचींघ से भरपूर फिल्मों के जमाने लद गए हैं, ताज़ी हवा का झोंका अपनी छाप छोड़ रहा है। विभिन्न श्रेणियों के करीब 40 पुरस्कारों में चुनना कठिन था कि किसे चुना जाए। इन श्रेणियों में बराबरी की टक्कर थी। ऐसे में मतों की गिनती का सहारा लेना पड़ा लेकिन ऐसे में हो सकता है कि कई योग्य और क्वालिटी प्रविष्टियां किनारे हो गई हों। सिनेमा के सभी पहलुओं में क्वालिटी लाने के लिए प्रतिस्पर्धा सबसे अच्छा तरीका है। हमें उम्मीद है कि 2013 के इन पुरस्कारों से हमने भारत में सिनेमा के लिए बेहतर बनाने की दिशा में योगदान किया।

An Overview:

Chairperson of the Non-Feature Films Jury Ashoke Viswanathan

It was truly an eclectic package of films and hence extremely challenging so far as the selection was concerned. There were quite a few films that were unexceptional but the presence of the brilliant student films more than made up for this deficiency. The jury celebrated innovation and cinematic excellence, even bordering on the experimental and the unrestrained. At the same time, due importance and value were given to well-rounded narratives and authentic, exploratory investigations. For the jury it was a profound learning experience replete with the necessary dialogue and debate that helped the selectors to constantly upgrade their own perceptions.

फिल्मों का पूरा पैकंज बेहद चुनींदा था, उनमें से पुरस्कृत फिल्मों का चयन करना वाकई कठिन था। कुछ फिल्में असाधारण नहीं थीं लेकिन प्रतिभाशाली फिल्म छात्रों की मौजूदगी ने इस कमी की भरपाई कर दी। जूरी ने प्रयोगधर्मिता और असीमितता के इर्दिगिर्द रहते हुए नवीनता और सिनेमेटिक श्रेष्ठता को वरीयता दी। इसके साथ ही, बहुमुखी वृतांत, प्रामाणिकता और गवेषणा को भी मूल्यांकन में महत्व दिया गया।

जूरी के लिए यह वाकई एक शानदार अनुमव था जिसमें गहन परिचर्चा से जूरी को अपनी अवधारणा में निखार लाने का अवसर मिला।









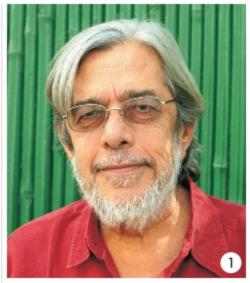






FEATURE FILMS - CENTRAL JURY

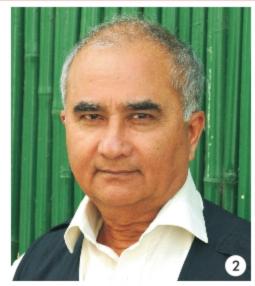
AIRMAN



SAEED AKHTAR MIRZA

A graduate of the FTII, writer-director Saeed Akhtar Mirza has directed cult films of the New Indian Cinema like Arvind Desai Ki Ajeeb Dastaan, Albert Pinto Ko Gussa Kyon Ata Hai, Mohan Joshi Hazir Ho!, Salim Langde Pe Mat Ro and Naseem, which won two National Film Awards. He is the director of the popular TV serials Nukkad (1986) and Intezaar (1988), along with various documentary films on social welfare and cultural activism. He is also a trustee of ANHAD, a Delhi-based NGO working for communal harmony. He is also the author of two books.

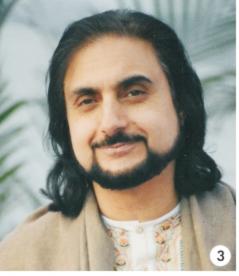
फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीटब्रट ऑफ इंडिया यानी एफटीआईआई से स्नातक, लेखक और निर्देशक सईद अख्तर मिर्जा के नाम कई यादगार फिल्में हैं। उन्होंने 'अरविंद देसाई की अजीब दास्तान. 'अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है', 'मोहन जोशी हाजिर हो!', 'सलीम लंगडे पर मत रो' और 'नसीम' जैसी भारतीय सिनेमा की कई मशहर फिल्मों का निर्देशन किया। 'नसीम' ने दो राष्ट्रीय फिल्म परस्कार भी हासिल किए। उन्होंने सामाजिक कल्याण और सांस्कृतिक गतिविधियों पर आधारित विभिन्न तरह की डाक्य्मेंटी फिल्मों के निर्देशन की जिम्मेदारी भी संभाली। 1986 और 1988 में बने चर्चित टीवी धारावाहिक 'नुक्कड़' और 'इंतजार' के निर्देशन के जरिये सईद मिर्जा लोगों के दिलों में उतर गए। वो सांप्रदायिक सदभाव के लिए काम करने वाले दिल्ली स्थित एनजीओ 'अनहद' के एक ट्रस्टी भी हैं। उन्होंने दो किताबें भी लिखी हैं।



ARUNODAY SHARMA

Arunoday Sharma studied sound recording at the FTII, Santoor legend and music composer Pandit Bhajan Pune, between 1969 and 1972. He has been credited in designer for the iconic television shows CID and Hum Ne Li Natak Akademi Award. Hai...Shapath.

पांच शैक्षिक डाक्युमेंट्री के भी निर्माता और निर्देशक रहे हैं। पर कई मेडल, खिताब और सम्मान हासिल किए हैं। टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले धारावाहिकों के हजारों एपिसोड में उन्होंने आडियोग्राफर और साउंड मिक्सर के तौर पर काम किया है। मौजूदा समय में आईकनिक टेलीविजन शो सीआईडी और हम ने ली *है....शपथ* में साउंड डिजाइनर है।

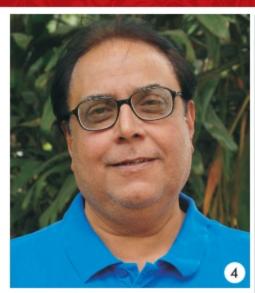


PANDIT BHAJAN SOPORI

Sopori is an institution in himself. Hailed as the 'Saint of the nearly thirty feature films as audiographer. He has also Santoor' and the 'King of Strings', he represents the fabled worked in documentaries, in both technical as well as Sufiana Gharana of Kashmir, He has composed music for creative disciplines of writing and direction. He has more than 5000 songs which include films, commercials, produced and directed five educational documentaries documentaries, serials, operas, chorals, etc. Pandit Sopori and worked as an audiographer and sound mixer in has received numerous awards, decorations, titles and thousands of television episodes. Presently, he is sound honour including the prestigious Padma Shri and Sangeet

संतुर के पुरोधा और संगीत कंपोजर पंडित भजन सोपोरी अपने अरुणोदय शर्मा ने पुणे खिवत एफटीआईआई में 1989 से 1972 के | आप में एक संस्था हैं। 'संतूर के संत' और 'तारों के राजा' के तौर पर बीच साउंड रिकॉर्डिंग में शिक्षा ली। उन्हें तकरीबन तीस फीचर प्रसिद्ध सोपोरी कश्मीर के पुराने सूफियाना घराने से ताल्लुक रखते फिल्मों में आडियोग्राफर के तौर पर काम करने का श्रेय हासिल है। हैं। उन्होंने फिल्म, व्यवसायिक, डाक्यमेंट्री, धारावाहिक, ओपेरा, उन्होंने डाक्यमेंटी के क्षेत्र में भी काम किया है। इसमें तकनीक के भजन से जुड़े 5000 गानों में अपना संगीत दिया है। पंडित सोपोरी ने साथ लेखन और निर्देशन का रचनात्मक क्षेत्र भी शामिल है। श्री शर्मा प्रतिष्ठित पदमश्री और संगीत नाटक एकैडमी समेत परस्कार के तौर

FEATURE FILMS - CENTRAL JURY



CHITRAARTH PURAN SINGH

1972 after graduating in economics from St. Stephen's feature Chann Pardesee won the National Award as Best National Integration, came his way for Shaheed Uddham for 2011 and Oscar Nomination Committee for 2013. Singh. Over the years, he has been writing and directing for both films and television in different genres of comedy, social, crime and historical

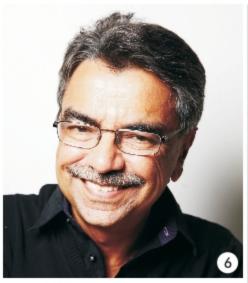
सेंट स्टीफेंस कॉलेज से स्नातक करने के बाद चित्रार्थ पूरन सिंह ने 1972 में एफटीआईआई में दाखिला लिया। उनका जन्म 1952 में हुआ था। उन्होंने कुछ फिल्मों में लेख टंडन के सहयोगी के तौर पर काम किया। उनकी फीचर फिल्म *चन्न परदेसी* को सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फिल्म का पुरस्कार मिला था। उनकी फिल्म शहीद ऊधम सिंह को भी राष्ट्रीय एकता पर बनी सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया। फिल्म और टेलीविजन के हास्य—व्यंग्य, सामाजिक, आपराधिक और ऐतिहासिक विभिन्न क्षेत्रों में वो सालों से लेखन और निर्देशन का काम कर रहे हैं।



C.V. REDDY

Born in 1952, Chitraarth Puran Singh joined the FTII in C.V. Reddy is a producer and director of Telugu, Tamil and Kannada films. He is also a writer, Reddy received the College. He assisted Lekh Tandon on a couple of films. His Nandi Award for his debut film Badili, He has been on various government committees as chairman and member. Punjabi film, Another National Award, for Best Film on He has also been a member of the Indian Panorama Jury

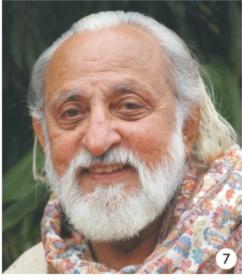
> सीवी रेड्डी तेलगू और कन्नड़ फ़िल्मों के निर्माता और निर्देशक हैं। वो एक लेखक भी हैं। रेड्डी को अपनी पहली ही फिल्म बादिली के लिए पुरस्कार मिला था। चेयरमैन और सदस्य के तौर पर वह कई सरकारी समितियों का हिस्सा रहे हैं। रेड़ी 2011 के इंडियन पैनोरमा जुरी और 2013 की आस्कर नामांकन समिति के भी सदस्य थे।



KHALID MOHAMED

Khalid Mohamed began his career at the Times of India, Mumbai, as a reporter, and was with the paper for 27 years, as film critic, media editor and then editor of Filmfare. He has written the stories and screenplays of the films Mammo, Sardari Begum and Zubeida. He scripted and directed the films Fiza, Tehzeeb and Silsilay. He has authored the books Hussain, Two Mothers and Faction.

खालिद मोहम्मद ने मुंबई में टाइम्स ऑफ इंडिया के एक रिपोर्टर के तौर पर अपने सफर की शुरुआत की। खालिद ने 27 सालों तक वहां एक फ़िल्म आलोचक, मीडिया संपादक और उसके बाद फ़िल्मफेयर के संपादक के रूप में काम किया। 'मम्मो', 'सरदारी बेगम और '*ज़बेदा*' जैसी फिल्मों की कहानी और स्क्रीनप्ले लिखने का उन्हें श्रेय हासिल है। खालिद ने फिल्म 'फिजा', 'तहजीब' और 'सिलसिले' की रिक्रप्ट लिखने के साथ उसका निर्देशन भी किया। '*ट्र बी ऑर नॉट ट्र* बी बच्चन, 'हवैयर आर्ट थाकः एम एफ हसैन, 'टू मदर्स और *फॅक्शन* आदि किताबों के वो लेखक भी हैं।



M.S. SATHYU

Theatre artist, art director, and director of films like Garam Hawa, Barah, Ijjodu, among others, M.S. Sathyu's first work was as independent art director for Chetan Anand's Hageegat. He was actively involved in theatre and worked as designer and director with theatre troupes such as Hindustan Theatre, Habib Tanvir's Okhla Theatre, Kannadi To Be or Not To Be Bachchan, Where Art Thou: M.F. Bharati, IPTA Mumbai and others. His multitasking was evident in film-making as well where he worked as art director, cameraman, screenwriter, producer and director. His filmography includes 15 documentaries and 9 feature

> थियेटर कलाकार, कला निर्देशक और गरम हवा, बराह, इज्जोड जैसी फिल्मों के निर्देशक एम एस सथ्य ने एक स्वतंत्र कला निर्देशक के तौर पर पहली बार काम चेतन आनंद की फिल्म *हकीकत* में काम किया। थियेटर की दुनिया के वो सक्रिय सदस्य हैं। उन्होंने हिंदस्तान थियेटर, हबीब तनवीर के ओखला थियेटर, कन्नड भारती, इप्टा मुंबई और कई अन्य थियेटर ट्रूपों के डिजाइनर और निर्देशन का काम किया। फिल्म निर्माण के क्षेत्र में उनकी बहुमुखी प्रतिभा जगजाहिर है। इसके अलावा कला निर्देशक, कैमरामैन, स्क्रिप्ट लेखन, निर्माता और निर्देशक के तौर पर उन्होंने अमिट छाप छोड़ी। फिल्मी आकाश पर उनके नाम 15 डाक्यमेंटी और 9 फीचर फिल्में अंकित हैं।

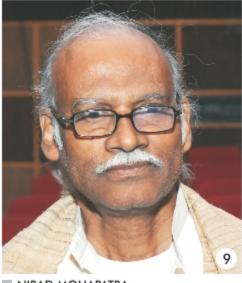
FEATURE FILMS - CENTRAL JURY



MANJU BORAH

international awards-winning film-maker. Her films explore the region's culture and its impact. These include Baibhab has been awarded the Women of Excellence Award by and writer. He lives in Bhubaneswar, Odisha. FICCI for her outstanding contribution to the field of Film & Entrepreneurship in the year 2009 and the Satyajit Ray Memorial Award given by the Asian Film Foundation for the year 2012.

असम में पैदा होने वाली मंजू बोरा एक जानी-मानी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय परस्कार विजेता फिल्मकार हैं। उनकी फिल्में इलाके की संस्कृति और उसके प्रभाव को आगे बढ़ाने का काम करती हैं। इसमें 1999 में प्रदर्शित वैभव, 2001 में निर्मित अन्या एक यात्रा, 2002 की आकाशितोरार कोथारे, 2004 में बनी लाज, 2006 की जॉयमती द सेवियर, 2008 में आई कोट नाई और को:याद (मिसिंग) शामिल हैं। फिल्म और उद्यम के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए 2009 में फिक्की की ओर से उन्हें सर्वश्रेष्ठ महिला का पुरस्कार प्राप्त हुआ साथ ही एशियन फिल्म फाउंडेशन ने 2012 में उन्हें सत्यजीत रे अवार्ड से नवाजा गया है।



NIRAD MOHAPATRA

Born in Assam, Manju Borah is a well-known national and Nirad Mohapatra is a trained film director from the FTII, Pune. His debut film Maya Miriga won the National Award for the Second Best National Feature Film (1984). It (1999), Anya Ek Yatra (2001), Aakashitoraar Kathare featured in the Critics Week section of Cannes and won (2002), Laaz (2004), Joymati the Saviour (2006), Aai Kot Best Third World Film award at Mannheim. He has made Nai (2008) and Ko: Yad (a film in the Mising language). She several documentaries and is a well-known film teacher

> नीरद महापात्र पुणे के एफटीआईआई से प्रशिक्षित निर्देशक हैं। उनकी पहली फ़िल्म *माया मुगा* को 1984 में दूसरी सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल हुआ था। केन फिल्म समारोह के आलोचक वीक सेक्शन में इसका प्रदर्शन किया गया था और मेंहीम में भी इसने तीसरी दनिया की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का खिताब जीता था। उन्होंने ढेर सारी डाक्यमेंट्री बनाई हैं और मौजूदा दौर में भी एक जाने-माने फिल्म शिक्षक और लेखक हैं। वह उडीसा की राजधानी भवनेश्वर में रहते हैं।



THANKAR BACHAN

Thankar Bachan began his career as cinematographer in 1990 and has so far worked in more than 40 feature films in a number of Indian languages. He has also written the screenplay for and directed 7 films. He is a major name in modern Tamil literature with a number of short stories and novels to his credit which have been the subject of research at postgraduate level and have been prescribed by universities for course work,

तंकर बचन ने 1990 में नृत्य निर्देशक के तौर पर अपने कैरियर की शुरुआत की और इस बीच उन्होंने कई भारतीय भाषाओं में बनने वाली चालीस से ज्यादा फीचर फिल्मों में काम किया। उन्होंने सात पोस्ट ग्रेजुएट स्तर पर शोध हो रहा है।



UTPALENDU CHAKRABORTY

Utpalendu Chakraborty graduated in Modern History from Calcutta University in 1967, participated in the student's movement in Calcutta, and worked with tribals of West Bengal, Bihar and Odisha. In 1971 he started to write under the pseudonym 'Swarna Mitra'. He is a painter, singer and a composer too. His feature film Chokh (1982) got a Silver Peacock at the 9th International Film Festival of India in 1983 and the Silver Lotus as Best Director at the 30th National Festival of India.

उत्पलेंद्र चक्रवर्ती ने 1967 में कोलकाता विश्वविद्यालय से आधुनिक इतिहास में स्नातक की डिग्री हासिल की। शिक्षा के दौरान फिल्मों की कहानी लिखने के साथ उनका निर्देशन भी किया। उन्होंने छात्र आंदोलन में भी हिस्सा लिया और फिर पश्चिम बंगाल. आधुनिक तमिल साहित्य में उनका प्रमुख स्थान है। बचन ढेर सारी बिहार और उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों में काम भी किया। 1971 में छोटी कहानियों और उपन्यासों के लेखक हैं। इनमें से कई को उन्होंने एक छद्म नाम स्वर्ण मित्र के नाम से लिखना शुरू किया। वो विश्वविद्यालयों ने पाठ्यक्रम में शामिल कर रखा है और कुछ पर बहुमुखी प्रतिमा के घनी हैं। और पेंटर, सिंगर होने के साथ एक कंपीजर भी हैं। उनकी 1982 में बनी फीचर फ़िल्म 'बोख' को 1983 में भारत के नवें अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में 'सिल्वर पीकॉक' मिला जबकि भारत के 30वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में उन्हें सर्वेश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

NON - FEATURE FILMS - JURY



Ashoke Viswanathan is a three-time National Awardwinning film-maker and an international award winner. His films include Sunya Theke Suru, Kichhu Sanglap Kichhu Pralap, Swapner Sandhaney, Anya Swapna, Byatikrami, Andhakarer Shabdo, Sesh Sanghat and Gumshuda. He is a writer with several articles on film and theatre to his credit; his latest publication is a comprehensive book on 100 years of Bengali cinema, entitled Bengal in the Century of Cinema and Beyond. He is a Charles Wallace scholar, having represented India at the Cambridge seminar on Modern British Fiction (1997).

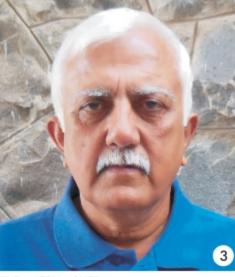
अशोक विश्वनाथन तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने वाले फ़िल्म निर्माता और एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार विजेता हैं। उनकी फिल्मों में 'शून्य श्रंके शुरू', किस्कू संलाप किस्कू प्रलाप', 'स्वपनेर संधान', 'अन्य स्वपन', 'व्यातिक्रमी', 'अंधकारेर शब्दो', 'शेष संघात' और 'गुमशुदा' प्रमुख हैं। फ़िल्म और थियेटर से जुड़े ढेर सारे लेखों को लिखने का श्रेय उन्हें जाता है। बंगालि शिनेमा के 100 सालों पर प्रकाशित एक बृहद किताब 'बंगाल इन द सेंचुरी ऑफ सिनेमा एंड बियांज' उनका एक बड़ा योगदान है। वह चार्ल्स वॉलेस स्कॉलर हैं और उन्होंने आधुनिक ब्रिटिश फिक्शन (1997) पर कैंग्निज सेंमिनार में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।



BISHNU DEV HALDER

A writer, director and producer based in Kolkata, **Bishnu Dev Halder** is a National Award-winning film-maker and an alumnus of SRFTI. Bishnu's films, which include Bagher Bachcha, Pratyabartan, I Was Bom in Delhi and The Diary of a Refugee, have won acclaim and awards at various international film festivals including National Film Award for Best Non-feature Film on Social Issues, nomination at the International Documentary Film Festival Amsterdam (IDFA), and as Opening Film of the Indian Panorama at the International Film Festival of India (IFFI)

कोलकाता निवासी लेखक, निर्वेशक और निर्माता बिष्णु देव हलदर एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म निर्माता है और वह एसआरएफटीआई के छात्र रहे हैं। बिष्णु की फिल्मों 'बाघेर बाछा, 'प्रत्यावर्तन', 'आई वाज बॉर्न इन विल्ली और 'द डायरी ऑफ ए रिय्यूजी ने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रशंसा और अवार्ड हासिल किए। इनमें सामाजिक मुद्दों पर बनी सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म का पुरस्कार, इंटरनेशनल डॉक्यूमेंट का पुरस्कार, इंटरनेशनल डॉक्यूमेंट का पुरस्कार, इंटरनेशनल डॉक्यूमेंट का पुरस्कार, इंटरनेशनल डॉक्यूमेंट किल्म को फील्म फेस्टिवल एम्सटरबम (आईडीएफए) में नामांकन के अलावा भारत के अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के भारतीय पैनोरमा में उनकी उदघाटन फिल्म शामिल है।



RAMESH ASHER

Ramesh Asher is a freelance film-maker with a preference for short films and documentaries with a rural background. This preference emerged from his stint with the Indian Space Research Organisation on its satellite television project where he was associated with scores of programmes of scientific and educational nature. Many of his films have won national and international awards, the most notable being A Command for Chhoti which won the National Award for the Best Short Fiction Film as well as the Swarna Kamal for Best Direction in the non-feature category. Challenging himself to become a writer, with little success, he lives in Jaipur.

रमेश अशर ग्रामीण पृष्ठिभूमि के अपने पसंदीदा विषयों पर लघु और डाक्यूमेंट्री फिल्मों के फ्रीलांस निर्माता हैं। रमेश की ये पसंद भारतीय अंतरिक्ष शोध संस्थान के सैटेलाइट टेलीविज़न प्रोजेक्ट से उनके जुड़ाव के दौरान पैदा हुई। यहां रमेश वैज्ञानिक और शैक्षिक प्रकृति के ढेर सारे कार्यक्रमों से जुड़े रहे। उनकी कई फिल्मों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीत। इनमें सबसे ज़्यादा चर्चित 'ए कमांड फॉर छोटी' को सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फिल्म तथा सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। वह लेखन भी करते हैं। वह जयपुर में रहते हैं।

CHAIR

NON - FEATURE FILMS - JURY



■ REENA MOHAN

Reena Mohan is an award-winning independent Sandeep Marwah is the director of Asian Academy of Film documentary film-maker and editor who has worked out of from the FTII in 1982 with a specialization in editing. She produced and directed her first award-winning documentary Kamlabai in 1991 and has, till now, scripted and directed more than 10 documentaries. Most of these International Association of Women in Radio and Television awards for his contribution to media education. (IAWRT).

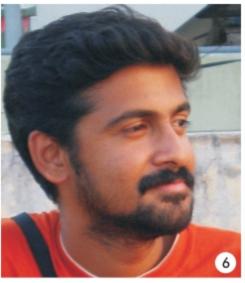
फिल्मों ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों की यात्रा की। किए हैं। मौजुदा समय में रीना इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ वीमेन इन रेडियो एंड टेलीविजन (आईएडब्ल्युआरटी) के भारतीय खंड की मैनेजिंग ट्रस्टी हैं।



SANDEEP MARWAH

& Television and Asian School of Media Studies. He is the Dubai, India, Kathmandu and London. She graduated founder of Noida Film City. He has been associated with the production of more than 4,500 TV programmes, 100 feature films and 5,000 training films from his worldrenowned Marwah Studios. He has so far trained 12,000 media persons hailing from 94 countries of the world. He have travelled to various international film festivals. She is has produced 2,000 short films which is highest in the currently the Managing Trustee of the India Chapter of the World. He has won a number of national and international

संदीप मारवाह एशियन एकैडमी ऑफ फिल्म एंड टेलीविजन और **रीना मोहन** एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता डाक्यूमेंट्री फिल्म निर्माता एशियन स्कूल ऑफ मीडिया स्टडीज़ के निदेशक हैं। वह अपने विश्व और एडिटर हैं। इनके काम का दायरा दुबई, भारत, काठमांडू और प्रसिद्ध मारवाह स्टूडियो के ज़रिये 4500 से ज्यादा टीवी कार्यक्रमों लंदन तक फैला है। उन्होंने 1982 में एफटीआईआई से एडिटिंग में और 100 से ज़्यादा फीचर फ़िल्मों और 5000 प्रशिक्षण फ़िल्मों से जुड़े विशेषज्ञता के साथ रनातक की डिग्री ली। उन्होंने 1991 में अपनी एहे हैं। सदीप अब तक 94 देशों के 12000 मीडिया कर्मियों को पहली पुरस्कत डाक्युमेंट्री '*कमलाबाई*' का निर्माण और निर्देशन प्रशिक्षण दे चुके हैं। उन्होंने 2000 लघु फिल्मों के निर्माण से जुड़े रहे किया। अब तक वह दस से ज्यादा डाक्य्मेंट्री फिल्मों की पटकथा। हैं जो पूरी दुनिया में एक रिकॉर्ड है। उन्होंने मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में लिखने के साथ उनका निर्देशन कर चुकी हैं। इनमें से ज्यादातर योगदान के लिए अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार हासिल



S. MANJUNATHAN

specialized in direction from the L.V. Prasad Film & TV Academy, Chennai. His short film Kal was screened at the Indian Panorama IFFI 2010, Goa, and ISFFK 2011, Kerala got him many awards and recognitions. He is currently working as a co-director in Tamil films and keeps himself busy by writing scripts and filming independent short films and music videos.

रवतंत्र लघ फिल्मों और म्युजिक वीडियो के निर्माण में व्यरत किए हुए | *ऑफ गिविंग* ने ढेर सारे पुरस्कार हासिल किए हैं।



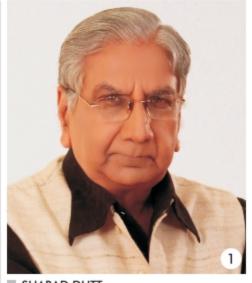
UMESH AGGARWAL

S. Manjunathan is an architect turned film-maker who A political science graduate and a postgraduate in journalism, Umesh Aggarwal started working with the Indian television industry in 1985. Umesh is the recipient of the National Award for his film The Whistle Blowers (Best and at Cannes 2011 (Non Competitive Section), apart Investigative Film 2007). Underground Inferno, his film for from various national and international film festivals, and the National Geographic Channel, won the Best Short Film Award at the Eco Film Festival, Greece, and Best Environment Film Award at the Short Film Festival, Goa, and Silver Trophy at the IDPA Award. His TV show Kiran: Joy of Giving has won a number of awards.

एस मंजनाथन एक आर्किटेक्ट से फिल्म निर्माता बने हैं। उन्होंने राजनीति शास्त्र में स्नातक और पत्रकारिता में परास्नातक **उमेश** चेन्नई स्थित एल वी प्रसाद फिल्म और टीवी एकैंडमी से निर्देशन में | **अग्रवाल** ने 1985 में भारतीय टेलीविजन उद्योग के साथ काम करना विशेषज्ञता प्राप्त की। उनकी लघु फिल्म 'कल' कई राष्ट्रीय और शुरू किया। उमेश को अपनी फिल्म '*द विराल ब्लोअर्स* के लिए अंतरराष्ट्रीय फिल्म समाराहों का हिस्सा बनी और उसने मंजुनाधन | राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। ये 2007 की सर्वश्रेष्ठ खोजी फिल्म थी। को ढेर सारे पुरस्कार दिलाए। इसके अलावा इस फिल्म का 2010 में | नेशनल जियोग्राफिक चैनल के लिए बनी उनकी फिल्म '*अंडरग्राउंड* गोवा के इंडियन पैनोरमा आईएफएफआई. 2011 में केरल के *इंफरनों* ने ग्रीस के इको फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म का आईएसएफएफके और 2011 में केन के गैर प्रतियोगी हिस्से में पुरस्कार जीता। इसके साथ ही गोवा के लघु फ़िल्म समारोह में प्रदर्शन भी हुआ। वह आजकल तमिल फिल्मों में एक सह निर्देशक के सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फिल्म पुरस्कार और गोवा के आईडीपीए अवार्ड में तौर पर काम कर रहे हैं और अपने आपको पटकथा लेखन और | उसे सिल्वर टॉफी से नवाजा गया। उनके टीवी शो 'किरनः जॉय

038 NON - FEATURE FILMS JURY NATIONAL FILM AWARDS 13 039

BEST WRITING ON CINEMA



SHARAD DUTT

Sharad Dutt has been synonymous with the electronic and television media for over four decades. His masterpiece The Melody Makers: A Musical Journey (26 Episodes) brought the maestros of Hindi film music under one roof. Winner of two National Awards, he has produced memorable documentaries on the Indian Civil Services, armed forces, poets and film personalities. An avid writer, he has penned books on Anil Biswas, K.L. Saigal and others. He is also member of the visiting faculty for the FTII and prestigious universities.

शरद दत्त चार दशक से अधिक समय से इलैक्ट्रॉनिक एवं टेलीविजन मीडिया का पर्याय माने जाते हैं। उनकी कति द मेलोडी मेकर्सः ए म्यजिक जरनी (26 धारावाहिक) ने हिंदी फिल्म संगीत के उस्तादों को एक साथ लाने में अहम भूमिका निभाई। दो राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके शरद ने भारतीय नागरिक सेवाओं, सशस्त्र बलों और कविता एवं फिल्मी हरितयों पर दो यादगार डॉक्यूमेंट्रीज़ का निर्माण किया। लेखक के तौर पर उन्होंने अनिल बिस्वास, के एल सहगल और अन्य लोगों पर पुस्तकें लिखीं। वह एफटीआईआई और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के लिए वह विजिटिंग फैकल्टी रहे हैं।

An Overview: Chairperson of the Best Writing on Cinema Jury

The Jury for the Best Writing on Cinema noted that many of the entries received this year were centred either around 100 years of Indian cinema or were based on individual film personalities. However, jury observed a healthy trend of the widening in the choice of subjects, research and creativity. Many congratulations to all the entrants - coming this far is in itself a noteworthy achievement. The jury was pleased to go through the enormous volume of writing and to select the winners who extended their thoughts to a holistic appraisal of the aesthetic value and social concerns that have made cinema the most powerful medium of expression.

इस साल के लिए प्राप्त हुई ज्यादातर प्रविष्टियां भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष परे होने पर केंद्रित थीं या व्यक्तिगत फिल्मी हरितयों पर। लेकिन जुरी ने विषय विस्तार, शोध एवं रचनात्मकता पर जोर दिया। सभी रचनाएँ इस स्तर तक आने के लिए बचाई की पात्र हैं क्योंकि यह अपने आप में एक बडी उपलब्धि है। जूरी ने इन लेखनों का गहराई से अध्ययन किया और उन्हें विजेता चुना तथा सिनेमा के सशक्त माध्यम के सामाजिक सरोकारों का समग्र मल्यांकन किया।



BALAJI VITTAL

Balaji Vittal is the co-author of the National Awardwinning book R.D. Burman: The Man, The Music at the 59th National Film Awards. He contributes regularly to the Hindu's Metroplus and Young World in topics spanning sports, films, fashion, events, trends and lifestyle. He is currently co-authoring two more books on Hindi cinema. Balaji is a banker by profession.

बालाजी विट्ठल ५९ वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त पस्तक आर डी बर्मन : द मैन द म्यजिक के सह लेखक हैं। वह हिंदू मैट्रोपॉलिस और यंग वर्ल्ड में खेलों, फिल्मों, फैशन, आयोजनों और लाइफस्टाइल के बारे में लगातार लिखते रहे हैं। वह हिंदी सिनेमा पर दो और पुस्तकों का सह लेखन कर रहे हैं। बालाजी पेशे से एक बैंकर हैं।



GANESH ANANTHARAMAN

Ganesh Anantharaman works with Wipro Technologies Limited in Bangalore. He is the author of Bollywood Meladies: A History of the Hindi Film Song that won the National Award for Best Book on Indian Cinema in 2008. Ganesh also volunteers as a music therapist at Sampooma Music Therapy Centre for Children with Autism in Bangalore. He is currently also the President of ISABS (2014-16).

गणेश अनंतरमन विप्रो टैक्नोलॉजीज, बेंगलुरू में कार्यरत हैं। वह बॉलीवड मेलोडीज : ए हिस्टी ऑफ द हिंदी फिल्म सॉन्न्स के लेखक हैं जिसे भारतीय सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन के लिए 2008 में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। गणेश बेंगलुरू में ऑस्टिज्म का शिकार बच्चों के लिए संपूर्ण म्युजिक थेरेपी सेंटर के लिए भी कार्य कर रहे हैं। वह इस समय आईएसएबीएस (2014-16) के अध्यक्ष हैं।

FEATURE FILMS JURY - EAST PANEL



M.S. SATHYU (CHAIRMAN)

Theatre artist, art director, and director of films like Garam Hawa, Barah, (ijiodu, among others, M.S. Sathyu's first work was as independent art director for Chetan Anand's Hageeqat. He was actively involved in theatre and worked as designer and director with theatre troupes such as Hindustan Theatre, Habita Tanvir's Okhla Theatre, Kannadi Bharati, IPTA Mumbai and others. His multitasking was evident in film-making as well where he worked as art director, cameraman, screenwriter, producer and director. His filmography includes 15 documentaries and 9 feature films.

थियंटर कलाकार, कला निर्देशक और *गरम हवा*, क्टाह, इच्जांडु जैसी फिल्मों के निर्देशक **एम एस सश्यू** ने एक स्वतंत्र कला निर्देशक के तीर पर पहला काम घेतन आनंद की फिल्म हकफिल्म में किया। वियेटर की दुनिया के वो सिक्रय सदस्य हैं। उन्होंने हिंदुस्तान थियंटर, हवीब तनवीर के ओखात थियंटर, कण्नाह मारती, इपटा मुंबई और कई अन्य थियंटर दूर्वों के डिजाइनर और निर्देशक का काम किया। फिल्म निर्माण के क्षेत्र में उनकी समुन्ती प्रतिमा जगजाहिर थी। इसके अलावा कला निर्देशक, कैमरामिन, सिक्रय लेखन, निर्माता और निर्देशक के तौर पर उन्होंने अमिट छाप छोडी। फिल्मी आकार पर उनके नाम 15 दावयुमेंट्री और 9 फीयर फिल्में अंतित हैं



BINA PAUL

An alumni of the FTII, **Bina Paul** has been working as a film editor for the last twenty years. She has worked with many leading film-makers in India and has won several state and National Awards for editing. Some of the films she has edited are Amma Anjam, Agnisakshi, Janmadinam, Mir, My Friend and Dance Like a Man. She has worked as senior editor at C-DIT (Center for the Development of Imaging Technology) for ten years. Along with editing, Bina has also been the artistic director of the International Film Festival of Kerala for the last ten years. She has also been involved with teaching at various institutes and is a regular guest faculty at the FTII.

एफटीआईआई से शिक्षित बीना भींल पिछले 20 सालों से फिल्म एडिटर के तीर पर काम कर रही है। पील शारत के कई प्रमुख फिल्म निर्माताओं के साथ काम कर चुकी हैं और एडिटिंग के लिए देर सारे राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं। अन्य अधिकार, अभिकारकी, 'कम्मिनम, 'मिश्र', 'माई लेड' और 'काम काइक ए मेंग एसी कुछ फिल्म हैं विनक्षी जन्होंने एडिटिंग की है। सेटर कार द देवलपमेंट ऑफ इमेजिंग टेक्नॉलाजी में एक सीनियर एडिटर के तौर पर उन्होंने दस साल तक काम किया है। एडिटिंग के साथ बीना बोरल के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारीह की पिछले दस सालों से कला निर्देशक हैं। वो कई संस्थानों में अध्यापन कार्य में भी शामिल रही हैं और गेस्ट केक्टरों के तिर पर एक्टीआईआई को नियमित अपनी संक्षा देती हैं।



MEENA DEBBARMA

Meena Debbarma, lead actor of Tripura's two most acclaimed films, Mathia and Yarwng, as well as producer and actor of many telefilms made in Kokborok, Bengali and Hindi, has played a pivotal role in linking the fledgling film industry in the state to the numerous problems and issues faced by its citizens. A recipient of numerous awards for her achievement as a woman in the field of art and social activism, Debbarma is a crusader for social justice and development. She has served on the National Film Awards jury twice.

त्रिपुरा की दो सबसे स्थापित फिल्में 'मटिया' और 'वास्वां' की मुख्य अभिनंत्री भीना देव बर्मा कोकबारोक में बनी कई बंगाली और हिंदी देली किल्मों की निर्माता और अभिनंत्री रही है। प्रदेश में नये फिल्म उद्योग के साध वहां की जनता के जुड़ने में आने वाली समस्याओं और मुद्दों को इत करने में जन्होंने प्रमुख मुनिका निचाई। कला और सामाजिक गतिविधियों के क्षेत्र में एक महिला के तीर पर उपलब्धियों के लिए उन्हें कई पुरस्कार प्राग्त हुए है। मीना सामाजिक न्याय और विकास की अनुवा मानी जाती हैं। राष्ट्रीय किल्म पुरस्कारों की जूरी के तौर पर यो दो बार अपनी सेवा दे मुकी हैं।



RANJIT DAS

Ranjit Das is a state and national award-winning editor-director. His films including All Alone If Need Be, Sanskar (The Offspring), Return of the Dead Bird have been screened at various national and international film festivals. He has served an national and state juries for feature films and documentaries. He is credited with 30 films including feature, short, documentary and teleserials. He has also edited journals for Guwahati Film Festival and Polish Film Festival.

रंजीत दास एक राष्ट्रीय और राज्य स्तर के पुरस्कार प्राप्त एडिटर और निर्देशक है। उनकी फ़िल्में 'ऑल एलोन इक नीड की', 'संस्कार' और 'रिटर्न ऑफ द डेड वर्ड कई कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित हो चुकी हैं। उन्होंने राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर फीबर फिल्मों और डाक्यूमेंट्री के लिए जूरी के तीर पर कई बार अपनी सेवाएं दी हैं। फीबर, छोटी फ़िल्मों, डाक्यूमेंट्री और टेली सीरियल समेत 30 फिल्में बनाने का उन्हें श्रेय प्राप्त हैं। युवाडाटी और पोलिस फिल्म समारोहों के लिए वो जर्नल का भी संपादन कर चुके हैं।



SREELEKHA MUKHERJI

Sreelekha Mukherji obtained a diploma in Rabindrasangeet from Geetobani in 1971. Her credits as an actor include Parashuramer Kuthar, Shilpi, Chiroshokha He, Laoj, Dwitiyo Pakkho, Elaa-r Chaar Adiyay among others. She has worked with National Award-winning film-makers like Nabyendu Chatterjee, Manju Barah, Raja Sen and Ashake Viswanathan. She has directed a couple of documentary films and directed the background music for several plays, feature films and telefilms.

श्रीलेखा मुख्यजी ने 1971 में गीतोबनी से रबीड संगीत में हिस्तोगा हासिल किया। अभिनेत्री के तीर पर "ररष्ट्रकार कुटार", शिल्पी", 'विशंकोखा है', लाज', 'द्वितीयो क्खारी', 'एला—रे-चार अध्यक्ष' समेत उन्हें कई दूसरी फिल्मों में काम करने का श्रेय हैं। वह चाड़ीय पुरस्कार जीतने वाले किस्म निर्माताओं गेथेन्द्र चटजी, मंजू बोरा, चठवा सेन और असोक विश्वनाथन के साथ काम कर चुकी हैं। उनहोंने कुछ खाब्युमेंट्री किल्मों का भी निर्देशन किया। साथ ही कई नाटकों, जीवर और टेली फिल्मों में बैकगायंड संगीत देने वह श्रेय मी उनकी झोली में हैं।





MANJU BORAH (CHAIRPERSON)

Born in Assam, Manju Borah is a well-known and award-winning film-maker. Her films explore the region's culture and its impact. These include Boshbab (1999), Anya Ek Yatra (2001), Aakschitoroan Karhare (2002), Loaz (2004), Joymati the Saviour (2006), Aoi Kor Noi (2008) and Ko: Yof (all film in the Mising language). She has been awarded the Women of Excellence Award by FICCI for her autstanding contribution to the field of Film & Entrepreneurship in the year 2009 and the Satyajit Ray Memorial Award given by the Asian Film Foundation for the year 2012.

अक्षम में पैदा होने वाली मंजू **बोरा** एक जानी—मानी और पुरस्कृत फिल्म निर्माता हैं। उनकी फिल्में क्षेत्रीय संस्कृति और उसके प्रमाय को आगे बढ़ाने का काम करती हैं। इसमें 1999 में प्रदर्शित बैमब 2001 में निर्मित अन्या एक यात्रा, 2002 की आकाशितौरार कोष्णरे 2004 में बनी लगर, 2008 की जोगमती द संविचर, 2008 में आई करेट नई और कोष्मर [मिसिंग] शामिल हैं। किस्म और उद्याम के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए 2009 में फिक्की की ओर से उन्हें सर्वश्रेष्ठ महिला का पुरस्कार प्राप्त हुआ। साथ ही एशियन किस्म फाउंडेशन ने 2012 में उन्हें सर्वश्रीत रे अवार्ड से नवाजा था।



■ BHANU BHARTI

Bhanu Bharti is best known for his bold innovations and creativity in Indian theatre. He has engaged with conventional modes, the freedom of folk idioms, highly stylized Noh and Kabukii theatre and the utterly liberated tribal Bheel 'Gavari' style of his notive Rajasthan. Such eclectic influences have informed his seminal directorial output like Pashu Gayatri, Amar Beej, Koal Katha, Toambe ke Keere, Hamlet, Chandrama Singh urf Chamku and Katha Kahi Ek Jale Hue Ped Ne. He has been honoured with the Sangeet Natak Akademi Award in the field of theatre.

मानू मारती नारतीय थियेटर में अपनी साहसिक खोजों और रचनात्मकता के लिए जाने जाते हैं। वो परंपरागत माध्यम, लोक बोली की स्वातजा, गोह और काबुकी जैसे जाति जन्म रोले के बिद्धार के प्रतास हैं। वो अपने गृह राज्य राजस्थान के आदिवासी मील गावारी को भी आखिरकार आजादी दिलाने में सफल रहे। ऐसी जवारता का ततीजा जनकी कुछ मीलिक निर्देशकीय कृतियों 'प्रमु गायजी', अमर बीज', काल काव', टाबे के कीरें, हैंमलेट, 'खंडमा सिंह जर्ष व्यान्क और कथा कही एक जले हुए पंड़ ने' में देखा गया। थियेटर के दोज में उन्हें संगीत गाउक एकेडमी के पुरस्कार से नवाजा जा चुका है।



G.S. BHASKAR

G.S. Bhaskar holds a postgraduate diploma from the FTII. Starting with Sir Richard Attenborough's Gandhi', he trained further under A.K. Bir. Winner of the Karnataka State Award for Best Cinematagraphy twice, he has worked with some of the finest film-makers of the country such as M.S. Sathyu, Sai Paranjpye, Girish Karnad, B.V. Karanth, Girish Kasaravalli and T.S. Nagabharana. He is visiting faculty at some of the major film schools of the country such as FTII, SRFTI and L.V. Prasad Academy.

जी एस मास्कर एकटीआईआई से पोस्टब्रेजुएट डिप्लोमा हैं। रिचर्ड एटनबरो की 'गर्स्नी' से कैरियर की शुरुआत करने के बाद उन्होंने आगे ए के बीर से भी प्रतिक्रण हासिल किया। भारकर को सर्वश्रेष्ठ सिनेमैटोग्राफर के लिए दो बार कर्नाटक राज्य पुरस्कार मिल खुका है। एम एस सम्ब्रू सई परांजपे, गिरीश कनांड, बी वी कारत, गिरीश कमरावल्ली और टी एस नागमरण समेत देश के उत्तम फिल्म निर्माताओं के साध उन्हें काम करने का सीमान्य मिला है। एफटीआईआई, एसआरएफटीआई और एल वी प्रसाद एकंडमी समेत देश के कुछ प्रमुख स्कूलों में वह शिक्षण किए जाते रहते हैं।



SONA JAIN

Sona Jain is an award-winning film writer, director and producer. Her debut film, For Real, won six international awards, was official selection in the Indian Panorama at the International Film Festival of India and released commercially worldwide. Vasarma's Lovers, an award-winning student short film written and directed by her was distributed worldwide by Universal Studios, Hypnotic Inc and British Shorts. She holds a master's in Fine Arts in Film from New York University, Tisch School of the Arts and a bachelor's in Economics from St. Stephens College.

तामा गिना परक गार शास्त्र वार्षा अपने हात है। इस के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के अपने कि स्वाप्त सोना बीन एक पुरस्कत कित्म समारोह में मारतीय पैनोरमा में चयनित थी और उसे व्यवसायिक तीर पर पूरी दुनिया में रिलीज किया गया था। जैन द्वारा लिखित और निर्देशित छात्रों पर बनी पुरस्कृत लघु फिल्म वगरणार लवलें का यूनिवर्सल स्टुडियॉज, डिम्मीटिक इंक और ब्रिटिश शार्ट्स ने मिलकर दुनिया पर में वितरण किया था। उनके पास न्यूयोंके विश्वविद्याल के टिस्क स्कूल औक आर्ट्स से फिल्म में माइन आर्ट की परास्तातक कियी है। उन्होंने सेंट स्टीक्टेंस कॉलेज से अर्थशास्त्र में स्नातक की कियी शासिल की है।



VIRENDRA SAINI

Virendra Saini, director-cinematographer, graduated from the FTII with a diploma in cinematography in 1976. He has been connected with the New Cinema Movement in India, working with several major directors including Mani Kaul, Saeed Mirza, Sai Paranjaye, Kundan Shah, Vidhu Vinod Chopra and Bhimsain. In 1990 he wan the National award for Best Cinematography for Salm Langde Pe Mat Ro. His first feature film Kabhi Pass Kabhi Fall won the National Award for Best Children's Film. Currently, he is serving as Dean, Films at the FTII.

won the National Award for Best Children's Film. Currently, he is serving as Dean, Films at the FTII.

निर्देशक-नृत्य निर्देशक वीरेंद्र सैनी ने 1978 में सिनेमैटोब्राफी में विश्लोमा के साथ एकटीआईआई से स्नातक की कियी हासिल की। उन्होंने
मणि कौल, सईद मिर्जा, सई परांजपे, कुंदन शाह, विश्व विनोद बोपढ़ा और भीम सेन समेत कई प्रमुख निर्देशकों के साथ काम किया। साथ ही
सैनी भारत में नवे सिनेमा आंदोलन का भी हिस्सा रहे। सलीम लंगडे पर मन हो है लिए 1990 में उन्हें सवीशेष्ट सिनेमेटोब्राफी का राष्ट्रीय
पुरस्कार भी मिला। उनकी पहली फीचर फिल्म 'कभी सम्म कभी फोल' को बच्चों की सर्वश्रेष्ठ फिल्म के राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया।
मौजदा समय में वो एकटीआईआई में फिल्म के जीन के तीर पर सेवारत है।

042 REGIONAL FEATURE FILMS JURY NATIONAL FILM AWARDS: 13 043

FEATURE FILMS JURY SOUTH-1 PANEL



NIRAD MOHAPATRA (CHAIRMAN)

Nirad Mohapatra is a trained film director from the FTII, Pune. His debut film Maya Miriga won the National Award for the Second Best National Feature Film (1984). It featured in the Critics Week section of Cannes and won Best Third World Film award at Mannheim. He has made several documentaries and is a well-known film teacher and writer. He lives in Bhubaneswar, Odisha.

नीश्द महापात्र पुणे के एफटीआईआई से प्रतिथित निर्देशक हैं। उनकी पहली फिल्म सावा मृग्य को 1984 में दूसरी सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार हारिला हुआ। कान्त फिल्म समारोड के आलोचक बीक संस्थल में इसका प्रदर्शन किया गया था और मेंहीम में भी इसने तीसरी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ किरूम का खिताब जीता। उन्होंने ढेर सारी डाक्यूमेंट्री बनाई है और मीजूदा दौर में भी एक जाने—माने फिल्म क्रिका अपेत लेखक है। वह उड़ीसा की राज्यानी बुवनेश्वर में एके हैं।



ARUN BOSE

Arun Bose is head of department, sound, at L.V. Prasad Film & TV Academy. He also heads Prasad Group's Audio Division. He holds the distinction of introducing stereophonic mixing systems for 70mm productions in India. As sound mixer and engineer for over 400 films, he has won several awards for excellence in sound recording, including the Nandi Award for Mayuri from the Government of Andhra Pradesh; for Yodho from the Government of Karala; for Ponthan Mada in 1993; and the Sri Lanka State film award for Sifhira Desayen in 1997.

अरुण बोस एल वी प्रसाद फिट्म एंड टीवी एकंडमी के साउंड विमाग तथा प्रसाद पुप के ऑडियो डिवीजन के अध्यक्ष हैं। मारत में 70 एमएम के प्रोडक्तन में स्टीरियोफोनिक मिक्सिंग प्रणाली को लाने का श्रेष भी उन्हीं को जाता है। साउंड निकार और हंजीनियर के तीर पर 400 से ज्यादा फिट्मों में काम करने के दौरान साउंड रिकॉर्डिंग में श्रेष्ट प्रदर्शन के लिए उन्हें कई पुरस्कार मिले। इसमें आंध्र प्रदेश रास्कार का मयूरी के लिए नेदी पुरस्कार शामिल है। तो 'योद्धा' और 1993 में 'फोन्यन ग्राह्म' के लिए केरल सरकार ने उन्हें पुरस्कृत किया। ख्रिडिना वेस्प्रायेन' के लिए 1997 में उन्हें श्रीलंका स्टेट फिट्म पुरस्कार प्राप्त इंग्रा।



KESARI HARVOO

Kesari Harvoo is a National Award-winning film-maker and scriptwriter. His debut feature film 8hoomigeerha won a National Award for the Best Film on Environment, Conservation & Preservation and a number of other awards. He ran a motivational film campaign in the Gundia river basin and has made 5 documentary films on rural water supply scenario in Kamataka under DANIDA-assisted GOK Project JALANIDHI. He has also served on the jury for the National Awards in 2007-08.

केशारी हरबू एक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्म निर्माता और पटकथा लेखक हैं। उनकी पड़ली फिल्म 'सूर्मिगीता' को पर्यावरण, संस्थाण और परिरक्षण के लिए सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने गुंडिया नदी की घाटी में एक प्रेरणादावक फिल्म अभिवान शुरू किया। इस अभियान के तहत उन्होंने खानिडा के सहयोग से कर्नाटक सरकार के जलनिधि प्रोजेक्ट के तहत प्रदेश के गांवों में पानी सप्लाई के हालात पर पांच खाक्स्मेंट्री फिल्में बनाई। उन्होंने 2007–08 में राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए जूरी के तीर पर भी अपनी सेवाएं वीं।



PRIYA KRISHNASWAMY

Priya Krishnaswamy graduated in film editing from the FTII in 1987. Her editing credits include Om Dor-b-Dac, Percy, Bombay Boys and Bhopaf Express. In 1998, she began to make documentary films. In 2003, her documentary, The Eye of the Fish: The Kalaris of Kerala, received the National Award for Best Arts/Cultural film. In 2012, her debut feature film, Gangoabai, premiered in the New Faces in Indian Cinema section at the MAMI Film Festival in Mumbai and has since been screened at various international festivals.

प्रिया क्षणारचाणी 1987 में एफटीआईआई से फिल्म एिडिटिंग में रनातक है। उन्हें 'ओम दर-ब-दर', पर्सी', बांबे बॉयज़' और भोपाल एक्सप्रेस' जैसी फिल्मों की एबिटिंग का श्रेय हासिल है। उनकी अक्यूपेट्री व आई ऑफ व फिल्स व कलारिस ऑफ कंस्त' को 2003 में आर्ट्स और सांस्कृतिक फिल्मों की श्रेणी में सर्वश्रेय्ठ फिल्म के राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया था। उनकी पहली फीचर फिल्म गंगूबाई का मुंबई के एमएएमआई (भागी) फिल्म समारोह में भारतीय सिनेमा के नये बेहरों के हिस्से में प्रीमियर हुआ। उसके बाद यह फिल्म कई अंतरराष्ट्रीय समारोहों में प्रवर्शित हुई।



UNNI VIJAYAN

Unni Vijayan majored in philosophy. Following a short stint as a purchase manager in a plastic moulding company, he quit his job and joined as an apprentice to an editor in Mumbai while preparing to get admission at the FTII. After passing out from the institute, he edited numerous documentaries, television series and feature films. His first feature as director Lessons in Forgetting has travelled across the globe at various festivals and wan the National Award for Best English Feature Film in 2012.

उन्नी विजयन वर्शन में पारंगत है। थोंड़े समय के लिए एक प्लास्टिक ढलाई कंपनी में परवेज मैनेजर के तौर पर काम करने के बाद उन्होंने नौकरी छोड़ दी। फिर एकटीआईआई में प्रवेश लेने के लिए उन्होंने मुंबई में एडिटिंग की ट्रेनिंग ली। संस्थान से निकलने के बाद उन्होंने ढेर सारी बोंक्युमेंट्री, टेलीविजन धारावाहिक और फीचर फिल्मों की एडिटिंग की। निर्देशक के तौर पर उनकी पहली फीचर फिल्म लॉस्टोटिंग ने सात समंदर पार जा कर विभिन्न अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों का हिस्सा बनी। उसे 2012 में सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी फिल्म का सब्दीय पुरस्कार मी मिला।

FEATURE FILMS JURY SOUTH-II PANEL



THANKAR BACHAN (CHAIRMAN)

Thankar Bachan began his career as cinematographer in 1990 and has so far worked in more than 40 feature films in a number of Indian languages. He has also written the screenplay for and directed 7 films. He is a major name in modern Tamil literature with a number of short stories and novels to his credit which have been the subject of research at postgraduate level and have been prescribed by universities for course work.

तंकर बचन ने 1990 में नृत्य निर्देशक के तीर पर अपने केरियर की शुरुआत की और इस बीच उन्होंने कई भारतीय भाषाओं में बनने वाली चालींस से ज्यादा फीचर फिल्मों में काम किया। उन्होंने सात फिल्मों की कहानी लिखने के साथ उनका निर्देशन भी किया। आधुनिक तमिल सिंहय में उनका प्रमुख स्थान है। बचन बेर सारी छोटी कहानियों और उपन्यासों के लेखक हैं। इनमें से कई को विश्वविद्यालयों ने पाठ्यक्रम में शामिल कर रखा है और कुछ पर पोस्ट ग्रेजएट स्तर पर शोध हो रहा है।



LINGADEVARU B.S.

Lingadevaru B.S. started off as a pharmacist before becoming one of the established producers and directors of the Kannada television and film industry. He wan the state and National Award for his film Kaada Beladingalu and national recognition for his film Mouni. He is actively involved in promoting artistic cinema by organizing film festivals in rural areas and conducting seminars on film appreciation.

िसंगादेवारू भी एस कन्नड़ टेलीविजन और फिल्म उद्योग में एक स्थापित निर्माता और निर्देशक बनने से पहले एक फर्मासिस्ट थे। यहीं से उन्होंने अपने केरियर की शुरुआत की। उन्हें फिल्म 'करक' बेलाडिगालु' के लिए राज्य और राष्ट्रीय पुररकार से नवाजा गया। फिल्म मीनी ने उन्हें फिल्म जगत नई पहचान प्राप्त हुई। हामीण इलाकों में फिल्म समारोहों और सेमिनारों के आयोजन के जरिये वह आज भी कला सिनेमा को सिकय तौर पर आगे बढ़ोने का काम कर रहे हैं।



CHANDRA SIDDHARTH

Screenwriter, director and producer, Chandra Siddharth produced the Telugu film Nirantaram in 1995, which was selected for the prestigious Cairo and Locarno film festivals. He directed the English feature film The Inscrutable Americans (2000) based on Anurag Mathur's best-selling novel of the same name. It was selected for numerous international film festivals like Kerala, Milano, New York, London and Atlanta among others. Almost all his films in Telugu have bagged state-level awards. He has served the 57th National Film Awards jury as well.

पटकथा लेखक, नर्वशक और निर्माता **चंद्र सिद्धार्थ** ने 1995 में लेलमू किल्म निरंतरम' का निर्माण किया। जिसको मिग्न और लोकानों के प्रतिचित फिल्म समारोहों के लिए चुना गया था। उन्होंने अनुराग माधुर के सबसे अधिक किलने वाले उपन्यास पर आधारित और उसी नाम से निर्मा द इंस्कूटेंबल अमेरिकन का निर्देशन किया। केरल, मिलानो, न्यूयॉर्क, लंदन और अटलांटा स्वार दूशरे कई फिल्म समारोहों के लिए इस फिल्म को वयनित किया गया। 57वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार की जुरों के तीर पर भी शिद्धार्थ ने अपनी सेवाए दी।



JOSEPH PULINTHANATH

Tripura-based Joseph Pulinthanath uses the medium of cinema to tell rural stories of the region. Working in a language that has yet to decide on its script, Kokborok, and in a state that has no film-making tradition worth mentioning, Pulinthanath has used cinema to highlight the unique position of Tripura's indigenous communities. His works include the feature films Mathia (The Bangle, 2004) and Yarwng (Roots, 2008). Mathia was the first film from Tripura to enter the Indian Panorama and Yarwng, the first and only film from Tripura till date to win a National Award.

त्रिपुरा निवासी जोसेफ पुरिलंधनाध्य इलाळं की ग्रामीण कहानियों को बताने के लिए सिनेमा के मान्यम का इस्तेमाल करते हैं। एक ऐसी माथा जिसे अभी अपनी लिपि तय करनी है, एक चाज्य जहां फिल्म बनाने का ऐसा कोई इतिहास नहीं है जिसका जिक्र किया जा सके में काम करने का साहस पुरिलंधनाध्य ने किया है। उनके काम की झोली में 2004 में बनी फीचर फिल्म अटिया और 2008 की यारजंग शुमार है। अटिया त्रिपुरा से भारतीय पैनोरमा में पहुंचने वाली पहली कोकबोरोक फिल्म थी। यारवंग त्रिपुरा से पहली और अकेली फिल्म थी जिस्से राष्ट्रीय पुरस्कार



N. MANU CHAKRAVARTHY

N. Manu Chakravarthy is an associate professor and head of the department of English at the N.M.K.R.V. College for Women. A teacher with over 30 years of experience, he wan the Best Film Critic Award for 2010 at the 58th National Film Awards. He is also a published author with a number of books and articles to his credit. He has served as a jury at the National Film Awards and at the MIFF.

एन मनु चक्रकर्ती एसोसिएट प्रोफेसर होने के साथ एनएमकेआरवी महिला कॉलेज में अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष है। शिक्षण में तीस साल से ज्यादा का अनुमन रखने वाले खक्रवर्ती को 2010 में आयोजित 58वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ किल्म आलोचक का पुरस्कार मिला है। उनकी कई किताब प्रकाशित हो चुकी हैं और देश सारे छंपे लेखों का श्रेय मी उनके नाम है। राष्ट्रीय किल्म पुरस्कार और एमआईएफएक में उन्होंने जुड़ी के तीर पर अपनी सेवाएं मी थी थी।

044 REGIONAL FEATURE FILMS JURY NATIONAL FILM AWARDS:13 045

FEATURE FILMS JURY WEST PANEL



CHITRAARTH PURAN SINGH (CHAIRMAN)

Born in 1952, Chitraarth Puran Singh joined the FTII in 1972 after graduating in economics from St. Stephen's College. He assisted Lekh Tandon on a couple of films. His feature Chann Paraesee won the National Award as Best Punjabi film. Another National Award, for Best Film on National Integration, came his way for Shaheed Uddham Singh. Over the years, he has been writing and directing for both films and television in different genres of comedy, social, crime and historical.

सेंट स्टीफेंस कॉलेज से स्नातक करने के बाद **विश्रार्थ पूरन सिंह** ने 1972 में एकटीआईआई में दाखिला लिया। उनका जन्म 1952 में हुआ था। उन्होंने कुछ फिल्मों में लेख टंडन के सहयोगी के तीर पर काम किया। उनकी फीचर फिल्म *चन्न परदे*सी को सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला ।। जनकी फिल्म *शहीद ऊधम सिंह* को भी राष्ट्रीय एकता पर बनी सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया। फिल्म और टेलीविजन के हास्य-व्यंग्य, सामाजिक, अपराधिक और ऐतिहासिक विमिन्न क्षेत्रों में वो सालों से लेखन और निर्देशन का काम कर रहे हैं।



MEENAKSHI SHEDDE

An independent film curator, festival consultant, journalist and film critic, Meenakshi Shedde is India / South Asia Consultant to the Berlin and Dubai International Film Festivals, based in Mumbai. Winner of India's National Award for Best Film Critic, she has been on the jury of 20 international film festivals. She has directed a film, Looking for Amitabh, and has 30 years' experience in journalism, and freelances for Variety, Screen International, Cahiers du Cinema, Times of India and Mid-day.

मुंबई निवासी **मीनाशी रोड्डे** एक स्वतंत्र किल्म क्यूरेटर, फेस्टिवल कंसलटेंट, पत्रकार और फिल्म आलोचक के साथ बर्लिन और दुबई अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों के लिए भारत और दक्षिण एशिया की सलाहकार है। सर्वश्रेष्ठ किल्म आलोचक की श्रेणी में राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने वाली क्षेड्के तकरीबन 20 अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों की जूरी रही हैं । उन्होंने एक फिल्म 'लुकिंग फ़ॉर अमितास' का निर्देशन मी किया है और पत्रकारिता में उनको 30 साल का अनुसव है। शेड्डे 'वेराइटी', 'स्क्रीन इंटरनेशनल', 'कॅडिस' दू सिनेमा', 'टाइम्स ऑफ इंडिया' और 'मिठ-डे' के लिए फ्रीलांसिंग भी करती हैं।



RAJAT DHOLAKIA

Rajat Dholakia learnt Western music, staff notation and arrangement of music from Pandit Ramprasad Sharma and arranging film musical scores for songs and background music from Shayamroo Kamble. He started editing soundtracks for documentaries while working with five-time National Award winner editor Renu Saluja and sound engineer Padmanabhan. As sound designer, music director, background score director he has worked with filmmakers like Arun Khopker, Vidhu Vinod Chopra, Mani Kaul, Ketan Mehta. He has composed the music for more than 5000 ad films and public services films.

रजत दोलिक्या ने पंदित राम प्रसाद शर्मा से पश्चिमी संगीत, स्टाफ संकेतन, संगीत का प्रवंधन और शावमराव कांवले से गानों के लिए फिल्म संगीत स्कोर और पार्शव ध्वनि का प्रबंधन सीखा है। एखिटिंग के लिए पांच बार राष्ट्रीय प्रस्कार जीतने वाली रेन सलजा और इंजीनिवर पदमनामन के साथ काम करने के दौरान ही उन्होंने ढाक्युमेंट्री के लिए साउंडट्रैक एडिटिंग का काम शुरू कर दिया था। ध्वनि किजाइनर, संगीत निर्देशक, पार्शव स्कोर निर्देशक के तौर पर वह अरुण खोपकर, विधू विनोद चोपड़ा, मणि कील, केतन मेहता के साथ काम कर चुके हैं। उन्होंने 5000 से ज्यादा विज्ञापन फिल्मों में संगीत दिया है।



RAJEN BORAH

Rajen Borah is an Assamese film producer. Aai Kot Nai, produced by him, won the Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration at the 56th National Film Award for the year 2008.

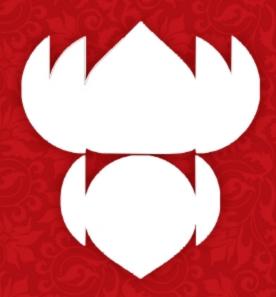
राजेन बोरा एक असमी फिल्म निर्माता हैं। इनकी फिल्म 'अर्झ कोट नाई' को 2008 के 56वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वश्रेष्ठ फिल्म का नर्गिस दत्त पुरस्कार दिया गया।



TEJASWINI PANDIT

Tejaswini Pandit is a Marathi film and television actress. She started her career by playing a negative role in Aga Bai Arrecha. With films like Vavtal and Mee Sindhutai Sapka and appearances in a number of films, plays, television shows, she has established herself as one of Marathi industry's leading actresses. She won the Best Actor Female in MIFTA 2011, London, Best Actress Award at the Spain International Film Festival 2011 and was nominated for Best Performance by an Actress at the Asia Pacific Screen Awards in 2010.

तेजरिवनी पंडित एक मराठी किल्म और टेलीविजन अमिनेत्री हैं। उन्होंने 'अएग बाई' अरेबा' में एक नकारात्मक किरदार के साथ अपने फिल्मी कैरियर की शुरुआत की। 'ववताल' और 'मी सिंधुलाई सापकाळ' समेत कई फिल्मों, नाटकों और टेलीविजन कार्यक्रमों में दिखने के बाद उन्होंने मराठी फ़िल्म उद्योग की एक अमुवा अभिनेत्री के तीर पर अपने आप को स्थापित कर लिया। उन्होंने 2011 में लंदन के एमआईएफटीए में सर्वश्रेष्ठ महिला अमिनेत्री और उसी साल स्पेन में आयोजित इंटरनेशनल फिल्म फेरिटवल में सर्वश्रेष्ठ अमिनेत्री का खिताब जीता। तेजरिवनी को 2010 में एशिया पैशिफिक स्क्रीन अवार्ड में सर्वश्रेष्ठ अभिनय करने वाली अभिनेत्री की श्रेणी में नामांकित किया गया था।



FEATURE FILMS **AT A GLANCE**



AAJCHA DIWAS MAJHA Best Marathi Film

Best Assamese Film

ASTU (MARATHI)

Amruta Subhash

BAGA BEACH

Best Konkani Film

Best Supporting Actress (shared)

Best Dialogue

Sumitra Bhave



FANDRY (MARATHI) Best Debut Film Best Child Artist Somnath Avghade



JAATISHWAR (BENGALI)

Best Music Direction (Songs)

Best Costume-Sabarni Das

Best make-up Artist-Vikram Gaikwad

Best Male Playback singer-Rupankar

Kabir Suman

JAL (HINDI)

Jolly LLB

Best Hindi Film

Best Special Effects



Parichit Paralkar NA BANGAARU TALLI Best Telugu Film Special Mention Anjali Patil

Best Music - Background Score

NORTH 24 KAADHAM

MISS LOVELY (HINDI)

Special Jury Award (Shared)

Best Production Design

Ashim Ahluwalia,

Tabsheer Zutshi.

Shantanu Moitra

Best Malayalam Film

PERARIYATHAVAR

Suraj Venjaramoodu Best Film on Environment

(MALAYALAM)

Best Actor (shared)

Best Khasi Film



(MALAYALAM) Re-recordist of Final Mixed track D Yuvrai



THANGA MEENGAL Best Tamil Film Best Lyrics Na. Muthukumar Best Child Artist (Shared)

SWAPAANAM



THE COFFIN MAKER



Best English Film



THALAIMURAIGAL (TAMIL)



Best Film on National Integration



BAKITA BYAKTIGATO Best Bengali Film

(HINDI)

Best Choreography

Ganesh Acharya

Best Popular Film

DECEMBER 1

P. Sheshadri

Best Kannada Film

Best Screenplay Writer (Original)



KAPHAL (HINDI) Best Children's Film

Best Supporting Actor

Saurabh Shukla



Conservation/Preservation PRAKRUTI (KANNADA) Best Screenplay (Adapted) Panchakshari



TUHYA DHARMA KONCHA (MARATHI)



Best Film on Social Issues



VALLINAM (TAMIL) Best Editing



V.J. Sabu Joseph



YELLOW (MARATHI) Special Jury Award (Shared)

Special Mention



CROSSING BRIDGES Best Sherdukpen Film

BHAAG MILKHA BHAAG



(HINDI) Best Cinematography Rajeev Ravi Best Actress (shared) Liar's Dice

LIAR'S DICE



MADRAS CAFÉ (HINDI)



Best Location Sound Nihar Ranjan Samal Best Sound Design Bishwadeep Chatterjee



SHIP OF THESEUS (ENGLISH-HINDI)

SHAHID (HINDI)

Best Actor (shared)

Raj Kumar

Best Direction





050 FEATURE FILMS NATIONAL FILM AWARDS'13 051

BEST FEATURE FILM सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म SWARNA KAMAL / स्वर्ण कमल ₹ 2,50,000/-

SHIP OF THESEUS शिप ऑफ़ थीसियस





Citation

'A quietly powerful film of an unusual photographer, an erudite Jain monk and a young stockbroker told through different segments which finally unite them through a strange circumstance. In the process the film depicts issues of intuitive brilliance, metaphysical belief and intricate morality in a world full of

'एक असाधारण फ़ोटोग्राफ्ट, एक विद्वान संत और एक युवा शेयर दलाल की कहानियां कहती सशक्त फिल्म, जो अब्ब्रह्म परिरिधतियों में एकाकार हो जाती हैं। इस सफर में फिल्म विसंगतियों से भरे संसार में दूरंदेशी प्रतिमा, परामीतिक आस्था और जटिल नैतिकताओं को प्रकट करती है।'

SHIP OF THESEUS । शिप ऑफ़् थीसियस

Year 2013 / English/Hindi / Digital / Colour / 144 min

Direction: Anand Gandhi Production: Recyclewala Films Cinematography: Pankaj Kumar Editing: Adesh Prasad, Sanyukta Kaza, Satchit Puranik Music: Naren Chandavarkar, Benedict Taylor Cast: Aida El-Kashef, Neeraj Kabi, Sohum Shah

SYNOPSIS

intuitive brilliance as an aftermath of a clinical procedure. An erudite monk confronting an ethical dilemma with a long-held ideology has to choose between principle and death. And a young stockbroker, following the trail of a stolen kidney, learns how intricate morality can be. Following the separate strands of their philosophical journeys, and their eventual convergence, Ship of Theseus explores questions of identity, justice, beauty, meaning and

An unusual photographer grapples with the loss of her एक असाधारण फोटोग्राफ्र गलत इलाज के कारण अपनी आंखे खोने के दुख से जुझ रही है। लंबे समय से एक विचारधारा का पालन कर रहा एक विद्वान सन्यासी सिद्धांतों और मृत्यु के बीच में से किसी एक को चुनने की नैतिक पशोपेश में फंसा हुआ है और एक युवा स्टॉकब्रोकर, जो चोरी किए गए गुर्दे के मालिक को ढुंढने के दौरान नैतिकता की जटिलता से रूबरू होता है। इन तीनों चरित्रों के फलसफे की अलग अलग यात्रा और फिर एक जगड़ आकर उनके मिलने के सफर के जरिये शिप ऑफ थीसियस पहचान, न्याय, खबसुरती, अर्थ और मृत्यु के सवालों की खोज करती है।

PROFILE



ANAND GANDHI

Anand Gandhi is a film-maker, playwright and artist, deeply interested in philosophy, evolutionary psychology and sci-fi. His work in theatre, television and short cinema has won him several prestigious awards in the past decade. Ship of Theseus is his first feature.

आनंद गांधी एक फिल्म निर्माता, नाटककार और कलाकार हैं, जो दर्शनशास्त्र, विकासपरक मनोविज्ञान और साइंस-फिक्शन में दिलचस्पी रखते हैं। पिछले एक दशक के दौरान थिएटर, टेलीविजन और लघु सिनेमा में किए गए उनके काम को कई प्रतिष्वित पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। शिप ऑफ श्रीसियस उनकी पडली फीवर फिल्म है।



RECYCLEWALA FILMS PVT. LTD

Recyclewala Films Pvt. Ltd is an independent film production company with a vision to produce artful and engaging cinema for Indian and international audiences. With Anand Gandhi at the helm, the company is a platform for young film-makers to produce creative and technically innovative content.

रिसाइकलवाला फिल्म्स एक स्वतंत्र फिल्म निर्माण कंपनी है, जिसका उददेश्य भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों के लिए कला से भरपूर और दिलचस्य फिल्मों का निर्माण करना है। आंनद गांधी की अगुआई में यह कंपनी रचनात्मक और तकनीकी रूप से नए कंटेंट का निर्माण करने के लिए युवा फिल्म निर्माताओं को एक मंच उपलब्ध कराती है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR BEST DEBUT FILM OF A DIRECTOR निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली फ़िल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार SWARNA KAMAL / स्वर्ण कमल ₹ 1,25,000/-

FANDRY । फ़ैन्ड्री





Citation

'A stark and realistic portrayal of Dalits in India seen through the eyes of a young boy who is desperately trying to break age-old shackles. It makes a strong statement that despite various reformers doing their best ... much remains to be

पुरानी बेड़ियों को तोड़ने का प्रयास कर रहे एक युवा की आंखों से यह फिल्म मास्त में दलितों की रिधति की कट वास्तविकताओं का चित्रण करती है। सुधारकों के पुरुजोर प्रयासों के बावजूद अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है, फिल्म इस सच्चाई का सज्ञक्त चित्रन है।'

FANDRY । फ़ैन्ड्री

Year 2013 / Marathi / Digital / Colour / 103 min

Direction: Nagraj Manjule Production: Navalakaha Arts and Holy Basil Combine Screenplay: Nagraj Manjule Cinematography: Vikram Amladi Editing: Chandan Arora Music: Aloknanda Das Gupta Cast: Kishor Kadam, Chaya Kadam, Pravin Trade, Suraj Pawar and Sakshi Vyavhare

SYNOPSIS

classmate Shalu, who is from a higher caste. This prevents प्रेम हो जाता है, जो उच्च जाति से ताल्लुक रखती है। इस वजह से वह him from expressing his feelings towards Shalu. He becomes obsessed with killing a black sparrow to fulfil his yearnings about Shalu. Constantly, looking for a black sparrow, while running after his dream, Jabya is left with no alternative but to face and accept the harsh reality of his

Jabya is born in a Kaikadi caste. He falls in love with his 'जाब्य का जन्म कैकड़ी जाति में होता है। उसे अपनी सहपाठी शालु से कभी भी शालु के प्रति अपने प्रेम का इजहार नहीं कर पाता। शालु के प्रति अपनी चाहत को पूरा करने के लिए वह काली गौरेया को मारने से मनोग्रहित हो जाता है। लगातार काली गौरेया की तलाश करते और अपने सपने के पीछे भागते हुए जाब्य के पास अपने जीवन की कड़वी सच्चाई का सामना करने और उसे स्वीकार करने का अलावा कोई विकल्प नहीं बचता।'

PROFILE



NAGRAJ MANJULE

Born and brought up in Cholapur district in Maharashtra, Nagraj Manjule's first National Award-winning short film Pistulya is a reflection of his 'felt experience'. He pursued his master's in Marathi literature from Pune University and master's in communication studies from New Art, Science and Commerce College, Ahmednagar.

महाराष्ट्र के बोलापुर जिले में जन्मे और पले-बढ़े नागराज मंजुले की पहली राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त लघु फिल्म थी /पैस्तुल्य। यह फिल्म उनके द्वारा 'महसुस किए गए अनुभवों' को दर्शाती है। उन्होंने पुणे यूनिवर्सिटी से मराठी साहित्य में और अहमदनगर में न्यू ऑर्ट, साइंस ऐंड कॉमर्स कॉलेज से कम्युनिकेशन स्टडीज में भी रनातकोत्तर की पढ़ाई की है।



NAVALAKAHA ARTS & HOLY BASIL COMBINE

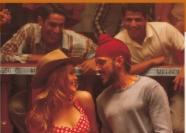
Navalakaha Arts & Holy Basil Combine is a partnership firm consisting of Navalakha Arts, Media & Entertainment (proprietor Nilesh M. Navalakha) and Holy Basil Productions Pvt. Ltd headed by Vivek Kajaria.

नवलखा ऑदर्स ऐंड होली बेसिल कंबाइन, नवलखा आदर्स, मीडिया एंड ऍटरटेनमेंट (मालिक नीलेश एम. नवलखा) और विवेक कजारिया के नेतृत्व वाले होली बेसिल प्रोडक्शंस प्राइवेट लिमिटेड की संयुक्त कंपनी

BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय एवं संपूर्ण मनोरंजक फिल्म SWARNA KAMAL / स्वर्ण कमल ₹ 2,00,000/-

BHAAG MILKHA BHAAG। भाग मिल्खा भाग





Citation

For retaining the story and values of a great sportsman and translating it into the cinematic medium with aplomb.

'एक महान खिलाड़ी की जीवनगाथा और मूल्यों को समेटती हुई फ़िल्म जो सिनेमा के माध्यम से मंत्रमुख करने वाली कहानी बनती है।

BHAAG MILKHA BHAAG। भाग मिल्खा भाग

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 188 min

Direction: Rakevsh Omprakash Mehra Production: Viacom18 Motion Pictures and ROMP Cinematography: Binod Production Editing: P.S. Bharathi Music: Shankar-Ehsaan-Loy Cast: Farhan Akhtar, Sonam Kapoor, Divya Dutta, Pavan Malhotra

SYNOPSIS

from the pages of history. All that is most remembered is that Milkha Singh, hailed as the Flying Sikh, was a famous athlete, who infamously lost the penultimate race of his life. The film attempts to understand a catastrophic loss that was deemed a sure victory and explores through the darkness of disgrace Milkha's redemption, the redemption and catharsis that come when he confronts his past.

Milkha Singh - for some the name evokes a faint memory मिल्खा सिंह, ऐसा नाम है, जो इतिहास के पन्नों से धुंघली सी याद ताजा करता है। लोगों को केवल इतना याद है कि फ्लाइंग सिख के नाम से मशहर मिल्खा सिंह एक नामी खिलाडी थे. और अपनी आखिरी दौड से पहले हुई दौढ (ओलंपिक) में वह हार गए थे। इस फिल्म में समझाने की कोशिश की गई है कि आखिर ऐसा क्या हुआ जो एक निश्चित जीत हार में तब्दील हो गई। फिल्म मिल्खा के अपमान के अंधेरे में जाकर उनके इससे बंधन मुक्त होने की कहानी दिखाती है, और यह बंधन मुक्ति व संशुद्धि उन्हें तब मिलती है, जब वह अपने अतीत का सामना करते हैं।

PROFILE



RAKEYSH OMPRAKASH MEHRA

Rakeysh Omprakash Mehra is a director, writer and producer who established Rakeysh Omprakash Mehra Pictures (ROMP). His film Rang De Basanti won four National Awards (President's Medals), was India's official entry to the Oscars 2006-2007 and was also nominated by British Academy of Film and Television Arts (BAFTA) in the foreign language category 06-07.

राकेश ओमप्रकाश मेहरा एक निर्देशक, लेखक और निर्माता हैं, जिन्होंने राकेश ओमप्रकाश मेहरा पिक्वर्स (आरओएमपी) की स्थापना की। उनकी फिल्म रंग वे बसंती को चार राष्ट्रीय पुरस्कार मिले थे और यह 2006-2007 के लिए ऑस्कर परस्कारों में भारत की आधिकारिक प्रविष्टि थी। इसे ब्रिटिश एकेडमी ऑफ फिल्म एँड टेलीविजन ऑर्ट्स (बाटा) द्वारा 2006-07 में विदेशी भाषा की फिल्म के लिए नामित किया गया था।



VIACOM18 MOTION PICTURES & ROMP

Viacom18 Motion Pictures is India's finest fully integrated motion pictures studio. In just two and a half years of operations, it has emerged as a force to reckon with by delivering a stream of critically and commercially successful films. ROMP is a boutique film house set up in the year 2004. It has so far produced Rang de Basanti, Delhi-6, Teen Thay Bhai and Bhaog Milkha Bhaog.

वायकॉम 18 मोशन पिक्चर्स, भारत के श्रेष्ठ इंटीग्रेटेड मोशन पिक्चर्स स्ट्रियो में से एक है। परिवालन शुरू करने के महज दो साल के दौरान स्ट्रांडियों ने व्यावसायिक और समीक्षात्मक रूप से सफल रही *स्पेशल 26, कहानी, गैन्स ऑफ* वसेपुर, औएमजी- ओह गाई गींख!, शैतान, दैट गर्ल इन यैली बुट्स, प्यार का पंचनामा. इनकार और साहिब, बीवी और गैंगस्टर रिटर्न्स जैसी फिल्में देकर अपनी अलग पहचान बनाई है।

NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION राष्ट्रीय एकता पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,50,000/-

THALAIMURAIGAL । तलैमुरैगल





Citation

'A sensitive tale about the breaking of walls of orthodoxy and religious and linguistic bias in a small village in Tamil Nadu. Love and compassion of a small boy and his mother wins over not only their own blood but the whole rural

'तमिलनाडु के एक छोटे से गांव में पुरातन जंजीरों और भाषायी एवं धार्मिक पूर्वाग्रहों को तोड़ने वाली एक संवेनशील कहानी। एक छोटे लड़के और उसकी माँ की दयालुता और प्रेम न सिर्फ उसके अपने परिवार को बल्कि समूचे समुदाय का हृदय जीत लेते हैं।

THALAIMURAIGAL। तलैमुरैगल

Year 2013 / Tamil / Digital / 105 min

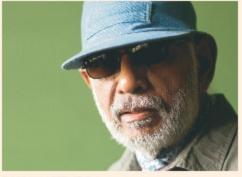
Direction-Cinematography-Editing: Balu Mahendra Production: Company Productions Music: Illaiyaraja Cast: Sashi Kumar Subramani, Ramya Shankar, Vinodhini, Balu Mahendra

SYNOPSIS

Goanese catholic girl who doesn't know Tamil. In spite of his father's disapproval, he marries the girl. The son and his bride leave the house. Twelve years go by and they have a son. They learn that his father has had a stroke. The son doesn't want to go and see the old man but his wife reminds him that their kid has to see his grandfather before the old man dies.

This is the story of an old man who is fanatic about his एक बूढ़ा व्यक्ति अपनी जाति, धर्म और भाषा को लेकर बेहद कटटरपंथी caste, religion and language. His son falls in love with a है। उसके पुत्र को गोवा में रहने वाली एक कैथोलिक लडकी से प्यार हो जाता है. जिसे बिल्कल भी तमिल नहीं आती है। पिता की सहमति नहीं होने के बावजूद वह उस लड़की से शादी करता है और अपनी पत्नी के साथ घर छोड़कर चला जाता है। 12 वर्ष बीत जाते हैं और इस बीच उनका एक बेटा होता है। उन्हें पता चलता है कि पिता को दिल का दौरा पड़ा है। बेटा अपने पिता के पास जाकर जनसे मिलना नहीं चाहता, लेकिन उसकी पत्नी उसे समझाती है कि उनके बच्चे के लिए उसके दादा से मिलना बहत जरूरी है।

PROFILE



BALU MAHENDRA

Balu Mahendra (1939-2014) was a cinematographer, director, screenwriter and film editor. After completing a course in cinematography at the FTII, Mahendra entered films as a cinematographer in the early 1970s. He was one of the earliest film-makers in Tamil to introduce 'subtlety', and is considered to be a part of the first in a wave of directors and screenwriters who revitalized Tamil cinema. He won six National Film Awards.

बाल, महेंद्र (1939-2014) एक सिनेमैटोग्राफर, निर्देशक, पटकथा लेखक और फिल्म संपादक थे। एफटीआईआई में सिनेमैटोग्राफी का पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद महेंद्र ने 1970 के शुरूआती वर्षों में एक सिनेमैटोग्राफर के तौर पर फिल्मी दुनिया में कदम एखा। महेंद्र उन चुनिंदा शुक्तआती निर्देशकों में थे, जिन्होंने सिनेमा की बारीकियों पर ध्यान देना शुरू किया और वह निर्देशकों व पटकथा लेखकों की उस श्रेणी में शामिल हो गए, जिन्होंने तमिल सिनेमा में नई ऊर्जा का संवार किया। उन्हें ६ राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।



COMPANY PRODUCTIONS

Headed by actor, director and producer M. Sasikumar, Company Productions has been producing films since 2008. It won the National Award for Best Tamil film in 2009.

अभिनेता, निर्देशक एवं प्रोड्यूसर एम. शशिकुमार की कंपनी प्रोडक्शंस 2008 से फिल्म निर्माण में संलग्न है। उसने 2009 में सर्वश्रेष्ठ तमिल फिल्म के लिए पुरस्कार जीता।

BEST FILM ON SOCIAL ISSUES सामाजिक मुददों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,50,000/-

TUHYA DHARMA KONCHA । तुह्या धर्म कोंचा





Citation

Tale of a poor tribal family being torn between prosecution by law-enforcing agencies on one hand and issue of loss of their traditional faith and culture through religious conversions on the other."

'एक गरीब जनजातीय परिवार की दास्तान जो एक तरफ तो कानून लागू करने वाली एजेंसियों की यंत्रणा झेलता है तो दूसरी ओर धर्मांतरण के कारण परम्परागत आस्था और सांस्कृतिक पतन के दंश से पीड़ित है।

TUHYA DHARMA KONCHA । तुह्या धर्म कोंचा

Year 2013 / Marathi / Digital / Colour / 118 min

Direction-Screenplay: Satish Manwar Production: Indian Magic Eye Mation Pictures Pvt Ltd Cinematography: Parixit Womer Music: Dattaprasad Ranade Cast: Upendra Limaye, Vibhavari Deshpande, Kishor Kadam, Suhas Palshikar, Shashank Shende

SYNOPSIS

intense story of a tribal Indian family, their quest for survival, their self-discovery of religion and their encounters with new 'systems' in their life. When presented with a desperate hope of survival, a mother willingly converts into Christianity, only to face the wrath of local sentiments and religious fanatics.

Set in the forests of a tiger sanctuary in India, this is an भारत के एक बाघ अभयारण्य में फ़िल्माई गई यह फिल्म एक आदिवासी भारतीय परिवार की भावक कहानी है, जो अस्तित्व बचाने की कोशिशों, धर्म की आत्म-खोज और जीवन में नई 'व्यवस्था' से उनकी मृतमेड दर्शाती है। इस हताशा में उन्हें उम्मीद की एक किरण दिखती है तो मां स्वेच्छा से ईसाई धर्म स्वीकार कर लेती है और फिर उसे स्थानीय भावनाओं और धार्मिक कटटरपंथियों की नाराजगी झेलनी पड़ती है।

PROFILE



SATISH MANWAR

Satish Manwar is a film-maker from Mumbai, India. His first feature film Gabhricha Paus (The Damned Rain) premiered at Ratterdam International Film Festival 2009 and was later shown at various film festivals including Durban IFF, Vancouver IFF.

सतीश मनवार मुंबई में रहने वाले फ़िल्मकार हैं। उनकी पहली फ़ीचर फ़िल्म गाग्रीचा पाऊस का प्रीमियर रोटरहैम इंटरनैशनल फिल्म फेरिटवल 2009 में हआ था और इसके बाद इस फिल्म को ठर्बन आईएफएफ, वैंक्वर आईएफएफ समेत विभिन्न फिल्म फेस्टियलों में प्रदर्शित किया गया था।



INDIAN MAGIC EYE MOTION PICTURES

Indian Magic Eye Motion Pictures is a film production house based in Pune and Mumbai. The company is a sister concern of Indian Magic Eye Pvt Ltd., which was the executive producer of Harishchandrachi Factory, India's official entry to the Oscars.

इंडियन मैजिक आई मोशन पिक्चर्स पुणे और मुंबई रिधत एक फिल्म प्रोडक्शन डाउस है। यह कंपनी *डारिश्चंद्राची फीक्टरी* फिल्म निर्मित करने वाली इंडियन गैजिक आई प्राइवेट लिमिटेड की सहायक इकाई है। हरिश्चंब्राबी फ़ैक्टरी ऑस्कर के लिए भारत की आधिकारिक प्रविष्टि थी।

BEST FILM ON ENVIRONMENT CONSERVATION / PRESERVATION पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,50,000/-

PERARIYATHAVAR । पेरारियातवार





Citation

'It tells the story of those nameless, faceless marginalized people through the life of a widowed father who works as a scavenger and his eight-year-old son. It depicts the real lives of the poor who live in the margin of civilized society with an unusual power and artistic honesty."

'एक सफाईकर्मी विधुर पिता और उसके आठ साल के बेटे के जीवन के माध्यम से असंख्य गुमनाम और अमूर्त लोगों की कहानी जो समाज में हाशिये पर धकेल दिए गए हैं। फ़िल्म ऐसे लोगों के संघर्ष और वास्तविक जीवन को चित्रित करने में पूर्णतया सफल हुई है।'

PERARIYATHAVAR | पेरारियातवार

Year 2013 / Malayalam / Digital / Colour / 110 min

Direction: Dr Biju Production: Ambalakkara Global Films Screenplay: Dr Biju Cinematography: M.J. Radhakrishnan Editing: Karthik Jogesh Music: Issac Thomas Kottukappally Cast: Suraj Venjaramoodu, Master Govardhan, Indrans, Nedumudi Venu

SYNOPSIS

through the life of a father and his eight-year-old son. The father works as a temporary sweeper. He collects the garbage from the city streets into a vehicle and dumps it at a rural village. Sometimes he takes his son along with him. During the travels they see and experience the life of many nameless, faceless marginalized people.

The film tells the story of marginalized people in Kerala - फ़िल्म में एक पिता और उसके 8 वर्षीय पुत्र के जरिये केरल में हाशिए पर पढे लोगों की कहानी दिखाई गई है। पिता एक अस्थायी जमादार का काम करता है। वह शहर की गलियों का कड़ा एक वाहन में इकटता कर ग्रामीण इलाकों में फेंकने के लिए जाता है। कभी-कभी वह अपने बेटे को भी काम पर साथ लेकर जाता है। यात्रा के दौरान वे हाशिए पर पड़े कई गमनाम, अनजान लोगों को देखते हैं और उनके जीवन को अनुभव करते

PROFILE



DR BIJU

Dr Biju is a homoeopathic doctor and a self-taught film-maker who debuted with Saira (2005). It was the opening film in the 'Cinema of the World' at the Cannes Film Festival, 2007 and also selected to Indian Panorama 2006. His second feature Raman was officially selected at Cairo Film Festival, 2009. His third film Veettilekkulla Vazhi got the Silver Lotus, India's national film award for the best Malayalam film.

डॉ. बीज् एक होमियोपैथिक चिकित्सक हैं और उन्होंने फिल्म निर्माण की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं ली है। 2005 में उनकी निर्देशित पहली फिल्म साइरा प्रदर्शित की गई थी। यह कान्स फिल्म फेरिटवल 2007 में 'सिनेमा ऑफ द वर्ल्ड' की ओपनिंग फिल्म थी और इसे इंडियन पैनोरमा 2006 के लिए भी चुना गया था। जनकी दसरी फीचर फिल्म रमन को आधिकारिक रूप से काइरो फिल्म फेस्टिवल. 2009 के लिए भी चुना गया था। उनकी तीसरी फ़िल्म *वित्तीलेकुल्ला वजडी* को भारत के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्म के लिए रजत कमल प्रदान किया गया।



AMBALAKKARA GLOBAL FILMS

Ambalakkara Global Films is a banner founded by K. Anilkumar, A law graduate, he has been making movies under this banner since 1990. He is also reputed as a leading businessman in Kerala. He is now actively producing many meaningful movies in Malayalam under the banner.

अंबालाक्करा ग्लोबल फिल्म्स के अनिल कुमार की कंपनी है। विधि में स्नातक करने वाले अनिल कुमार वर्ष 1990 से इस बैनर के तले फिल्मों का निर्माण कर रहे हैं। वह केरल के दिग्गज उद्ममी के रूप में भी प्रतिष्ठित है। अब वह इस बैनर के तले मलयालम में सक्रियता से कई अर्थपूर्ण फिल्मों का निर्माण कर रहे हैं।

BEST CHILDREN'S FILM सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म SWARNA KAMAL / स्वर्ण कमल ₹ 1,50,000/-

KAPHAL । काफल



Citation

'A small village deep in Uttarakhand. A touching story set in beautiful mountains where two young boys pine for their father who has been away for quite a few years. They have dreams which they share with their close friends as

'उत्तराखंड के एक सुदूरवर्ती गांव की मर्मरपर्शी कहानी मनोरम पहाडियों के बीच दो बच्चों की दास्तान है जो कई साल से पिता के बिछोड़ से पीड़ित है। उनके भी कुछ सपने हैं जिन्हें वे अपने दोस्तों के साथ बांटते हैं।

KAPHAL काफल

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 90 min

Direction: Batul Mukhfiar Production: Children's Film Society India Screenplay: Batul Mukhfiar, Vivek Shah Cinematography: Vivek Shah Editing: Hemanti Sarkar Music: Ved Nair Cast: Harish Rana, Pawan Singh Negi, Subrat Dutt, Pabali Sanyal

SYNOPSIS

seen their father for 5 years. When he does come home, he अपने पिता को नहीं देखा। जब भी वह घर आया करते थे तो उन्हें बहुत scolds them regularly and disciplines them too much. Makar's friends convince him that his father may be an imposter. They plan to get rid of their father through a magic potion from a witch in the forest, Pagli Dadi. But instead they meet Pagli Dadi's granddaughter, Ghungra, who takes them for a merry ride.

Makar and Kamru live in a small village. They have not अंगर कमरू एक छोटे से गांव में रहते हैं। उन्होंने करीब 5 वर्ष से डांटते थे और हमेशा अनुशासित करने की कोशिश करते थे। मकर के दोस्त उसे इस बात का पूरा भरोसा दिला देते हैं कि हो सकता है उनके पिता एक ढोंगी हों। दोनों भाई जंगल में रहने वाली जादगरनी पगली दादी के एक जादूई अर्क के इस्तेमाल से अपने पिता से छुटकारा पाने की योजना बनाते हैं। लेकिन इसके बदले वे पगली दादी की पोती घुंघरा से मिलते हैं, जो उन्हें खुबसूरत सैर के लिए लेकर जाती है।

PROFILE



BATUL MUKHTIAR

Batul Mukhtiar is an alumni of the FTII, Pune. Apart from several documentary shorts, she has directed a documentary feature 750 Seconds Ago which travelled to many prestigious festivals across the world. In 2007, she directed a children's feature film, Lilkee.

बतुल मुख्तियार एफटीआईआई, पुणे की छात्र रह चुकी है। कई वृत्तवित्रों, शॉर्ट फिल्मों के अतिरिक्त उन्होंने एक वृत्तचित्र फीचर 150 सेकंड्स निर्देशित की है, जिसे दुनिया भर में कई प्रतिष्ठित फ़िल्म फेस्टिवलों में प्रदर्शित किया गया। 2007 में उन्होंने एक बाल फीचर फिल्म लिलकी निर्देशित की।



CHILDREN'S FILM SOCIETY INDIA

Children's Film Society India was founded in 1955 with the hope that indigenous and exclusive cinema for children would stimulate their creativity, compassion and critical thinking. Over the years some of the brightest talents of Indian cinema have directed films for the CFSI. With an enviable catalogue of 250 films in 10 different languages, CFSI remains the prime producer of children's films in South Asia.

बाल चित्र समिति की स्थापना 1955 में बच्चों की रचनात्मकता, संवेदना और समीक्षात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए स्वदेशी और विशिष्ट फिल्मों के निर्माण के उददेश्य से की गई थी। स्थापना से लेकर अभी तक भारतीय सिनेमा की मशहूर शिक्सयतों में से कई ने सीएफएसआई के लिए फिल्में निर्देशित की है। 10 विभिन्न भाषाओं में 250 फ़िल्मों की सूची के साथ सीएफएसआई दक्षिण एशिया में प्रमुख बाल फिल्म निर्माता है।

BEST ASSAMESE FILM सर्वश्रेष्ठ असमिया फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

AJEYO । अजेयो





Citation

The story of a boy who stands up against in pre-independent India and hopes for rule of law in independent India. But his hopes are all but shattered by

'यह ऐसे लड़के की कहानी है जो स्वतंत्रता पूर्व के भारत में संघर्ष करते हुए स्वतंत्र भारत में कानून और सुशासन की आशा रखता है। लेकिन बाद की घटनाएं उसकी सारी उम्मीदों को घराशायी कर देती हैं।

AJEYO। अजेयो

Year 2013 / 35mm / colour / 117 min

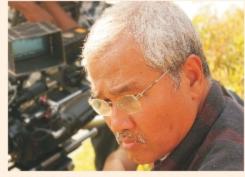
Direction-Screenplay: Jahnu Barua Production: Shiven Arts Cinematography: Surnan Dowerah Editing: Hue-En Barua Cast: Rupam Chetia, Jupitora Bhuyan

SYNOPSIS

Asheerbador Rong by Arun Sarma, this is the story of आशीरबादोर रोन्ग पर आधारित गोजेन केवट की कहानी है जो आजादी Gojen Keot who was 22 years old just before India's के समय 22 साल का था। वह हमेशा नाईसाफी से लड़ता आया था। independence. He has always been honest and fought किन्तु आजादी के बाद उसके सपने टूट जाते हैं और वह निराशावादी बन against injustice. But events after independence shatter his dreams and he becomes a pessimist till the new millennium when he sees a ray of hope in his granddaughter.

Based on the Sahitya Akademi Award-winning novel यह अरुण शर्मा के साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त उपन्यास जाता है। लेकिन नई सहस्राब्दि में उसे अपनी पौत्री में उजास की किरण दिखाई देती है।

PROFILE



JAHNU BARUA

Nine-time National Award winner Jahnu Barua did his postgraduation diploma in film direction from FTII, Pune. He got major national as well as international recognition with Haladhia Charaye Baadhan Khai (The Catastrophe) that won the National Award for the Best Film (Golden Lotus) in 1988 and several international recognitions, including the Grand Prix Silver Leopard and World Ecumenical Award at the Locarno International Film Festival, Jahnu Barua was conferred the Padma Shri in 2003.

नौ राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके जानू बरुआ ने फिल्म निर्देशन में स्नातकोत्तर **डि**प्लोमा एफटीआईआई, पुणे से किया। और प्रमुख राष्ट्रीय पुरस्कारों के अलावा 1988 में *इलोदिया बौराय बाओधन खाई* के लिए सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का स्वर्ण कमल प्राप्त हुआ था। उन्हें कई अंतरराष्ट्रीय सम्मान मिले हैं। इनमें ग्रां प्री सिल्वर लैपर्ड और लोकर्नो इंटरनेशनल फ़िल्म फेस्टिवल का वर्ल्ड एक्यूमेनिकल अवॉर्ड शामिल है। जान् बरुआ को 2003 में पदमश्री से अलंकत किया गया।

SHIVEN ARTS

SHIVEN ARTS

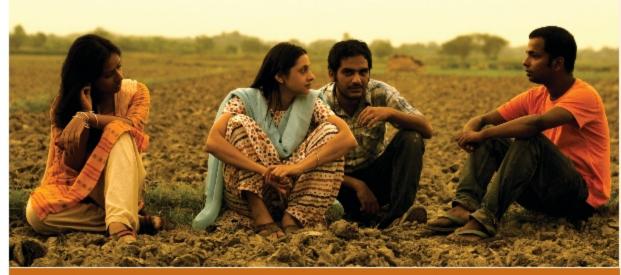
A film production house, Shiven Arts was established in 2012 primarily for the promotion of cinema of the north-east under the sole proprietorship of Shankar Lall Goenka, a leading film exhibitor and distributor based in Assam and Meghalaya. Ajeyo is its first production.

फिल्म प्रोडक्शन हाउस शिवन आदर्श की स्थापना प्रख्यात फिल्म प्रदर्शक एवं वितरक शंकर लाल गोयनका ने पूर्वोत्तर के सिनेमा को बढ़ावा देने के लिए 2012 में की। यह कंपनी असम और मेघालय में स्थित है और अजेयो इसकी पहली

BEST BENGALI FILM सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

BAKITA BYAKTIGATO । बाकिटा ब्यक्तिगतो





Citation

'A delightful film about the need for love in our cynical times.' 'आज के समय के संशयपूर्ण दौर में प्रेम की आकांक्षा पर बनी मोहक एवं मनोरंजक फिल्म।'

BAKITA BYAKTIGATO। बाकिटा ब्यक्तिगतो

Year 2013 / Digital / Colour / 144 Min

Direction-Screenplay-Editing: Pradipta Bhattacharyya Production: Tripod Entertainment Cinematography: Subhankar Bhar Music: Anindya Sundar Chakraborty Cast: Madhabi Mukherjee, Ritwik Chakraborty, Aparajita Ghosh Das, Amit Saha, Debesh Roy

SYNOPSIS

experience love, starts shooting a documentary on love. His exploration leads him to the knowledge of a mysterious village, existing on the threshold of reality and fantasy. Anyone reaching there cannot steer clear of Cupid's arrow. Pramit, along with his cameraperson, starts looking for the village and subsequently passes through a succession of events which can be termed nothing but magical!

Pramit, an independent film-maker who is yet to प्रमित एक खंतज फिल्म निर्माता है जिसे अभी प्रेम का अनुभव नहीं हुआ है लेकिन वह प्रेम पर एक डाक्य्मेंट्री बनाना शुरू कर देता है। उसकी तलाश उसे एक रहस्यमयी गांव में ले जाती है जो वास्तविकता और कल्पना लोक के छोर पर बसा है। वहां जाने वाला कोई भी व्यक्ति मदन के बाण से खुद को नहीं बचा सकता। प्रमित अपने कैमरामैन के साथ इस गांव की तलाश करता है और उसके बाद की घटनाएं जादई हैं।

PROFILE



PRADIPTO BHATTACHARYYA

Pradipto Bhattacharyya did a certificate course in multimedia and web technology, from MTDRC, School of Education Technolgy, Jadavpur University and Zee Interactive Learning Systems, 2001. He followed it up with a postgraduate diploma in cinema with specialization in editing at Roopkala Kendro (An Indo-Italian Institute for Film and Social Communication. He has been working as a professional editor, scriptwriter and director

प्रदीप्तो भटटाचार्य ने जाधवपुर युनीवर्सिटी के एमटीडीआरसी, स्कूल ऑफ एजकेशन टैक्नोलॉजी से मल्टीमीडिया और वेब टैक्नोलॉजी में सर्टिफिकेट कोर्स किया और जी इंटरेक्टिव लर्निंग सिस्टम्स 2001 से भी प्रमाणपत्र हासिल किया। इसके बाद उन्होंने संपादन में विशेषज्ञता के साथ रूपकला केंद्र (एक इंडो-इटेलियन इंस्टीट्यूट फॉर फिल्म एंड सोशल कम्युनिकेशन) से पोस्ट ग्रेजुएट किप्लोमा किया। वह 2003 से संपादन, पटकथा लेखन और निर्देशन के प्रोफेसर के तीर पर कार्य कर रहे हैं।



TRIPOD ENTERTAINMENT

Founded by Satrajit Sen, Tripod Entertainment is a leading film and music production company in Bengal which specializes in structured handling of film-making which starts from the conception stage right until marketing, release and distribution.

संज्ञजीत सेन द्वारा स्थापित ट्राइपॉंड एंटनटेन्गेंट बंगाल की एक प्रमुख फ़िल्म एवं संगीत प्रोडक्शन कंपनी है। यह कंपनी फ़िल्म निर्माण के विभिन्न चरणों जैसे फिल्म की अवधारणा से लेकर मार्केटिंग, रिलीज और वितरण तक में विशेषज्ञ है।

BEST HINDI FILM सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

JOLLY LLB। जॉली एलएलबी





Citation

'A fast-paced film of an ambitious lawyer wanting to make it big through short-cut method ends up opening a high-profile case and what follows is a roller-coaster ride of a man, his moralities, ambitions and

'एक महत्वाकांक्षी वकील की कहानी, जो शार्ट कट अपनाते हुए ऊंचाइयां हासिल करना चाहता है और इसे हासिल करने के लिए एक बढ़े मुकदमें को हाथ में लेता है। इसके बाद शुरू होता है उसकी नैतिकताओं और महत्वाकांक्षाओं का हिचकोलेदार सफर (

JOLLY LLB। जॉली एलएलबी

Year 2013 / 35mm / Colour / 131 min

Direction-Screenplay: Subhash Kapoor Production: Fox Star Studios India Pvt. Ltd Cinematography: Anshuman Mahaley Music: Krsna Cast: Arshad Warsi, Amrita Rao, Boman Irani, Saurabh Shukla

SYNOPSIS

unhappy with his life in Meerut. Desperate to make it big in the field of law, he moves to Delhi and reopens a highprofile case, in the process taking on the biggest lawyer in Delhi. What follows is a roller-coaster ride.

Advocate Jagdish Tyagi aka Jolly is a law graduate वकील जगदीश त्यागी उर्फ जॉली विधि में रनातक है, लेकिन मेरठ में अपने जीवन से वह खुश नहीं है। मशहूर वकील बनने के उतावलेपन में वह दिल्ली आकर एक चर्चित मामले की फाइल दोबारा खलवाता है और इस दौरान वह दिल्ली के सबसे बढ़े वकील को चुनीती दे डालता है। इस पुरी जददोजहद में उसे एक स्वार्थी जज के रूप में अप्रत्याशित साथी मिलता है, जो जॉली से प्रेरित होकर बिल्कुल बदल जाता है। इस तरह यह फ़िल्म लेकर चलती है एक गुदगुदाने वाले सफर पर।

PROFILE



SUBHASH KAPOOR

After completing his MA in Hindi literature, Subhash Kapoor started his career as a political journalist in Delhi in the 1990s. Kapoor made his feature film directorial debut with Say Salaam India in 2007. In 2010, he directed his second venture, a satire Phas Gaye Re Obama, which received critical acclaim as well as commercial success.

हिंदी साहित्य में एमए करने के बाद सुभाष कपूर ने अपने जीवन की शुरूआत राजनीतिक पत्रकारिता में 1990 के दशक में दिल्ली से की। कपुर ने 2007 में 'से सलाम इंडिया' निर्वेशक के बतौर किया। उन्होंने अपनी वूसरी फ़िल्म 2010 में 'कंस गए रे ओबामा' बनाई जिसे काफी प्रशंसा और कमर्शियल कामयाबी भी



FOX STAR STUDIOS

Fox Star Studios is an India-based movie production and distribution company, a joint venture between Twentieth Century Fox, one of the world's largest producers and distributors of motion pictures and STAR, India's media and entertainment company. It produces Hindi and regional-language films through acquisitions, co-productions and in-house productions for worldwide distribution.

फॉक्स स्टार स्टुडियो भारत की प्रोडक्शन और वितरण कंपनी है। यह विश्व के बड़े प्रोडक्शन हाउस ट्वेन्टियध सेंचुरी फॉक्स और भारत की प्रमुख मीडिया एवं मनोरंजन कंपनी के बीच का संयुक्त उपक्रम है। यह अधिग्रहण, को-प्रोडक्शन और इन हाउस प्रोडवशन के तहत फिल्में बनाता है जिनका विश्वभर में वितरण किया जाता है।

BEST KANNADA FILM सर्वश्रेष्ठ कन्नड फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

DECEMBER 1 | दिसंबर 1





Citation

'A hard-hitting tale of a poor family in a village that gets enmeshed with the crooked ways of politicians.'

'एक गांव के गरीब परिवार की इदय विदारक कहानी जो कृटिल सियासतदानों के चंगूल में फंस गया है।'

DECEMBER 1 | दिसंबर 1

Year 2013 / Digital / Colour/ 98 min

Direction-Screenplay: P. Sheshadri Production: Basant Productions Cinematography: Ashok V. Raman Editing: Kemparaju B.S. Music: Manohar V. Cast: Nivedita, Santosh Uppina, Shanthabhai Joshi, Master Manjunath Matapathi, H.G. Dattatreya

SYNOPSIS

to the poor family specially selected to host his dinner and overnight stay in its humble abode. The extra attention bestowed on the family, in preparation for this visit, gives it a feeling of elevated status and brighter future. The visit is a great success with wide media-coverage. But the family itself is neglected, faces embarrassments and gets a raw deal driving it to despair.

The chief minister's official visit is a great event, particularly मुख्यमंत्री की आधिकारिक यात्रा एक बड़ी घटना होती है और विशेष रूप से उस समय जब गरीब परिवार को खास तौर से रात्रिभोज के लिए बलाया जाता है और रातभर उन्हें वहां ठहराया जाता है। उस परिवार को विशेष तवज्जो दी जाती है और उसका सम्मान बढ़ा हुआ माना जाता है। मीडिया की जोरदार कवरेज के साथ यह दौरा बेहद कामयाब भी होता है। लेकिन चुना गया गरीब परिवार हाशिये पर धकेल दिया जाता है और उसके साथ बदसलुकी भी होती है।

PROFILE



P. SHESHADRI

P. Sheshadri entered cinema as a screenplay and dialogue writer in 1990 after a short stint in journalism. His maiden directorial feature Munnudi (2000) brought him great acclaim and was also hailed as a landmark film. He followed it up with Atithi (2001), Beru (2004), Thutturi (2005), Vimukthi (2008), Bettada Jeeva (2010) and Bharath Stores (2012), all of which won the National Award.

पी शेषादि ने 1990 में एक पटकथा और संवाद लेखक के तीर पर सिनेमा की दुनिया में कदम रखा। इससे पहले वह कुछ समय के लिए पत्रकारिता भी कर चुके थे। उनकी पहली निर्देशित फीचर फिल्म मुन्नुखी (2000) से उन्हें बहुत प्रशंसा मिली और इस फिल्म को एक ऐतिहासिक फिल्म का दर्जा भी दिया जाता है। इसके बाद उन्होंने 2001 में आतिथि, 2004 में बेरु, 2005 में तुरतुरी, 2008 में विमुक्ति, 2010 में बेत्तादा जीवी और 2012 में भारत स्टोर्स पेश की और इन सभी फ़िल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।



BASANT PRODUCTIONS

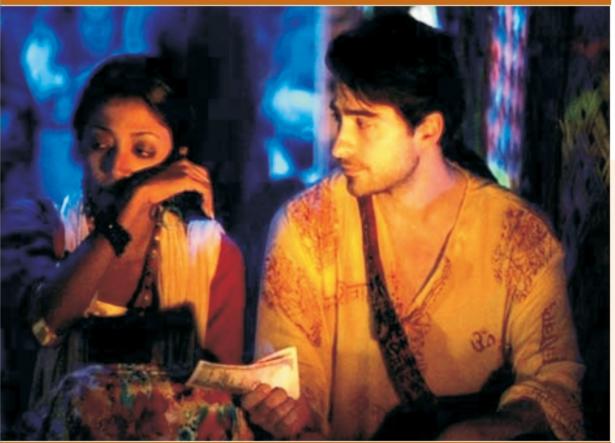
Basant Productions is represented by Basantkumar Patil, an eminent film-maker and a businessman who has won multiple international, national and state awards. He was the president of the Kannada Film Chamber of Commerce (2010-11) following his four-year term as the president of the Karnataka Film Producers Association. The company produced many National Award-winning films.

बसंत प्रोडक्शन व्यवसायी और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके प्रख्यात फिल्म निर्माता बसंत कुमार पाटिल की प्रतिनिधि कंपनी है। वह कन्नड फिल्म चैम्बर ऑफ कॉमर्स (2010-11) के अध्यक्ष रहे और इसके बाद चार साल तक वह कर्नाटक फिल्म प्रोडयुसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे। कंपनी ने कई राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फ़िल्मों का निर्माण किया है।

BEST KONKANI FILM सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

BAGA BEACH | बागा बीच





Citation

Based on a true story, an honest and simple revelation of darkly-held secrets on the beaches of Goa.

'गोवा के समुद्री तटों के अंधे रहस्यों को साधारण एवं प्रामाणिक ढंग से उजागर करने वाली एक सच्ची कहानी पर आधारित फिल्म (

BAGA BEACH। बागा बीच

Year 2013 / Digital / Colour / 103 min

Direction: Laxmikant Shetgaonkar Production: Sharvani Productions Cinematography: Arup Mandal Editing: Sankalp Meshram Cast: Paoli Dam, Jean Denis Romer, Cedric Cirrateau and Sadia Siddiqui

SYNOPSIS

massage boy ... And many others whose loves are enmeshed with the life of the most popular beach in Goa, Baga Beach. The film explores the struggles of people living on the coastal belt of Goa, giving an insight into the complex world of growing tourism industry.

Sobha, a bead seller; Devappa, a motorboat rider; शोभा बीड बेचने वाली लड़की है, देवप्पा एक मोटरबोट राइडर और Jerroviar, a lifeguard; Brendan, a school boy; Vishu, a जेरोवियर एक लाइफ्गार्ड, ब्रेंडन एक स्कूली लंडका और विष्ण एक मसाज ब्वाय । कई और भी हैं जिनका जीवन गोवा के प्रसिद्ध बागा बीच के आसपास रमा है। फिल्म गोवा के तटीय जीवन के संघर्षों का बयान करती है और बढ़ते हुए पर्यटन उद्योग की जटिलताओं में झांकती है।

PROFILE



LAXMIKANT SHETGAONKAR

Born in Salcete, Goa, Laxmikant Shetgaonkar studied Theatre Arts at Kala Academy, Goa. He took up a job at India's prestigious theater training school, National School of Drama. He shifted his base to Mumbai and gathered knowledge of cinema by working as an assistant director and screenplay writer.

सालसेट, गोवा में जन्मे लदमीकांत शेटमावंकर ने गोवा कला अकादमी के धियेटर आदर्स में अध्ययन किया। उन्होंने देश के प्रसिद्ध थियेटर स्कूल नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में नौकरी की। इसके बाद वह मुम्बई आ गए और सहायक निर्देशक एवं पटकथा लेखक के तौर पर सिनेमा का अनुभव प्राप्त किया।



SHARVANI PRODUCTIONS

Sharvani Productions headed by Pramod D. Salgaocar has produced a Marathi film Mareparyant Fashi on the subject of human rights and capital punishment. Pramod D. Salgaocar has always been interested in drama, cinema, debating.

प्रमोद डी सालगावकर द्वारा संचालित शरवनी प्रोडक्शन ने मराठी फिल्म मरेपर्यन्त फाशी बनाई जो मानवाधिकारों और मृत्युदंड पर आधारित फिल्म है। प्रमोद जी सालगावकर हमेशा ठामा. सिनेमा. परिचर्चा, आदि में रुचि ली।

BEST MALAYALAM FILM सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

NORTH 24 KAADHAM। नॉर्थ 24 कादम





Citation

'A train journey that transforms an eccentric character by taking him through trying situations and making him more compassionate. 'एक ट्रेन यात्रा जो एक व्यक्ति को कठिनाइयों से रूबरू कराते हुए उसे दयालु बना देती है।'

NORTH 24 KAADHAM। नॉर्थ 24 कादम

Year 2013 / Digital / Colour / 126 min

Direction-Screenplay: Anil Radhakrishnan Menon Production: Surya Cine Arts Cinematography: Jayesh Nair Editing: Dileep Dennies Music: Govind Menon Cast: Fahadh Faasil, Nedumudi Venu, Swati Reddy

SYNOPSIS

with an old man and a young female NGO worker he मिलता है और उसे अहसास होता है कि अपने में ही खोए रहने से आगे भी chances to meet, he comes to terms with his obsessions and realizes that there is more to life than his paranoid notions.

Hari, a young IT professional, has an Obsessive हिर एक युवा है और वह बहुत अंतर्मुखी है। संयोग से वह एक सफर के Compulsive Disorder (OCD). On an accidental road trip एक दुनिया है।

PROFILE



ANIL RADHAKRISHNAN MENON

Anil Radhakrishnan Menon started in the animation industry, then went on to make several well-known ad campaigns. From the advertising industry he has stepped into the Malayalam film industry. This is his maiden film.

अनिल राधाकृष्णन मेनन ने एनीमेशन उद्योग से शुरूआत की और इसके बाद कई मानी हुई विज्ञापन कंपनियों के काम किया। विज्ञापन की दुनिया के बाद उन्होंने मलयालम फिल्म उद्योग में प्रवेश किया। यह उनकी पहली फिल्म है।

Surya Cine Arts

SURYA CINE ARTS

Surya Cine Arts is a media house based in Calicut, founded in 1992 by Mukesh R. Mehta. The company has distributed more than 150 films in Malayalam, Tamil, Hindi and English. It started producing Malayalam films in 1995.

सूर्या सिने आर्ट्स कालीकट रिथत मीडिया डाउस डै जिसकी रथापना मुकेश आर मेहता ने 1992 में की। कंपनी ने मलवालम, तमिल, हिंदी और अंग्रेजी में 150 से ज्यादा फिल्में वितरित की हैं। इसने 1995 में मलयालम फिल्मों के वितरण से शुरूआत की थी।

BEST MARATHI FILM सर्वश्रेष्ठ मराठी फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

AAJCHA DIWAS MAJHA। आजचा दिवस माझा





Citation

'A parody on musical chair in politics and a critique of the hierarchical system in bureaucracy, the film takes an unusual turn when the political boss has a

'राजनीति की कुर्सी दौड और नौकरशाही की कठिन सीढ़ियों पर कटाक्ष करती फिल्म उस समय असामान्य मोड लेती है जब अचानक नेता का हृदय परिवर्तन हो जाता है।"

AAJCHA DIWAS MAJHA। आजचा दिवस माझा

Year 2013 / Digital / Colour / 128 min

Direction: Chandrakant Kulkarni Production: White Swan Productions Screenplay: Ajit Dalvi and Prashant Dalvi Cinematography: Rajen Kothari Music: Ashok Patki and Mangesh Dhakde Cast: Sachin Khedekar, Ashwini Bhave, Hrishikesh Joshi, Mahesh Manirekar

SYNOPSIS

beleaguered elderly singer who is yet to receive the government allotted flat applied for eight long years ago!

This is an entertaining and touching journey of a chief यह एक मुख्यमंत्री की मर्मरपर्शी यात्रा है जो एक बढ़े गायक की मदद के minister who works efficiently and actively to help a लिए कारगर और सक्रिय ढंग से कार्य करते हैं। गायक को आठ साल पहले आवंटित हुआ फ्लैट अभी तक नहीं मिला है।

PROFILE



CHANDRAKANT KULKARNI

Born into a farmer's family in a small town in Marathwada, Chandrakant Kulkarni has in the past 25 years created a phenomenal record of directing more than 50 thoughtprovoking plays. He is a recipient of the prestigious 'Mahindra Nataraj Puraskar', 'Mahanagar Puraskar', 'Maitrey Puraskar', 'Marathwada Sahiyta Puraskar' and 'Maharashtra Rajya Sanskrutik Puraskar' for his remarkable contribution to the theatre and Marathi cinema.

मराठवाडा के एक छोटे से कस्बे में जन्मे चंद्रकात कुलकर्णी ने मुम्बई में अपने 25 साल के प्रवास के दौरान 50 से अधिक नाटकों का निर्देशन कर एक तरह का अनुठा रिकार्ड बनाया है। उन्हें मराठी थियेटर और सिनेमा में योगदान के लिए प्रतिष्ठित 'महिंद्रा नटराज पुरस्कार' 'महानगर पुरस्कार' मैत्रेयी पुरस्कार, मराठवाड़ा साहित्य पुरस्कार और महराष्ट्र राज्य संस्कृति पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

WHITE SWAN PRODUCTIONS

WHITE SWAN PRODUCTIONS

White Swan Productions is a new wing of Everest Entertainment Pvt. Ltd., a leading fully integrated Media and Entertainment Company which produces and commissions Marathi films. Helmed by Puja Chhabria, it was launched to focus on a new genre of films that are on the cutting edge and socially

व्हाइट स्वान प्रोडक्शन एवरेस्ट एंटरटेन्मेंट प्रा. लि. की एक विंग है। एवरेस्ट पुरी तरह एकीकृत मीडिया एवं मनोरंजन कंपनी है जो मराठी फिल्में बनाती है। पूजा छाबड़िया की अगुवाई में इसकी स्थापना अत्वाधुनिक एवं सामजिक रूप से लार्थक सिनेमा निर्माण के लिए की गई।

BEST TAMIL FILM सर्वश्रेष्ठ तमिल फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

THANGA MEENGAL । तंग मींगल





Citation

'An emotional tale of a man who separates from his wife and beloved eightyear-old daughter to look for a job in a distant city. The consequences that follow, finally lead to an emotional and heartwarming reunion."

'एक व्यक्ति की भावनात्मक कहानी जो एक सुदूर शहर में नौकरी पर जाने के कारण अपनी पत्नी और आठ साल की प्रिय बेटी से जुदा हो जाता है। बाद के हालात में आखिरकार पूरे परिवार का भावनात्मक मिलन होता है।"

THANGA MEENGAL। तंग मींगल

Year 2013 / 35 mm / Colour / 140 min

Direction: Ram Production: JSK Film Corporation Screenplay: Ram & S.G. Ram Cinematography: Arbindhu Spara Editing: Sreekar Prasad Music: Y.S. Raja Cast: Baby Sadhana, Baby Sadhna, Shelly Kishore, Lizzie

SYNOPSIS

row. This is my story - about my dear dad, the cuckoo in our कहानी मेरे पिता, हमारे पेड में रहने वाली कोयल, हमारे घर के पास से tree, the train that passes by our house, my mountains, my ponds, my friend Nithyashree and goldfish.' Thanga Meengal narrates the relationship between a dad and daughter and how the educational system of today makes a turn in their normal life.

'l am Chellamma. I am in grade II for the second year in a ंगेरा नाम चेल्लमा है। मैं लगातार दूसरे साल भी दूसरी कक्षा में ही हूं। मेरी गुजरने वाली रेलगाड़ी, मेरे पहाड़, मेरे तालाब, मेरे दोस्त नित्यश्री और गोल्डफिश परिचय है। तंग मींगल एक पिता और पुत्री के संबंधों की कहानी है कि किस तरह आधुनिक शिक्षा तंत्र उनके सामान्य जीवन में मोड लेकर आता है।

PROFILE



RAM

Ram is an Indian film director and actor who works mainly in Tamil cinema. After a long association with ace directors like Balu Mahendra and Raikumar Santoshi he made his directorial debut with the critically acclaimed Kattradhu Thamizh in 2007.

राम भारतीय फ़िल्म निर्देशक एवं अभिनेता हैं जो मुख्य रूप से तमिल सिनेमा के लिए काम करते हैं। बालु महेंद्र और राजकुमार संतोषी जैसे दिग्गज निर्देशकों के साथ काम करने के बाद उन्होंने 2007 में अपनी पहली फ़िल्म *कत्राणू तमिझ* का निर्देशन किया।



JSK FILM CORPORATION

JSK Film Corporation, headed by J. Satish Kumar is a production and distribution company based out of Chennai. He played a crucial role in bringing to limelight many Tamil films which gained critical reception and commercial acceptance in

जोएसके फिल्म कार्पोरेशन की अगुवाई जे सतीश कुमार कर रहे हैं। यह चेन्नई की प्रोडक्शन एवं वितरण कंपनी है। उन्होंने अनेक तमिल फिल्मों को बॉक्स ऑफिस पर ख्याति दिलाने में अहम भूमिका निभाई ।

BEST TELUGU FILM सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

NAA BANGAARU TALLI । ना बंगारू तल्ली





Citation

The film is a searing indictment of the pervasive and ruthless world of the sex

'यह फिल्म देह व्यापार की क़ुरता एवं व्यापकता पर गंभीर कटाक्ष है।'

NAA BANGAARU TALLI। ना बंगारू तल्ली

Year 2013 / Digital / Colour / 117 min

Direction: Rajesh Touchriver Production: Sun Touch Productions Screenplay: Rajesh Touchriver Cinematography: Ramathulasi Editing: Donmax Music: Shantanu Moitra, Sharreth Cast: Sidhique, Anjali Patil, Lakshmi Menon, Nina Karup

SYNOPSIS

explosion of unbridled emotions, the film explores the कोमल अहसास से बनी फ़िल्म है। यह फ़िल्म देह व्यापार के दुष्परिणामों consequences of sex trafficking which test the vulnerability को तलाशती है और मानवीय संबंधों की संवेदनशीलता को सामने लाती of trust in human relations. Based on true stories, the film is है। सच्ची कहानियों पर आधारित यह फिल्म पीडितों और पीडकों दोनों के a first of its kind projecting the human dimension of both मानवीय रूप को सामने लाती है। the abused and the abuser.

Provocative, shocking and surprisingly tender amidst an यह भावोत्त्तेजक, दहलाने वाली और भावनाओं के विस्फोट के बावजूद

PROFILE



RAJESH TOUCHRIVER

Rajesh Touchriver took his bachelor's degree in design and direction from the School of Drama in Trissur, Kerala, and directed more than 30 plays in Malayalam, English and Telugu. He worked with the National School of Drama, New Delhi as a designer in 1995. His debut film In the Name of Buddha (2002) was premiered at the Oslo International Film Festival and won critical acclaim.

राजेश टचरिवर ने रकुल ऑफ ड्रामा, त्रिशुर, केरल से निर्देशन एवं डिजाइन में स्नातक उपाधि प्राप्त की और मलयालम, अंग्रेजी एवं तेलुगू में 30 से अधिक नाटकों का निर्देशन किया है। उन्होंने खिजाइनर के तौर पर 1995 में नई दिल्ली के नेशनल स्कूल ऑफ द्वामा में भी काम किया। उनकी पहली फिल्म इन द नेम ऑफ़ बुद्ध (2002) का ओस्लो इंटरनेशनल फ़िल्म फेस्टिवल में प्रीमियर हुआ था और इसने प्रशंसा प्राप्त की थी।



SUN TOUCH PRODUCTIONS

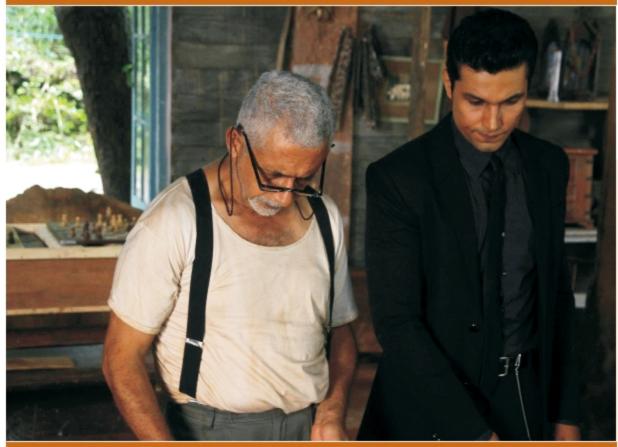
Sun Touch Productions has been founded by Sunitha Krishnan, Founder General Secretary of Prajwala, She is an eminent antitrafficking activist internationally known for her fight against girl child trafficking for the purposes of commercial sexual exploitation.

सन टच प्रोडक्शन की स्थापना प्रज्जवला की संस्थापक महासचिव सुनीता कृष्णन ने की है। वह देह व्यापार के खिलाफ अभियान में दुनिया में नाम कमा चुकी हैं और वह युवतियों के यौन शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज मुखर करती

BEST ENGLISH FILM सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

THE COFFIN MAKER। द कॉफिन मेकर





Citation

Tale of a coffin maker and his wife living in a small Goan village. The film gets very interesting, intriguing and philosophical as death as a character enters

'एक ताबत बनाने वाले व्यक्ति और उसकी पत्नी की दास्तान है जो गोवा के एक छोटे से गांव में रहता है। यह फिल्म उस समय बेहद रोचक, रहस्यपूर्ण और दार्शनिक मोड लेती है जब मृत्यु एक किरदार के रूप में उनके जीवन में प्रवेश करती है।

THE COFFIN MAKER। द कॉफ़िन मेकर

Year 2013 / Digital / Colour / 123 min

Direction: Veena Bakshi Production: Shree Narayan Studios Cinematography: Mahesh Aney Editing: Aarif Shaikh Music: Bappi Lahiri, Tutul Cast: Naseeruddin Shah, Ratna Pathak, Benjamin Gilani, Randeep Hooda

SYNOPSIS

when difficult circumstances render him jobless and हताश है। लेकिन एक दिन मीत उनकी जिंदगी को ललकारती है। penniless. Cynical and disillusioned Anton exists. Till one day Death challenges his life.

Based in a small village in Goa, The Coffin Maker is the व कॉफिन मेकर गोवा के एक छोटे से गांव में एंतोन गोम्स की कहानी है। story of Anton Gomes who comes from a family of वह बढ़ई परिवार से हैं जब उनकी नौकरी छूट जाती है तो उन्हें ताबुत accomplished carpenters and takes up coffin making वनाने का प्रंथा करने पर मजबूर होना पड़ता है। एंतीन जीवन से बेहद

PROFILE



VEENA BAKSHI

Veena Bakshi began her career working with renowned ad filmmaker Prahlad Kakkar, She joined Dilip Ghosh and moved from production to direction. In 1990, she started her own ad film production house Searchlight Productions. Veena shut down the ad film shop in 2003 and turned towards feature films.

वीणा बख्शी ने अपना जीवन प्रख्यात फिल्म निर्माता प्रहलाद कवकड के साथ शुरू किया। फिर वह दिलीप घोष के साथ प्रोडक्शन से निर्देशन में आ गई। उन्होंने 1990 में अपना प्रोडक्शन हाउस सर्चलाइट प्रोडक्शन शुरू किया। वीणा ने 2003 में विज्ञापन फिल्में बंद कीं और फीचर फिल्मों के लिए कार्य करने लगीं।



SHREE NARAYAN STUDIOS

Bharat Vijayan started his business in the early 1980s in Pune as an automobile dealer. From there he found an interest and moved into land development. He set up Shree Narayan Studios in 2009 in Kolkata. Today, Shree Narayan Studios boasts of being the best equipped studio in every way in the eastern region in India.

भारत विजयन ने 1980 के दशक में पुणे से एक ऑटोमोबाइल डीलर के तौर पर अपना व्यवसाय शुरू किया। इसके बाद वह भूमि विकास के क्षेत्र में आ गए। फिर उन्होंने कोलकाता में 2009 में श्री नारायण स्टुडियो खोला। आज श्री **नारायण** रटुडियो पूर्वी भारत के सबसे सुसज्जित स्टुडियो में से एक हैं।

Best Khasi Film सर्वश्रेष्ठ खासी फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

RI । आरआई





Citation

'A complex tale of insurgency and reconciliation set in the turbulent state of

'उथलपुथल वाले पूर्वोत्तर राज्य मेघालय में विद्रोही गतिविधि और सुलह की प्रक्रिया की जटिल दास्तान पेश करती फिल्म [

RI । आरआई

Year 2013 / Digital / Colour / 117 min

Direction: Pradip Kurbah Production: Kurbah Films Screenplay: Paulami Dutta Gupta Editing: Lionel Fernandes Music: Anurog Saikia Cast: Merlvin Mukhim, Elgiva Shullai, Albert Mawrie, Anvil Laloo

SYNOPSIS

the protagonist, goes through a maze of emotions and questions, which forces him to take a life-changing decision. Like many youths of the state, Manbha joins a terror outfit. He sees the hatred, anger, squalor and is left disillusioned. Manbha is injured and manages to hide in a house. The lady of the house Emika is a single mother and is a victim of terror herself. What starts is a soul-searching evening for Manbha.

Stuck between his ideology and his conscience, Manbha, विचारधारा और अंतःचेतना के हुंह में उलझा किरदार मांगा भावनाओं और सवालों की भूलभूलैया से होते हुए ऐसे निर्णय लेने के लिए बाध्य होता है जिससे उसका जीवन ही बदल जाता है। राज्य के अन्य अनेक युवाओं की तरह मांमा एक आतंकी गुट में शामिल हो जाता है। वहां नफरत, आक्रोश और रंजिश की दुनिया देखता है जिससे उसका मोहमंग होता है। मांमा घायल है और वह खुद को एक घर में छुपा लेता है। घर की मालकिन एमिका एक अकेली महिला है और आतंक का शिकार है। वहां से मांभा को आत्मा में झांकने का अवसर मिलता है।

PROFILE



PRADIP KURBAH

Pradip Kurbah has been working in the Khasi film industry since the age of 17. He has so far directed 3 Khasi films and produced another 3. He has also directed over 60 music videos in various languages and has composed the music for 7 albums in Khasi.

प्रदीप कुर्बा 17 साल की उम्र से खासी फ़िल्मों के लिए काम करते आ रहे हैं। उन्होंने अभी तक 3 खासी फिल्में निर्देशित की और तीन अन्य का निर्माण किया। उन्होंने विभिन्न भाषाओं के 60 से अधिक वीजियों का निर्देशन किया और खासी में 7 संगीत एल्बम कम्पोज कीं।



KURBAH FILMS

Kurbah Films is a film production house started in 2000. It has so far produced 4 films in Khasi.

कुर्वी फिल्म्स एक फिल्म प्रोडक्शन हाउस है जिसकी ख्यापना सन 2000 में हुई । इसने अभी तक खासी में चार फिल्में बनाई हैं ।

Best Sherdukpen Film सर्वश्रेष्ठ शेर्दुकपेन फ़िल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

CROSSING BRIDGES। क्रॉसिंग ब्रिजेज





Citation

'A well-crafted film that tells the tale of a young man who comes back from Mumbai to his remote village in Arunachal Pradesh to find his roots.'

'एक युवा जो मुम्बई से अरूणाचल प्रदेश के अपने दूर दराज के गांव में अपनी जड़ें खोजने के लिए वापस आता है, पर एक शिल्पपूर्ण फिल्म।'

CROSSING BRIDGES। क्रॉसिंग ब्रिजेज़

Year 2013 / Digital / Colour / 102 min

Direction-Screenplay: Sange Darjee Thongdok Production: Easel Cinematography: Pooja S. Gupte Editing: Sanglap Bhowmik Music: Anjo John Cast: Phuntsu Khrime, Anshu Jamsenpa

SYNOPSIS

his village in the remote north-east region of India after साल बाद पूर्वोत्तर के अपने गांव में वापस आने को मजबूर हुआ है। वह eight years, when he loses his job in the city. As he stays in शहर से नई नीकरी का संदेशा आने का इंतजार करते हुए गांव में रहता है the village waiting for news of any new job in the city to go और इस बीच वह अपनी संस्कृति और अपने लोगों की आत्मीयता का back to, he begins to experience the life and culture of his native place and his people. He gradually begins है। rediscovering his roots.

Tashi, a man in his early thirties, is forced to come back to 📉 ताशी लगभग तीस साल का व्यक्ति है जो अपनी नौकरी गंवांने के आठ अहसास करने लगता है। वह धीरे धीरे अपनी जड़ों की ओर लीटने लगता

PROFILE



SANGE DORJEE THONGOOK

Sange Dorjee Thongdok belongs to the Sherdukpen tribe of Arunachal Pradesh. He is the first person of his state to pass out of a film school, SRFTI. Crossing Bridges is his first feature film. It is also the first feature film in Sherdukpen, a dialect of West Kameng district of Arunachal Pradesh, and the first feature film to be shot by a native of the state.

सांगे दोरजी थॉन्गदॉक अरुणावल प्रदेश की शेर्दुकपेन जनजाति के हैं। अपने राज्य के फिल्म स्कल एसआरएफटीआई से पास होने वाले पडले व्यक्ति हैं। क्रॉसिंग ब्रिजेज उनकी पहली फीचर फिल्म है। अरुणाचल प्रदेश के वेस्ट कामेंग की शेर्दुकपेन बोली की यह पहली फीचर फ़िल्म है और किसी अरुणाचली द्वारा अपने राज्य में शुट की गई यह पहली फिल्म है।



EASEL

Crossing Bridges is the third feature film under Easel. Tenzing Norbu Thongdok financed the film under Easel. He is a native of Arunachal Pradesh and actively encourages young talent from

क्रॉसिंग ब्रिजेज ईंजल के बैनर तले तीसरी फिल्म है। तेंजिंग नोर्ब थॉन्गदॉक ने इसे वित्तीय सहायता प्रदान की है। वह अरूणाचली हैं और देश की यवा प्रतिमाओं को प्रोत्साहित करते रहे हैं।

SPECIAL JURY AWARD (SHARED) निर्णायक मंडल का विशेष प्रस्कार (साझा) RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 2,00,000/-

YELLOW । येलो





Citation

'An unbelievably inspiring film about a specially gifted girl who overcomes all the odds to make an international mark,

'फिल्म मानसिक रूप से अविकसित लेकिन आत्मविश्वास एवं अदम्य साहस से परिपूर्ण ऐसी लड़की की अविश्वसनीय और प्रेरणादायक कहानी है जो सभी विषमताओं से जुड़ाते हुए अंतर्राष्ट्रीय पटल पर अपनी छाप छोडती है।'

YELLOW । येलो

Year 2013 / Marathi / Digital / Colour / 130 min

Direction-Cinematography: Mahesh Limaye Production: Viva In-En and Mumbai Film Company Screenplay: Ambar Hadap, Ganesh Pandit & Mahesh Limaye Editing: Jayant Jathar Cast: Mrinal Kulkarni, Upendra Limaye, Hrishikesh Joshi, Gauri Gadgil

SYNOPSIS

accept the fact that his daughter is not like others and रवीकार नहीं कर पाते कि उनकी बेटी दूसरों जैसी नहीं है और वह उसका disowns her. Gauri's mom, Mughdha, determined to raise her daughter and make sure she gets dignity, relocates to her brother Shridhar's place. Shridhar, a god-fearing simpleton, is the source of positive energy in Mughdha and Gauri's life.

Gauri is born with Down's Syndrome. Her dad fails to गौरी डाउन सिन्ड्रॉम के साथ पैदा हुई है। उसके पिता इस बात को परित्याग कर देते हैं। गीरी की मां मग्धा अपनी बच्ची लालन-पालन करने का प्रण लिए हुए है ओर यह सुनिश्चित करती है कि मर्यादापूर्वक जिए। वह उसे अपने माई श्रीधर के घर ले जाती है। श्रीधर ईश्वरीय सत्ता में विश्वास रखता है और वह मुखा एवं गौरी के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है।

PROFILE



MAHESH LIMAYE

Mahesh Limyae graduated in fine arts from the JJ School of Arts, Mumbai. He has shot for a number of commercials. His work as cinematographer in cinema includes Corporate, Fashion, Traffic Signal, Heroine and Dabangg, among others.

महेश लिमये ने जे जे स्कूल ऑफ आर्ट्स, मुम्बई से फाइन आर्ट्स में स्नातक किया। उन्होंने अनेक कमशिंयल्स बनाए हैं। उनके छायांकनों में कार्योरेट, फीशन, टैफिक सिगनल, हीरोइन और दबंग जैसी फिल्में शामिल हैं।



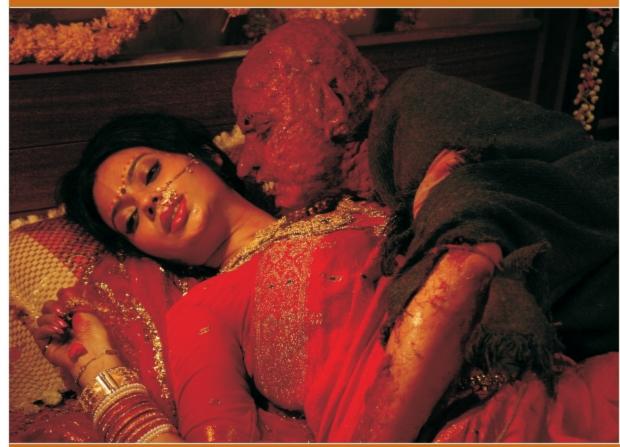
VIVA IN-EN & MUMBAI FILM COMPANY

Viva In-En, a production house founded by Uttung Hitendra Thakur, believes in making films which are entertaining and yet different from the rest. To produce innovative, meaningful entertainment is Viva's aim. Mumbai Film Company is film production house spearheaded by the young and dynamic actor Riteish Deshmukh.

विवा इन-एन उत्तुंग डितेंद्र ठाकुर द्वारा स्थापित प्रोडक्शन हाउस है। वह ऐसी फिल्में बनाने में यकीन रखते हैं जो मनोरंजक होते हुए भी दूसरों से मिन्न हों। सार्थक सिनेमा का निर्माण करना विवा का मकसद है। मुम्बई फिल्म कम्पनी युवा अभिनेता रितेश देशमुख द्वारा संचालित प्रोडक्शन हाउस है।

SPECIAL JURY AWARD (SHARED) निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार (साझा) RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 2,00,000/-

MISS LOVELY । मिस लवली





Citation

'Set in the criminal depths of Mumbai's C-grade film industry, bathed in sleaze and sex, the plot explores intense and mutually destructive relationships. A densely layered narrative, period costumes and production design convey a

'फिल्म अप्रतीलता, सेक्स, अपराध और षडयंत्र की दलदल में आकंठ ड्वे मुम्बई के फिल्म उद्योग की पृष्ठभूमि को उजागर करती है । इसके गहन वृतांत, समकालीन वेशभूषा और प्रोडक्शन विजाइन पल्प स्टाइल फिल्म की खासियत है।"

MISS LOVELY । मिस लवली

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 113 min

Direction: Ashim Ahluwalia Production: Future East Film Pvt Ltd Screenplay: Ashim Ahluwalia, Uttam Sirur Cinematography: Mohanan Editing: Ashim Ahluwalia, Paresh Kamdar Cast: Nawazuddin Siddiqui, Anil George, Niharika Singh

SYNOPSIS

films for Mumbai's booming underground market. Delving deep into the underbelly of India's film industry, where back-alley producers churn out everything from pulpy horror movies to soft-core porn, Miss Lovely is a wild ride that takes us back to the Mumbai of the 1980s with lurid detail and intoxicating style.

Sonu and Vicky are prolific producers of trashy, C-grade सानू और विकी फिल्मों के निर्माता हैं जो मुम्बई की सी ग्रेंड फिल्मों के लिए कुख्यात है। भारतीय फिल्म उद्योग की स्याह तस्वीर पर प्रकाश डालती यह फिल्म बेहुदा उरावनी फिल्मों से लेकर अश्लील फिल्मों तक हमें मुम्बई के अस्सी के दशक की बारीकियों और जटिलताओं की ओर ले जाती है।

PROFILE



ASHIM AHLUWALIA

Ashim Ahluwalia studied film at Bard College in New York. His first fiction feature, Miss Lovely, had its world premiere at the Cannes Film Festival (Un Certain Regard) in May 2012 and has been screened at various festivals worldwide. In August 2010, Ahluwalia was named 'one of the best emerging film directors

आशिम अहलूवालिया ने न्यूयॉर्क के वर्ड कॉलेज से फिल्म में अध्ययन किया। चनकी पहली फीचर फिल्म *मिस लवली* का वर्ल्ड प्रीमियर कान्स फिल्म उत्सव में मई 2012 में हुआ और इसे विश्वभर में अनेक जगहों पर दिखाया जा चुका है। अगस्त 2010 में अहलुवालिया को आज के समय के सर्वश्रेष्ठ उदीयमान निर्देशकों के रूप में पहचान मिली थी।



FUTURE EAST FILM PVT. LTD.

Future East was established to develop new form of independent film in India. The company's first feature-length project, John & Jane, had a world premiere at Toronto Film Festival. It has produced award-winning commercials for clients like Loreal, Chevrolet, Tayota, Coca Cola, Visa, Sony, LG, Wrigley's and

पयुचर ईस्ट की स्थापना भारत में नए स्वरूप का सिनेमा विकसित करने के लिए की गई। कंपनी की पहली फीचर परियोजना जॉन एंड जेन थी और उसका प्रीमियर टोरंटो फिल्म फेस्टिवल में किया गया। कंपनी ने कई पुरस्कार प्राप्त कमर्शियल लेरिल, शेवरले, टोयोटा, कोका कोला, वीसा, सोनी, एलजी, रिगलेज आदि के लिए बनाए हैं।

BEST DIRECTION / सर्वश्रेष्ठ निर्देशन HANSAL MEHTA / हंसल मेहता SWARNA KAMAL / स्वर्ण कमल ₹ 2,50,000/-

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 129 min

Direction: Hansal Mehta Production: UTV Motion Pictures Screenplay: Sameer Gautam Singh Cinematography: Anuj Rakesh Dhawan Editing: Apurva Asrani Music: Karan Kulkami Cast: Raj Kumar, Baljinder Kaur, Kay Kay Menon, Tigmanshu Dhulia.

BEST ACTOR (SHARED) / सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (साझा) RAJ KUMAR / राज कुमार

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 129 min

Direction: Hansal Mehta Production: UTV Motion Pictures Screenplay: Sameer Gautam Singh Cinematography: Anuj Rakesh Dhawan Editing: Apurva Asrani Music: Karan Kulkarni Cast: Raj Kumar, Baljinder Kaur, Kay Kay Menon, Tigmanshu Dhulia

SHAHID । शाहिद





HANSAL MEHTA

Hansal Mehta made his debut with Jayate (1998). This 'A remarkably handled film that traces the true story of was followed by the dark, tragic and funny Dil Pe Mat Le Yaar (2000). Then came a breezy gangster film called Chhal (2001). After these, he went on an extended sabbatical to explore social work, rural life and new stories. He has also dabbled in television with India's

longest-running food show, Khana Khazana.

हंसल मेहता ने 1998 में *जयते* के साथ फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में पदार्पण किया था। इसके बाद उन्होंने 2000 में एक गूढ़ और मजेदार फिल्म *दिल पे मत ले ग्रार* का निर्देशन किया। इसके बाद उन्होंने 2001 में गैंगस्टर्स पर आधारित हरूकी-फुल्की फिल्म छल निर्देशित की। इसके बाद उन्होंने फिल्मों के निर्देशन से लंबी छुट्टी लेकर सामाजिक कार्य, ग्रामीण जीवन और नई कहानियां तलाशनी शुरू की। उन्होंने देश में सबसे लंबे चलने वाले फुड शो खाना खज़ाना के साथ टेलीविजन में भी हाथ आजमाँवा।

Synopsis of the film at page no. 124

Citation

a slain human right activist and a lawyer Shahid Azmi in the backdrop of communal violence unleashed in Mumbai. The story of an impoverished Muslim struggling to come to terms with injustice, inequality and rise above his circumstances. It is an inspiring testament to the human spirit.

'मुम्बई में हुई सांप्रदायिक हिंसा की पृष्टभूमि में एक मानवाधिकार कार्यकर्ता और वकील शाहिद आजमी की हत्या की सच्ची कहानी पर आधारित इस फिल्म में एक गरीब मुसलमान नाइंसाफी, असामानता से लढते हुए परिस्थितियों से ऊपर उठना चाहता है। उसका यह प्रयास मानवीय जोश का प्रेरणादायी वकाव्य है।

Raj Kumar is among India's rising stars. He graduated in arts from Delhi University. He is an acting graduate from Pune's FTII. His debut film was Dibakar Baneriee's Love Sex aur Dhokha in 2010. Since then, Raj Kumar has featured in critically acclaimed films like Kai Po Che, Queen, Gangs of Wasseypur, amongst

राज कुमार को राजकुमार राव के नाम से भी जाना जाता है और वह मारतीय सिनेमा के उमरते हुए कलाकारों में से एक हैं। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से आटर्स में रनातक की पढ़ाई परी की है। इसके बाद उन्होंने पुणे रिधत एफटीआईआई से अभिनय में स्नातक की ढिग्री ली। चनकी पहली फिल्म 2010 में आई दिवाकर बनर्जी की लव . सेक्स और थोखा थी। तब से लेकर अभी तक राज कमार ने आलोचकों द्वारा सराही गई काई पो थे. क्वीन, गैंन्स ऑफ वसेपुर जैसी फिल्मों में भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं अदा की हैं।

Citation

For portrayal of the intriguing journey of a Muslim young man who is persecuted. He rebels and ultimately comes back to fight the injustice as a committed law-abiding lawyer. Raj Kumar brings to life the soul of Shahid."

'अन्याय के विरुद्ध संघ और कानून की मर्यादाओं के पालन करने वाले शाहिद के चरित्र को जीवन्त अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए।'

Synapsis of the film at page no. 124

094 FEATURE FILMS

NATIONAL FILM AWARDS'13 095

BEST ACTOR (SHARED) / सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (साझा) SURAJ VENJARAMOODU / सुरज वेंजारामुङ् RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Malayalam / Digital / Colour / 110 min

Direction: Dr Biju Production: Ambalakkara Global Films Screenplay: Dr Biju Cinematography: M.J. Radhakrishnan Editing: Karthik Jagesh Music: Issac Thomas Kottukappally Cast: Suraj Venjaramoodu, Master Govardhan, Indrans, Nedumudi Venu

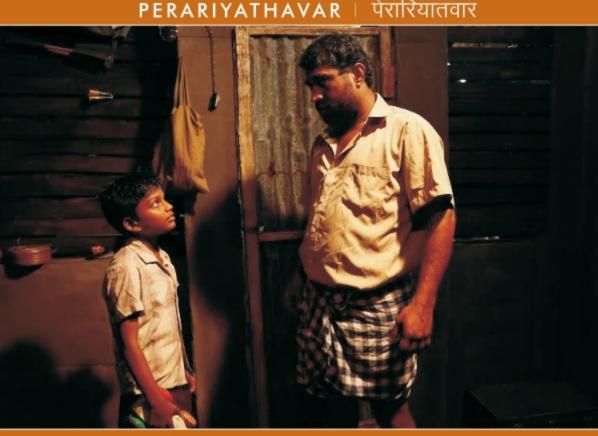
PERARIYATHAVAR

BEST ACTRESS / सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री GEETANJALI THAPA / गीतांजलि थापा RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

2013 Hindi Digital Colour 104 min

Direction-Screenplay: Geety Mohandas Production: Jar Pictures Cinematography: Rajeev Ravi Editing: Alithkumar Music: John Bosters Cast: Nawazuddin Siddigui, Geetanjali Thapa, Manya Gupta

LIAR'S DICE । लायसे डाइस





Suraj venjaramoodu

Suraj Venjaramoodu is a popular actor in the Malayalam film industry, who specializes in comic roles. He has acted in more than 180 feature films. He is a two-time recipient of the

Kerala State Film Award for best comedy artist.

सूरज वेंजारामुद्ध मलयालम फिल्म जगत के एक लोकप्रिय अमिनेता हैं, जिन्हें हास्य भूमिकाओं के लिए जाना जाता है। उन्होंने 180 से भी ज्यादा फिल्मों में काम किया है। उन्हें सर्वश्रेष्ठ हास्य कलाकार के लिए दो बार केरल राज्य फिल्म अवॉर्ड से भी नवाजा जा चका 台口

Citation

For the dignified and guiet portrayal of a man on the lower margins of the society. His turmoil, struggles and sufferings are soulfully brought out with subtle body language and eyes which transcend word."

'समाज के कमजोर वर्ग के व्यक्ति की तस्वरी को ज्ञांत और मर्यादित भाव से प्रकट करने. शब्दों की सीमाओं से आगे जाकर अपनी आंखों और मावमंगिमाओं से अपने भीतर की उथलपुथल और पीडा की अभिव्यक्ति के लिए।'

GEETANJALI THAPA

Hailing from Sikkim, Geetanjali Thapa made her debut with Kamal K.M.'s J.D. which won her two awards internationally. She has acted in Monsoon Shootout that premiered at Cannes 2013. Thapa will soon be

seen in Oscar-winning director Danis Tanovic's Indian project White Lies.

सिकिकम की रहने वाली गीवांजिस थापा ने कमल के, एम. की फिल्म आई, डी, के साथ अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी। इस फिल्म के लिए थापा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दो परस्कारों से सम्मानित किया गया था। उन्होंने कान्स 2013 में प्रदर्शित *मोनसून शृटआउट* में भी अभिनय किया है। थापा जल्द ही ऑस्कर प्राप्त निर्देशक डेनिस टैनोविक की भारतीय फिल्म *काइट लाइज* में भी दिखाई देंगी।

Citation

'If ever an actress could merge completely into a role and look the character to perfection, it is Geetanjali Thapa. Her searching eyes and vulnerability are breathtaking.

'गीतांजलि थापा अपनी भूमिका को आत्मसात करके पूर्णतया किरदार में ढल गई प्रतीत होती हैं । उनकी खोजती हुई निगाहें और संवेदनेशीलता मन को बांघ लेती है।'

BEST SUPPORTING ACTOR / सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता SAURABH SHUKLA / सौरभ शुक्ला RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Hindi / 35mm / Colour / 131 min

Direction-Screenplay: Subhash Kapoor Production: Fox Star Studios India Pvt. Ltd Cinematography: Anshuman Mahaley Music: Krsna Cast: Arshad Warsi, Amrita Kumar, Boman Irani, Saurabh Shukla

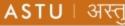
BEST SUPPORTING ACTRESS (SHARED) / सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री (साझा) AMRUTA SUBHASH / अमृता सुभाष

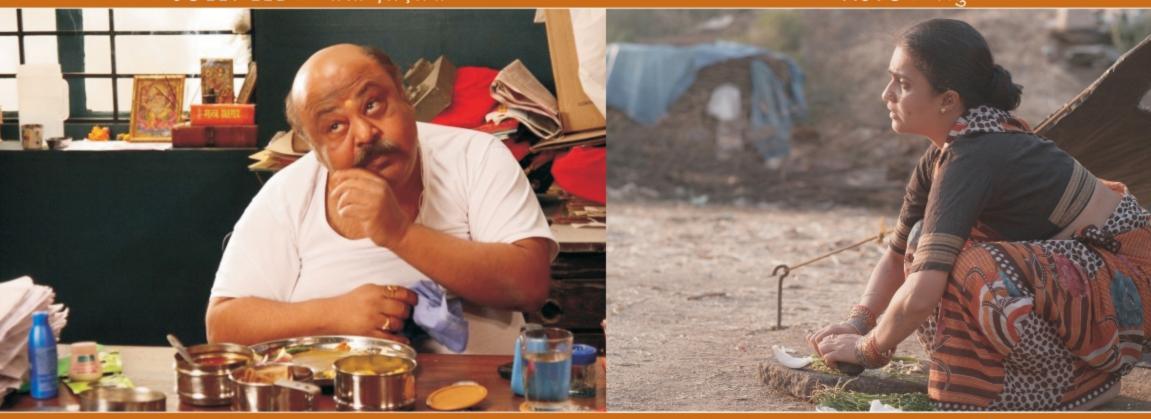
RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Marathi / Digital / Colour / 123 min

Direction-Screenplay: Sumitra Bhave & Sunil Sukthankar Production: Gauurikaa Films Cinematography: Millind Jog Editing: Mohit Takalkar Music: Saket Kanetkar-Dhananjay Kharwandikar Cast: Mohan Agashe, Irawati Harshe, Amruta Subhash

JOLLY LLB । जॉली एलएलबी







SALIRABH SHUKLA

Film, theatre and television actor, director and screenwriter, Saurabh Shukla is best known for his work in films like Satya (1998), which he also co-wrote, Yeh Sooli Zindegi and Barlii (2012). Shukla began serious theatre in 1986. In 1991, he joined the NSD Repertoire Company as actor. The next year he got his first break when Shekhar Kapur, impressed with his work.

created a role for him in Bandit Queen.

सौरम शुक्ला फिल्म, थिएटर और टेलीविजन में अभिनय के साथ ही निर्देशक और पटकथा लेखक भी हैं। उन्हें लोग 1998 में आई फिल्म तस्वर जिसके वह सह—लेखक भी थे, में उनकी शृतिका के लिए याद करते हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने ये साली जिंदगी और 2012 में आई फिल्म बर्ली? में में यादगार मूमिका निमाई है। शुक्ला ने 1996 में गंगीरता से थिएटर करना शुक्र किया। 1991 में एक अभिनेता के रूप में वह एनएसड़ी <u>रेपटॉयर</u> कंपनी से जुड़े। इसके अगते ही साल उन्हें पहली किल्म में अभिनय करने का मीका मिला, जब उनके काम से प्रमालित होकर शेखर कपूर ने *मैंजिट क्वींग* में उनके लिए एक मूमिका तैयार की।

Citation

For a heartwarming and exuberant performance as a judge who discovers his authority and conscience in the process of conducting a highprofile case.'

'एक जज की हृदयस्पर्शी मूमिका के लिए, जो एक बढ़े मुकदमे के दौरान अपने अधिकारों और विवेक को प्राप्त कर लेता है।'

AMRUTA SUBHASH

Amruta Subhash passed out of NSD, New Delhi, and is an actor, director, singer and writer. Starting from Marathi theatre she has acted in 25 multilingual films and some TV shows. She has

released an album and given playback for many films. She also has directed a short film. Aiii.

अमृता सुभाष ने एनएसडी, नई दिल्ली से प्रशिक्षण प्राप्त किया और वह अभिनेत्री, निर्देशक, गायक एवं लेखक हैं। मराठी थियेटर से शुरूआत करते हुए उन्होंने 25 बहुभाषीय फिल्मों और कुछ टीवी शो के लिए काम किया। उन्होंने एक एल्बम जारी की है और कई फिल्मों के लिए गीत गाए हैं। उन्होंने लघु फिल्म अण्जी का निर्देशन किया।

Citation

'Amruta touchingly portrays the emotions of a poor woman who brings to life compassion and warmth in dealing with human relationships.'

'मानवीय संबंधों में दयालुता, मातृत्व और अपनत्व को उभारने में सक्षम गरीब महिला के रूप में अमृता का अभिनय मर्मस्पर्शी है।'

BEST SUPPORTING ACTRESS (SHARED) / सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री (साझा) AIDA EL-KASHEF / एइदा अल-काशेफ

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / English, Hindi / Digital / Colour / 144 min

Direction: Anand Gandhi Production: Recyclewala Films Cinematography: Pankaj Kumar Editing: Adesh Prasad, Sanyukta Kaza, Satchit Puranik Music: Naren Chandavarkar, Benedict Taylor Cast: Aida El-Kashef, Neeraj Kabi, Sohum Shah

BEST CHILD ARTIST (SHARED) / सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार (साझा) SOMNATH AVGHADE / सोमनाथ अवघडे

FANDRY । फौन्डी

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Marathi / Digital / Colour / 103 min

Direction: Nagraj Manjule Production: Navalakaha Arts and Holy Basil Combine (Nilesh Navalakha, Vivek Kajaria) Screenplay: Nagraj Manjule Cinematography: Vikram Amladi Cast: Kishor Kadam, Chaya Kadam, Somnath Avghade and Sakshi Vyavhare

SHIP OF THESEUS | शिप ऑफ थीसियस





Aida El-Kashef is a second-generation Egyptian filmmaker, and a committed activist involved in the 2011 Revolution at Tahrir Square. She was dubbed 'the girl with the camera' for documenting the Revolution, in the

midst of gun-toting soldiers and revolutionaries.

एइदा अल-काशेफ मिस्त्र की फिल्मकार और एक प्रतिबद्ध कार्यकर्ता है, जिन्होंने 2011 में तहरीर स्क्वॉयर में हुए इंकलाब में भी हिस्सा लिया। बंदकों से लैस सैनिकों और क्रांतिकारियों के बीच इस पूरे इंकलाब को कैमरे में कैद करने के लिए उन्हें 'द गर्ल विद द कैमरा' के खिताब से नवाजा गया था।

Citation

'For a sensitive portrayal of a blind photographer who entirely depends on her intuitive creative power and has a fiercely independent mind."

'आन्तरिक रचनात्मक क्षमता, विवेकशील और स्वतंत्र विचारचारा वाली नेत्रहीन फोटोग्राफर की संवेदनशील भूमिका के लिए।"



OMNATH AVGHADE

Somnath Avghade is a 14-year-old boy from a small village named Kem in Solapur, Maharashtra. He has no film-related background at all and did not know about acting

until the director found him playing the local instrument called Halgi. सोमनाथ अवधरे शोलापुर, महाराष्ट्र के केम गांव के 14 वर्षीय किशोर हैं। उनकी न ही कोई फिल्मी पृष्ठभूमि है और न ही वह अभिनय के बारे में जानते थे जबतक कि निर्देशक ने उन्हें स्थानीय वाद्य हल्गी बजाते हुए खोज। इसके पहले वह अभिनय के बारे में जानते तक नहीं

Citation

Somnath Avahade plays the role of a Dalit teenager to perfection. His angst clearly boils over as the realities of life dawn upon him."

'जीवन की कटता से क्षब एक दलित किशोर की भूमिका को सोमनाथ अवघडे ने सज्ञक्त रूप से निभाया है।'

NATIONAL FILM AWARDS'13 101 100 FEATURE FILMS

BEST CHILD ARTIST (SHARED) / सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार (साझा) SADHANA / साधना

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Tamil / 35 mm / Colour / 140 min

Direction: Ram Production: JSK Film Corporation Screenplay: Ram & S.G. Ram Cinematography: Arbindhu Saara

Editing: Sreekar Prasad Music: Y.S. Raja Cast: Baby Sadhana, Shelly Kishare, Lizzie

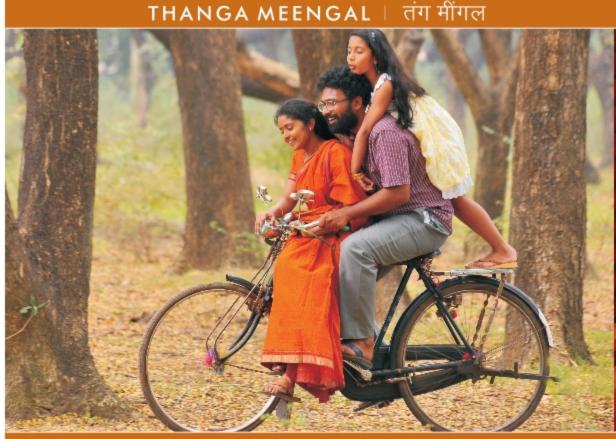
BEST MALE PLAYBACK SINGER / सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायक RUPANKAR / रूपांकर

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Bengali / Digital/ Colour / 150 min

Direction-Screenplay: Srijit Mukherji Production: Reliance Entertainment and Dag Creative Media Cinematography: Soumik Haldar Editing: Bodhaditya Banerjee Music Kabir Suman Cast: Prasenjit Chatterjee, Swastika Mukherjee, Jishu Sengupta

JAATISHWAR । जातीश्वर





Sadhana is a 12-year-old child prodigy studying in Grade 7 in Our Own Indian School, Dubai, UAE. She is a well-trained Bharathanatyam dancer and a classical Carnatic singer. She has won many awards in school

and inter-school competitions both nationally and internationally.

साधना संयुक्त अरब अमीरात में आवर ऑन इंडियन स्कूल, दुबई में सातवीं कक्षा की 12 वर्षीय मेघावी छात्रा हैं। वह भरतनाटयम में पारंगत है और शास्त्रीय कर्नाटक संगीत गायिका हैं। वह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न स्कुलों और स्कुलों के बीच होने वाली स्पर्धाओं में अनेक पुरस्कार जीत चुकी हैं।

Citation

'Sadhana has played the part of a dyslexic child with sensitivity and exuberance and yet with ease.

'साघना ने डिसलेक्सिक बच्चे की भूमिका अत्यंत संवेदना और कौशल से लेकिन सहजता से निमाई है।

Rupankar is one of the most sought after vocalists/playback singers of the Bengali Music Industry. He has sung many famous songs in recent Bengali Films like Baishe Srabon (2011), Aparajita Tumi (2012), Chalo

Let's Go (2008), Hemlock Society (2012) and Dutta Vs Dutta (2012).

क्षपांकर बंगाली संगीत उद्योग के सबसे मशहर गायकों / पार्श्वगायकों में से एक हैं। उन्होंने हाल में आई कई बंगाली फिल्में जैसे बाइशे श्राबोन (2011), अपराजिता तुमी (2012), चलो लेट्स गो (2008), हैमलोंक सोसायटी (2012) और वत्ता वर्सेज वत्ता (2012) में बहुत सारे हिट गानें दिए हैं।

Synapsis of the film at page no. 123

Citation

'A soulful voice with a rich resonance that enhances the theme of the film."

'नैसर्गिक एवं मधर स्वर में गाया हुआ गीत फ़िल्म के कथानक को और समृद्ध तथा संशक्त बनाता है।'

102 FEATURE FILMS

BEST FEMALE PLAYBACK SINGER / सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायिका BELA SHENDE / बेला शेंडे

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Marathi / Digital / Colour / 118 min

Direction-Screenplay: Satish Manwar Production: Indian Magic Eye Motion Pictures Pvt Ltd and Sprint Art Creations Cinematography: Parixit Worrier Music: Dattaprasad Ranade Cast: Upendra Limaye, Vibhavari Deshpande, Kishor Kadam BEST CINEMATOGRAPHY / सर्वश्रेष्ठ सिनेमैटोग्राफी RAJEEV RAVI / राजीव रवि

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 104 min

Direction-Screenplay: Geetu Mohandas Production: Jar Pictures Cinematography: Rajeev Ravi Editing: Ajithkumar Music: John Bosters Cast: Nawazuddin Siddiqui, Geetanjali Thapa, Manya Gupta

TUHYA DHARMA KONCHA । तहया धर्म कोंचा

LIAR'S DICE । लायर्स डाइस



BELA SHENDE

Bela Shende was born in a musically rich family in Pune. Bela came into limelight when she won the TVS Sa Re Ga Ma Pa Mega Final at the young age of 16. She has sung for the Hindi films Jodha Akbar, Rajjo, Paheli,

apart from many Marathi and south Indian films.

बेला शोंडे का जन्म पुणे में संगीत में दिलचस्पी रखने वाले परिवार में हुआ। बेला महज़ 16 वर्ष की आयु में टीबीएस सा रे गा मा मेगाफाइनल जीतकर सुर्खियों में आई। उन्होंने जोधा अकबर, रज्जो, पहेली जैसी हिंदी फिल्मों के अतिरिक्त कई मराठी और दक्षिण भारतीय फिल्मों के लिए गायन किया

Citation

The singer has evoked the requisite emotions of the theme of the film. She has displayed a rare variety in the rendering of this composition." 'गायिका ने फिल्म की थीम को भाव प्रवणता से प्रकट किया है। उन्होंने अपने गायन में विलक्षण विविधता का समावेश किया है।'



An FTII graduate, Rajeev Ravi started his career with Chandni Bar. He won the Asianet Award for the Best Cinematographer for Shesham (2002), the BAFTA for Best Cinematographer for Bypass and the Star Screen and Filmfare Award for Dev D. His recent films include That

Girl in Yellow Boots and Gangs of Wasseypur.

एफटीआईआई से पढ़ाई करने वाले **राजीव रवि** ने अपने करियर की शुरूआत *वांवनी बार* फिल्म से की थी। उन्हें 2002 में आई फिल्म *शीशम* के लिए सर्वश्रेष्ठ सिनेमैटोग्राफर का एशियानेट अवॉर्ड मिला था। बाईपास के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ सिनेमैटोग्राफर का बापटा अवॉर्ड और देव ही के लिए स्टार स्क्रीन व फिल्मफेयर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया था। डाल में आई उनकी फिल्मों में दैट गर्ल इन बैलो बूट्स और गैंग्स ऑफ वसेपुर शामिल हैं।

Synopsis of the film at page no. 123

Citation

'Rajeev Ravi captures life from the picturesque snow-laden mountains through a strenuous bus journey, to the crowded and dingy streets of Delhi with a rare

दिल्ली की भीड़ भरी सड़कों से शुरूआत करते हुए हिमाच्छादित मनोरम पर्वतों तक की सजीवता को अपने कैमरे के माध्यम से अविरल निरंतरता के साथ छायांकित करने के लिए।"

BEST SCREENPLAY (ORIGINAL) / सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मूल) P. SHESHADRI / पी शेषाद्रि

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Kannada / Digital / Colour / 98 min

Direction-Screenplay: P. Sheshadri Production: Basant Productions Cinematography: Ashak V. Roman Editing: Kemparaju B.S. Music: Manohar V. Cast: Nivedita, Santosh Uppina, Shanthabhai Joshi, Master Manjunath Matapathi, H.G. Dattatreya

BEST SCREENPLAY (ADAPTED) / सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित) PANCHAKSHARI / पंचाक्षरी

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Kannada / Digital / Colour / 115 min

Direction-Screenplay: Panchakshari Production: Art Films and Panchakshari Films Cinematography: Sana Ravikumar Editing: M.N. Swamy Music: S.R. Ramakrishna Cast: V. Ashak Kumar, Pushpa Raghavendra, Prathiksha Kaashi, Baby Suhasini

DECEMBER 1 | दिसंबर 1







SHESHADRI

Citation

P. Sheshadri entered cinema as a screenplay and dialogue writer in 1990 after a short stint in journalism. His maiden directorial feature Munnudi (2000) brought him great acclaim. He followed it up with Atithi (2001), Beru (2004), Thutturi (2005), Vimukthi (2008), Bettada Jeeva (2010) and Bharath Stores (2012), all of which won the National Award.

पी शेषदि ने 1990 में एक पटकथा और संवाद लेखक के तौर पर सिनेमा की दुनिया में कदम रखा था। इससे पहले वह कुछ समय के लिए पत्रकारिता में भी हाथ आज़मा चुके थे। उनकी पहली निर्देशित फीचर फिल्म मुन्नुडी (2000) से उन्हें बहुत प्रशंसा मिली। इसके बाद उन्होंने 2001 में अतिथि, 2004 में बेस्ट 2005 में तुत्तुरी, 2008 में विमुक्ति, 2010 में बेत्तादा जीवी और 2012 में भारत स्टोर्स फिल्में बनाई और इन सभी फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

'For its kaleidoscopic variety that uses realism and colloquialism that is soaked in a contemporary flavour." 'यथार्थ एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से इंद्रधनुषी छटा उत्पन्न करती समकालीन फिल्म की पटकथा लिखने के लिए।"



PANCHAKSHARI

Panchakshari has been a working as an associate director with renowned art-house film-makers in Karnataka for ten years. Cofounding the independent production house, Art films and Panchakshari Films, he has produced and directed his debut feature

Prakruti on a script based on a story by U.R. Ananthamurthy.

पंचाक्षरी पिछले 10 वर्ष से एक प्रतिष्ठित आर्ट हाउस और फिल्म निर्देशकों के साथ सहायक निर्देशक के तौर पर काम कर रहे थे। स्वतंत्र प्रोडक्शन हाउस, आर्ट फिल्म्स और पंचाबरी फिल्म्स की सह-संस्थापक के तौर पर उन्होंने यू आर अनंतमृतिं की कहानी पर आधारित पटकथा के साथ उन्होंने अपनी पहली निर्देशित फिल्म प्रकृति प्रोडयस भी की है।

Citation

'For retaining the concerns and values of an original work by a celebrated author while adapting it into the cinematic

'उन्होंने एक प्रख्यात लेखक की कृति को सिनेमाई भाषा में परिवर्तित करते हुए मूल कृति के सरोकारों और मूल्वों को अधुष्ण रखा है।'

Synopsis of the film at page no. 123

NATIONAL FILM AWARDS'13 107

BEST SCREENPLAY (DIALOGUE) / सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद) SUMITRA BHAVE / सुमित्रा भावे

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Marathi / Digital / Colour / 123 min

Direction-Screenplay: Sumitra Bhave & Sunil Sukthankar Production: Gauurikaa Films Cinematography: Millind Jog Editing: Mohit Takalkar Music: Saket Kanetkar-Dhananjay Kharwandikar Cast: Mohan Agashe, Irawati Harshe, Milind Soman

BEST AUDIOGRAPHY (LOCATION SOUND RECORDIST) सर्वश्रेष्ठ ऑडियोग्राफी (लोकेशन साउंड रिकॉर्डिस्ट) NIHAR RANJAN SAMAL / निहार रंजन सामल

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 130 min

Direction: Shoojit Sircar Production: John Abraham, Viacom18 Motion Pictures & Ronnie Lahiri Screenplay: Somnath Dey & Shubendu Bhattacharya Cinematography: Kamaljeet Negi Cast: John Abraham, Nargis Fakhri, Siddhartha Basu

MADRAS CAFE। मद्रास कैंफ़ी





Sumitra Bhave, a social scientist by profession, turned to film-making in 1983. This is her seventh National Award. She, along with Sunil Sukthankar, has won 3 international, several national level and state awards. She has 14 feature films, more than 50 short films, 5 telefilms and 3 TV serials to her credit. She has scripted all her short and feature films and has won several

individual awards for story, screenplay, dialogues, lyrics, art direction and costumes.

सुमित्रा भावे ने सुनील सुक्तांकर के साथ मिलकर 13 फीचर फिल्म, 40 शॉर्ट फिल्म्स, 5 टेलीफिल्म्स और दो टीवी सीरियलॉ का निर्देशन किया है। उनकी फिल्मों को अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं कई राज्य स्तरीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। जनकी फिल्मों को दनिया भर में कई फिल्म फेस्टियल में प्रदर्शित की गई हैं। जनकी फिल्में ग्रामीण और शहरी इलाकों में रह रहे आम आदमी के समझ मीज़द विभिन्न समस्याओं और परिस्थितियों के क्थार्थ और करुणात्मक वित्रण के लिए मशहर है।

Citation

'An extraordinary blend in language and conversations that cover philosophy, day-to-day anxieties and emotions in a most compelling manner."

'वार्तालाप और भाषा का असाधारण संगम करते हुए दार्शनिकता से लेकर रोजमर्रा की चिंताओं और भावनाओं को अत्यंत बांधने वाले अंदाज में पिराने के लिए।

nihar ranjan samal

Nihar Ranjan Samal did his post-graduation in physics and subsequently did a PG diploma in sound recording and sound engineering from the FTII, Pune. He won the National Award for best audiography in 1997 for Tat Tvam Asi. He has designed the sound for

films like 3 Idiots, Tanu Weds Manu and Vicky Donor, among others.

निहाल रंजन सामल ने अपनी भौतिक विज्ञान में रनात्कोत्तर की पढ़ाई पूरी करने के बाद एफटीआईआई पुणे से साउंड रिकॉर्डिंग और साउंढ इंजीनियरिंग में पीजी ढिप्लोमा भी किया। उन्हें 1997 में तत त्वम् असि के लिए सर्वश्रेष्ठ ऑडियोग्राफी का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। उन्होंने *३ ईडियटस, तन वेडस मन* और *विकी डोनर* समेत कई फिल्मों के लिए साउंड डिजाइन किया है।

Synopsis of the film at page no. 123

Citation

'Superlative professional job in picking up minute nuances, covering indoor as well as outdoor locations."

'इंडोर और आउटडोर लोकशन ध्वनियों की बारीकियों को अत्यंत पेशेवर अंदाज से कैद करने के लिए।"

NATIONAL FILM AWARDS'13 109

BEST AUDIOGRAPHY (SOUND DESIGN) / सर्वश्रेष्ठ ऑडियोग्राफी (साउंड डिजाइन) BISHWADEEP CHATTERIEE / बिश्वदीप चटर्जी RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 130 min

Direction: Shoojit Sircar Production: John Abraham, Viacom18 Motion Pictures & Ronnie Lahiri Screenplay: Somnath Dey & Shubendu Bhattacharya Cinematography: Kamaljeet Negi Cast: John Abraham, Nargis Fakhri, Siddhartha Basu

BEST AUDIOGRAPHY (RE-RECORDIST OF THE FINAL MIXED TRACK) सर्वश्रेष्ठ ऑडियोग्राफी (फाइनल मिक्स्ड ट्रैक के री-रिकॉर्डिस्ट) D. YUVARAJ / डी. युवराज

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Malayalam / Digital / Colour / 152 min

Direction: Shaji N. Karun Production: Harizin Entertainment Screenplay: Harikrishnan, Sajeev Pazhoor Cinematography: Saji Nair Editing: Sreekar Prasad Music: Sreevalson J. Menon, Isaac Thomas Kuttukapally Cast: Jayaram, Kadambari, Vineethi

MADRAS CAFE । मद्रास कैंफी



SWAPAANAM । स्वपानम



BISHWADEEP CHATTERJEE

Bishwadeep Chatterjee is one of the most well-known names in film sound designing in India. He did his PG diploma in sound recording and engineering from the FTII, Pune. Among his credits are films like Chokher Bali, Ekalavya, Parineeta, Lage

Raho Munna Bhai and 3 Idiots.

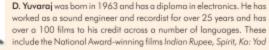
बिश्वदीप चटर्जी भारत में फ़िल्म साउंड डिजाइनिंग दुनिया में मशहूर नाम है। उन्होंने एफटीआईआई पुणे से साउंड रिकॉर्डिंग और इंजीनियरिंग में पीजी डिप्लोमा किया। उन्होंने जिन फिल्मों में काम किया है उनमें *चोखे*र बाली, एकलब्य, परिणीता, लगे रहो मुन्नाभाई और 3 ईंडियट्स शामिल हैं।

Synopsis of the film at page no. 123

Citation

With his competent sound design, Bishwadeep adds authenticity and another dimension to the film.

'अपनी साउंड डिजाइन क्षमता से विश्वदीप ने फिल्म में प्रामाणिकता प्रदान करते हुए एक नया आयाम दिया है।



1963 में जन्में ढी. युवराज ने इलेक्ट्रॉनिक्स में ढिप्लोमा किया है। वह पिछले 25 वर्ष से साउंड इंजीनियर और रिकॉर्डिस्ट के तौर पर काम कर रहे हैं और विभिन्न भाषाओं में 100 से भी अधिक फिल्मों पर काम कर चुके हैं। इनमें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित की गई फिल्में इंडियन रूपी, रिपरिट, को:याड और वाची 420 शामिल हैं।

Synopsis of the film at page no. 124

Citation

'A commendable job of keeping a perfect balance between, dialogues, sound effects and resonant "chenda" playing."

'संवादों, साउंड इफैक्ट्स और चेंडा वादन का अतुलनीय संतुलन बनाए रखने के लिए।'

BEST EDITING / सर्वश्रेष्ठ संपादन V.J. SABU JOSEPH / वी. जे. साबू जोसेफ RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Tamil / Digital / Colour / 147 min

Direction-Screenplay: Arivazhagan Venkatachalam Production: Aascar Films Cinematography: Bhaskaran Editing: V.J. Sabu Joseph Music: S. Thaman Cast: Nakul, Mrudhula Basker, Atul Kulkarni

BEST PRODUCTION DESIGN / सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिजाइन ASHIM AHLUWALIA, TABASHEER ZUTSHI, PARICHIT PARALKAR अशीम आहलूवालिया, तबशीर जुत्शी, परिचित पारलकर

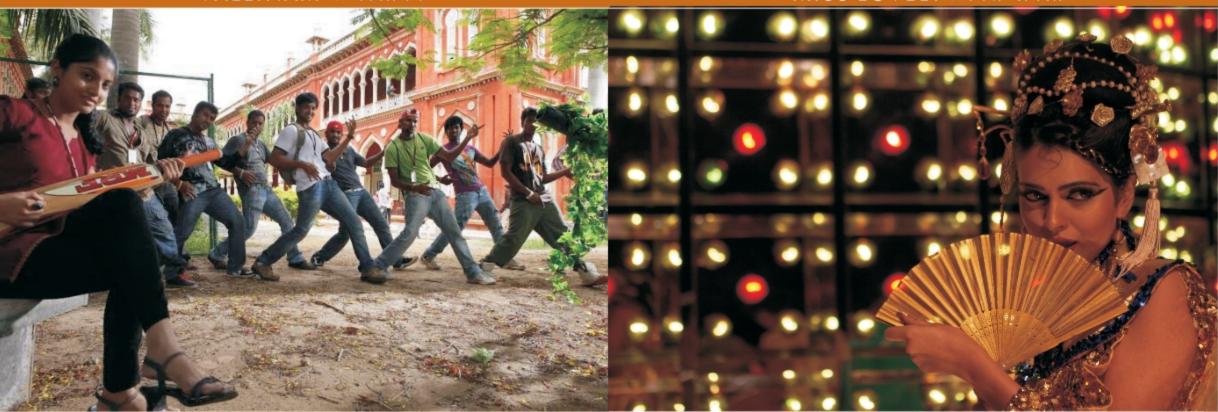
RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 113 min

Direction: Ashim Ahluwalia Production: Future East Film Pvt Ltd Screenplay: Ashim Ahluwalia, Uttam Sirur Cinematography: Mohanan Editing: Ashim Ahluwalia, Paresh Kamdar Cast: Nawazuddin Siddigui, Anil George, Niharika Singh

VALLINAM

MISS LOVELY । मिस लवली





v.j. sabu joseph

V.J. Sabu Joseph started his professional life as an apprentice in 2004. He worked as an assistant editor in many films before debuting as an editor with the Tamil film Aanamai Thavarael (2010). He also designs trailers for films.

वी. जे. साबू जोसेफ ने अपना व्यवसायिक जीवन 2004 में प्रशिक्ष के तौर पर शुरू किया। उन्होंने तमिल फिल्म आनमई तवरैल (2010) में संपादक के तौर पर पहली फिल्म संपादित करने से पहले विभिन्न फिल्मों में सहायक संपादक के रूप में काम किया। उन्होंने कई फिल्मों के ट्रेलर भी बनाए हैं।

Synopsis of the film at page no. 124

Citation

'An excellent pace set in this sport-based film by the editor. The match sequences have been masterly cut."

'संपादक ने खेल पर आधारित इस फिल्म की बेहतरीन गति बनाए रखी है। मैच के क्रम में विशेषज्ञतापूर्ण कट देखने को मिलते हैं।



Ashim Ahluwalia studied film at Bard College in New York. His first fiction feature, Miss Lovely, has been screened at various festivals worldwide. Parichit Paralkar has a degree in architecture. He worked as art director at MTV India for 3 years. Tabasheer Zutshi is a designer based in Goa. She is known for her work for Indian and international independent feature films.

अशीम आहल्वालिया ने वर्ड कॉलेज, न्यूयार्क से पढ़ाई की है। इनकी पहली फिल्म मिस लवली को कई फ़िल्म समारोह में दिखाया जा चुका है। परिचित पारलकर ने आर्कीटेक्चर में विग्री ली है। और एमटीवी इन्विया में 3 साल तक कला निर्देशक रह चुके हैं। तबशीर जुरशी गोवा की ठिजाइनर हैं और भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय फीचर फिल्मों में काम कर चुकी हैं।

Citation

'For a style and finesse realized by authentic recreating an era in a not-too-distant past and dressing up the location that is coherent with the visual style of the narrative.

'अत्यंत नफासत और प्रामाणिकता के साथ उस काल को पनर्जीवित करने तथा प्रोडक्शन डिजाइन के माध्यम से लोकेशन ड्रेसिंग और वृत्तांत को दश्यात्मक बनाने के लिए।

NATIONAL FILM AWARDS'13 113 112 FEATURE FILMS

BEST COSTUME DESIGNER / सर्वश्रेष्ठ वेशभूषाकार SABARNI DAS / साबर्णी दास

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Bengali / Digital / Colour / 150 min

Direction-Screenplay: Srijit Mukherji Production: Reliance Entertainment and Dag Creative Media Cinematography: Soumik Haldar Editing: Bodhaditya Banerjee Music: Kabir Suman Cast: Prasenjit Chatterjee, Swastika Mukherjee, Jishu Sengupta BEST MAKE-UP ARTIST / सर्वश्रेष्ठ मेकअप कलाकार VIKRAM GAIKWAD / विक्रम गायकवाड़

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Bengali / Colour / Digital Colour 150 min

Direction-Screenplay: Srijit Mukherji Production: Reliance Entertainment and Dag Creative Media Cinematography: Soumik Haldar Editing: Bodhaditya Banerjee Music: Kabir Suman Cast: Prasenjit Chatterjee, Swastika Mukherjee, Jishu Sengupta

JAATISHWAR । जातीश्वर







SABARNI DAS

Sabarni Das is one of the leading stylists and production designers in the Kolkata film industry, having worked in both films and television with names such as Apama Sen, Ritupamo Ghosh, Srijit Mukherji. Some of her works include Paromitar

Ekdin, Mr. & Mrs. Iyer, Goynar Baksho, Noukadubi, Baishe Srabon, Jaatishwar.

सावणीं दास कोलकाता फिल्म उद्योग की एक मशहूर स्टाइलिस्ट और प्रोडक्शन डिजाइनर हैं। इन्होंने अपर्णा सेन, ऋतुपर्णों घोष, श्रीजित मुखर्जी जैसे लोगों के साथ फिल्मों और टेलीविजन दोनों में काम किया है। उन्होंने जिन फिल्मों पर काम किया है, उनमें से कुछ प्रमुख हैं *पारोमितार एकदिन, मिस्टर एंड मिसेज अय्यर, गॉयनार* बक्हों, नीका डुबी, बाइशें श्राबोन, जातिश्वर।

Synopsis of the film at page no. 123

Citation

For realizing effectively the texture of colonial Bengal up to the modern period through a rigorous attention to details.'

'ऑपनिवेशिक से लेकर आधुनिक बंगाल में प्रचलित वेशभूमा शैली की बारीकियों द्वारा पात्रों को प्रामाणिकता प्रदान करने के किए।'



VIKRAM GAIKWAD

Vikram Gaikwad has worked in various films, including Hindi as well as other regional cinemas. He has won the National Film Award for Best Make-up Artist for the Bengali film Moner Manush in 2010, for his work in the Marathi film

Balgandharva and the Hindi film The Dirty Picture in 2011.

विक्रम गायकवाड़ ने कई फिल्मों में काम किया है, जिसमें हिंदी समेत अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्में भी शामिल हैं। उन्हें 2010 में आई बंगाली फिल्म *मोनेर मानुब*, 2011 में आई मराठी फिल्म *बालगंधवं* और हिंदी फिल्म *व उर्टी पिक्चर* के लिए सर्वश्रेष्ठ मेकअप आर्टिस्ट का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।

Synopsis of the film at page no. 123

Citation

'For the admirable detailing and remarkable consistency achieved in the etching of the character played by Prasenjit Chatterjee.'

'प्रोसेनजीत चटर्जी द्वारा अभिनीत किरदारों की कपसज्जा में अनुपम एवं उल्लेखनीय सामंजस्य बनाए रखने के लिए।'

BEST MUSIC DIRECTION (SONGS) / सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक (गीत) KABIR SUMAN / कबीर सुमन RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Bengali / Digital / Colour / 150 min

Direction-Screenplay: Srijit Mukherji Production: Reliance Entertainment and Dag Creative Media Cinematography: Soumik Haldar Editing: Badhaditya Banerjee Music: Kabir Suman Cast: Prasenjit Chatterjee, Swastika Mukherjee, Jishu Sengupta

JAATISHWAR । जातीश्वर

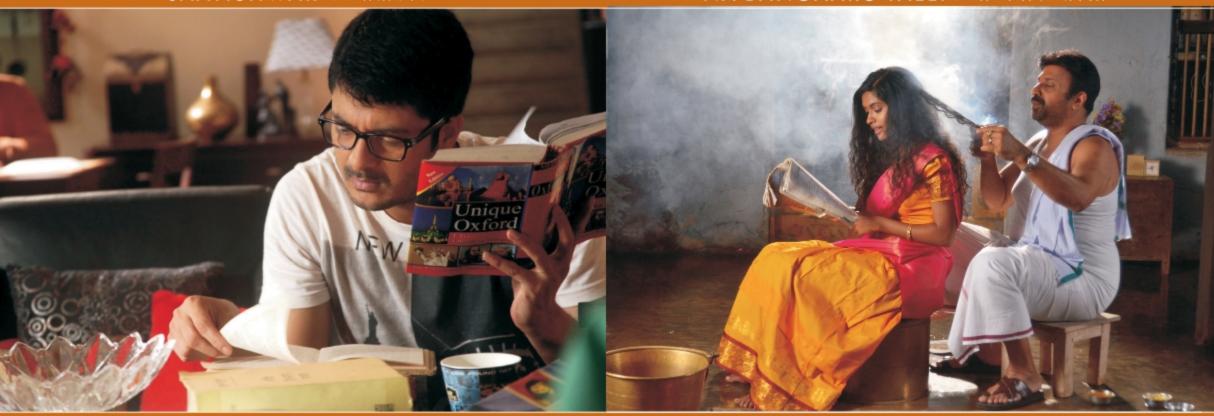
BEST MUSIC DIRECTION (BACKGROUND SCORE) / सर्वश्रेष्ठ पार्श्व संगीत निर्देशन SHANTANU MOITRA / शांतनु मोइत्रा

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Telugu / Digital / Colour / 117 min

Direction: Rajesh Touchriver Production: Sun Touch Productions Screenplay: Rajesh Touchriver Cinematography: Ramathulasi Editing: Donmax Music: Shantanu Moitra, Sharreth Cast: Sidhigue, Anjali Patil, Lakshmi Menon, Nina Karup

NA BANGAARU TALLI । ना बंगारू तल्ली





KABIR SUMAN

Kabir Suman is singer-songwriter, musician, poet, journalist, political activist, TV presenter, and occasional actor. His work has been a major influence in the development of the Bengali songs and has grown to become a major movement in contemporary Bengali music. He released his first solo album, Jonake Chai, in 1992, which was

immensely successful as it redefined Bengali songs. Since then he has released over twenty albums. कबीर सुमन एक नायक—गीतकार, संगीतझ, किंव, पत्रकार, राजगीतिक कार्यकर्ता, टीवी प्रस्तोता और कमी कमी अभिनय भी करते हैं। बंगाली गीतों के विकास में सुमन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है और वह सामयिक बंगाली सिनेमा में एक बढ़े नाम बनवार उमरे हैं। उन्होंने 1992 में अपना सोलो एल्बम तांचार्क खाई जारी किया था, जिसे लोगों ने बेहद पसंद किया और इसने बंगाली गीतों को नए तरीके से परिभाषित किया। तब से लेकर अभी तक वह 20 से अधिक एल्बम जारी कर चुके हैं।

5/noppis of the film of page no. 123

Citation

The music director has presented a rich variety of musical genres of Bengal with a ppropriate voices, instruments and orchestration.' 'संगीत निर्देशक ने उपयुक्त आयाज और वाधों के सम्मिलन से बंगाल की समृद्ध संगीत परम्परा को प्रस्तुत किया है।'



SHANTANU MOITRA

Shantanu Moitra is one of the leading composers in Indian cinema at present. Some of his most well-known works include Parineeta, Antaheen, Lage Raho Munna Bhai and 3 Idiots. He has also composed a number of best-selling nonfilm albums, including Ab Ke Saawan. He is currently working

on a book to be published by HarperCollins Publishers India.

शांतनु मोइत्रा मीजूदा भारतीय सिनेमा के प्रमुख संगीतकारों में से एक है। उनकी प्रख्यात फिल्मों में *यारिणिता, अंतहीन, लगे रहो मुन्ना भाई,* और *उ इडियेंट्स* शामिल हैं। उन्होंने *अब के सावन* जैसी अत्यंत लोकप्रिय गैर फिल्मी एल्बम भी दी है। वह इस समय हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया के साथ मिलकर एक पुस्तक पर काम कर रहे हैं।

Citation

The music composer has kept a balance of music programming and regional acoustic instruments like Saraswati Veena, Mridangam, Ghatam, Morsing and voices to underline the theme of the film."

'संगीतकार ने म्युजिक प्रोग्रामिंग और क्षेत्रीय वाडों जैसे सरस्वती वीणा, मृदंगम, घाटम, मोर्सिंग और ध्वनियों का संतुलन कर फिल्म की मृत थीम को अभिवृद्ध किया है।'

BEST LYRICS / सर्वश्रेष्ठ गीत NA. MUTHUKUMAR / ना. मुत्तुकुमार RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Tamil / 35 mm / Colour / 140 min

Direction: Ram Production: JSK Film Corporation Screenplay: Ram & S.G. Ram Cinematography: Arbindhu Saara

Editing: Sreekar Prasad Music: Y.S. Raja Cast: Baby Sadhana, Shelly Kishore, Lizzie

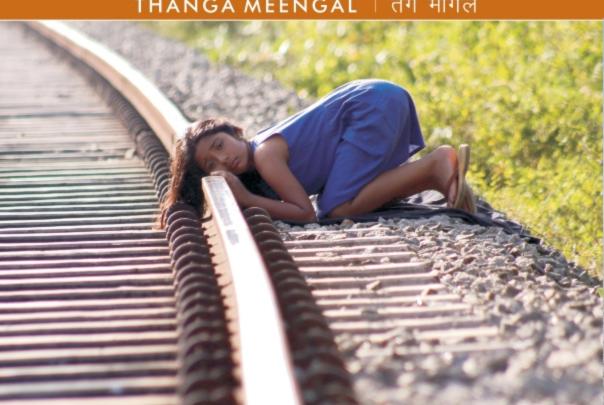
BEST SPECIAL EFFECTS / सर्वश्रेष्ठ विशेष प्रभाव INTERMEZZO STUDIO, ALIEN SENSE FILMS PVT LTD इंटरमेज्जो स्टुडियो, एलियन सेंस फिल्म प्रा लि

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 136 min

Direction: Girlsh Malik Production: One World Films Pvt. Ltd & Clapstern Productions Screenplay: Girlsh Malik & Rakesh Mishra Cinematography: Sunita Radia Cast: Purab Kohli, Tannishtha Chatterjee, Kirti Kulhari, Saidah Jules, Mukul Dev

THANGA MEENGAL । तंग मींगल



JAL । जल



Na. Muthukumar is a Tamil poet and lyricist. He has been conferred with a doctorate for his research in Tamil literature. He has penned the lyrics for more than 2000 songs in a career spanning 11 years. He has written and published 16 books in

Tamil in genres such as poetry, fiction and non-fiction. He trained under the legendary Balu Mahendra for 4 years.

ना मृत्तुक्मार तमिल कवि और गीतकार हैं। उन्हें तमिल साहित्य में शोध के लिए ढॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई है। उन्होंने अपने 11 साल के कॅरियर में 2000 से अधिक गीत लिखे हैं। उन्होंने तमिल में काव्य, कथानक और गैर कथानक पर 16 पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने महान फिल्मी इस्ती बालू महेंद्र की निगरानी में चार साल

Citation

'For giving a poetic expression to the narrative through contextual amplification of emotions."

'भावनाओं के परिस्थितिजन्य संवर्धन से वत्तांत को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी गई है।

Intermezzo Alien Sense is an Indian visual effects company. The company works

across several different areas of the media: feature films, commercials, music videos, feature animation and digital. Intermezzo Studios Pvt. Ltd. is a visual effects production company. Started in 2009, it is recognized now for its quality and finesse in computer-generated imagery and visual effects work.

NTERMEZZO STUDIO, ALIEN SENSE FILMS PVT LTD

एलियन सेंस मुम्बई स्थित भारतीय विशेष प्रभाव देने वाली कंपनी है। कंपनी विभिन्न मीडिया जैसे फीचर फिल्मों, कमर्शियल, म्युज़िक वीढियो, फीचर एनीमेशन और ढिजिटल के लिए काम कर रही है। इंटरमेज्जो स्टुढियो प्रा लि एक विजुअल प्रभाव कंपनी है। इसकी शुरूआत 2009 में हुई और इसे अब कंप्यूटर इमेजरी एवं विशेष प्रभाव के कार्यों के लिए जाना जाता है।

Synopsis of the film at page no. 123

Citation

'For creative and organic use of special effects to enhance the theme of the film."

'फिल्म की थीम को उभारने के लिए विशेष प्रभावों का रवनात्मक और जीवंत तपयोग किया गया है।'

118 FEATURE FILMS

NATIONAL FILM AWARDS'13 119



BEST CHOREOGRAPHY / सर्वश्रेष्ठ नृत्य संयोजन GANESH ACHARYA / गणेश आँचार्य RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 188 min

Direction: Rokeysh Omprokash Mehra Production: Viacom18 Motion Pictures Cinematography: Binod Prodhan Editing: P.S. Bharathi Music: Shankar-Ehsaan-Loy Cast: Farhan Akhtar, Sonam Kapoor, Divya Dutta, Pavan Malhotra

SPECIAL MENTION / विशेष उल्लेख GAURI GADGIL, SANJANA RAI / गौरी गाडगिल, संजना राय CERTIFICATE / प्रशस्ति पत्र

Year 2013 / Marathi / Digital / Colour / 130 min

Direction-Cinematography: Mahesh Limove Production: Viva In En Screenplay: Ambar Hadap, Ganesh Pandit & Mahesh Limaye Editing: Jayant Jathar Music: Kaushal Inamdar Cast: Mrinal Kulkarni, Upendra Limaye, Hrishikesh Joshi, Gauri Gadail

BHAAG MILKHA BHAAG । भाग मिल्खा भाग





GANESH ACHARYA

Ganesh Acharya is one of the most well-known choreographers in Hindi cinema at present. His credits include Omkara, Rang De Basanti, Agneepath, among others. He has choreographed some of the most

popular song numbers in Hindi cinema in recent times.

गणेश आचार्य हिंदी सिने जगत के प्रख्यात कोरियाग्राफर है। उनकी फिल्मों में ओंकारा, रंग दे बसंती, अग्निपथ शामिल हैं। उन्होंने तात्कालिक सबसे लोकप्रिय हिंदी फिल्मी गीतों का नृत्य संयोजन किया

Citation

For effectively using young soldiers and just the props available within the barracks to create a rugged and exuberant dance.

'सेना के जवानों तथा बैरक में उपलब्ध सामान के कारगर इस्तेमाल से अनगढ एवं थिरकाने वाला नृत्य संयोजन करने के लिए [



GAURI GADGIL, SANJANA RAI

Gauri Gadgil is a champion swimmer who has overcome being born with Down Syndrome to win a number of medals at the National Games and other meets for specially abled people. Sanjana Rajesh Rai is an eight-year-old differently abled girl with Down Syndrome. She attends school in Virar. This is her debut feature-length film.

गौरी गाडगिल अपने डाउन सिन्ड्रोम से उबरते हुए चैम्पियन तैराक के रूप में उमरती है और विकलांग व्यक्तियों की श्रेणी के राष्ट्रीय खेलों में कई पदक हासिल करती हैं। वह 2007 में आयोजित विशेष ओलंपिक खेलों में 25 मीटर बटरफ्लाई में रजत पदक जीतती है। आठ वर्षीया **संजना राजेश राय** डाउन सिन्डोम से पीडित है। वह विरार में पदती हैं। यैलो इनकी पहली फीचर फिल्म है।

Citation

To pay our salutation to the indomitable spirit of a special child."

'विलक्षण प्रतिभा एवं क्षमता वाली बच्ची की अपराजय प्रेरणा को सलाम करने के लिए।'

120 FEATURE FILMS

NATIONAL FILM AWARDS'13 121

SPECIAL MENTION / विशेष उल्लेख ANJALI PATIL / अंजलि पाटिल CERTIFICATE / प्रशस्ति पत्र

Year 2013 / Telugu / Digital / Colour / 117 min

Direction: Rajesh Touchriver Production: Sun Touch Productions Screenplay: Rajesh Touchriver Cinematography: Ramathulasi Editing: Donmax Music: Shantanu Moitra, Sharreth Cast: Sidhique, Anjali Patil, Lakshmi Menon, Nina Karup

NA BANGAARU TALLI । ना बंगारू तल्ली





Anjali Patil graduated from Lalit Kala Kendra, Pune University, majoring in acting in 2007. She trained in various martial arts, classical instrumental music, and classical dance forms. She finished her post-graduation from National School of Drama in 2010, specializing in design-direction.

अंजिल पाटिल लिलत कला केंद्र, पुणे यूनीवर्सिटी से स्नातक हैं और वह 2007 से अभिनय कर रही हैं। वह मार्शल आदर्स, क्लासिकल संगीत और क्लासिकल नृत्य में प्रशिक्षित हैं। उन्होंने 2010 में नेशनल स्कूल ऑफ डामा से डिजाइन निर्देशन में विशेषजता के साथ स्नातक किया।

Citation

Kudos to the courage of a girl, who brought out her real-life story and told it to the world." 'अपने जीवन की सच्ची कहानी दुनिया को सुनाने का साइस रखने वाली लड़की की भूरि भूरि प्रशंसा करने के लिए।"

SYNOPSES / सारांश

JAATISHWAR

Rohit, a Gujarati born and brought up in Bengal, falls in love with Mahamaya, a Bengali. She rejects him and challenges him to write, compose and sing a perfect Bengali song for her. Mahamaya becomes a RJ. Rohit goes to Portugal to study colonial history, and decides to do it on Heynesman Antony, a Portuguese born in nineteenth-century Bengal, who learnt the Bengali language and went on to become one of the leading minstrels of that time. Two men separated by one and a half century – both learning an alien language and going on to write songs in that, overcoming all odds.

रोहित एक गुजराती लड़का है, जिसकी परवरिश बंगाल में हुई है। रोहित को एक बंगाली लड़की महामाया से प्रेम हो जाता है। वह उसके प्रेम निवेदन को अस्वीकार कर देती हैं और रोहित को चुनौती देती हैं कि वह उसके लिए उत्कृष्ट बंगाली में एक गीत लिखे, उसकी धुन बनाएं और उसे गाए। समय का पहिंचा घुमता है और महामाया एक आर जे बन जाती है, जबकि रोहित औपनिवेशिक इतिहास पढ़ने के लिए पूर्तगाल चला जाता है। रोहित 19वीं सदी में बंगाल में जन्में एक पूर्तगाली हेनेसमैन एंटनी को अपना विषय चनता है। एंटनी ने भी उस समय बंगाली भाषा सीखी थी और फिर वह अपने जमाने का सबसे महाइर लोक गायक बना। फिल्म में करीब डेढ सदी के समय अंतराल पर दो पुरुषों की कहानी दिखाई गई है, जो दूसरी माथा शीखने की कोशिश कर रहे हैं और सभी बायाओं को पार कर उस माथा में गीत की रचना भी करते

JAL

Bakka, a young wilful water diviner in the Rann of Kutch, knows how to find water in the desert with his mystic dowsing rods. Kim, a European, comes to Kutch and realizes that flamingo chicks are dying. The Ecological Society decides to create artificial ponds for the birds. The only hitch is that all their scientific methods fail to find water. Kim turns to Bakka for help. Events unfald as greed, jealousy and the desperation to survive bring out the darkest side of human character.

बक्का कच्छ के रन में रहने वाला एक जल खोजी है और वह अपनी जादई छड़ी के बल पर जानता है कि इस मरुशूनि में पानी कहां मिलेगा। एक यूरोपीय किम कच्छ आता है और उस इस बात का अहसास होता है कि किस तरह फ्लेमिंगो पक्षी गरते जा रहे हैं। इकोलॉजिकिल सोसायटी इन पक्षियों के लिए जलाशयों का निर्माण कराना चाहती है। सबसे बढ़ी दिक्कत यह है कि उन्हें वैज्ञानिक तरीकों से यह नहीं पता नहीं चलता कि पानी कहां मिलेगा। ऐसे में किम बक्का की मदद मांगता है। जैसे जैसे घटनाएं आगे बढ़ती हैं. लालच, ईर्घ्या, और बीखलाहट के अलावा मानवीय स्वनाव के काला पक्ष खुलकर सामने आता है।

The film follows Kamala, a young woman from Chitkul village and her girl child Manya, who embarks on a journey leaving their native land in search for her missing husband. Along this journey she encounters Nawazudin, a free-spirited army deserter who helps them to get to their destination with his own selfish motive.

फिल्म वितक्ल गांव में रहने वाली एक युवा महिला कमला और उसकी पुत्री मान्या की कहानी है। कमला पति की तलाश में अपना मूल गांव छोडकर निकलती है। अपने इस सफर के दौरान उसकी मुलाकात एक स्वच्छंद व्यक्तितव और सेना छोडकर भागे हुए नवाजुददीन सिददीकी से होती है, जो निजी स्वार्थ के कारण उन्हें जनके गंतव्य तक पहुंचने में मदद करता है।

MADRAS CAFE

An Indian Intelligence agent journeys into a war-torn coastal island, to break a resolute rebel group. He deftly manaeuvres his resources to make significant breakthroughs, amidst a scenario where the enemy has no face. At various junctions, he meets a charismatic and passionate journalist who is following her will to reflect the truth behind the civil war. The story unfolds as their quest for the truth reveals a deeper conspiracy to seize a common nemesis: India.

भारतीय खुफिया एजेंसी का एक एजेंट खुद्ध में फंसे एक तटीय डीप पर दृढप्रतिज्ञ विदोही समूह में फूट डालने के लिए जाता है। वह अपने झोतों का क्शलता से इस्तेमाल कर इस दिशा में खासी जानकारी जुटाता है, वह भी ऐसे इलाके में जहां दश्मन की कोई पहचान नहीं है। एक मोढ़ पर उसकी मुलाकात एक आकर्षक व्यक्तित्व वाली पत्रकार से होती है, जो इस गृह बद्ध के पीछे की सच्चाई जानने की इच्छक है। दोनों सब की तलाश में जुटे हैं, जिसमें उन्हें भारत को नुकसान पहुंचाने वाली एक बड़ी साजिश का पता चलता है।'

PRAKRUTI (THE NATURE)

Set in pre-independence era, this film tells a story of Sankappayya, a farmer, and his family. Sankappayya's passion for farming leads him to cultivate orange in a soil unsuitable for it. In this pursuit, he incurs debts as his crops fail for six seasons. His son wants to explore a life beyond farming and his village. These lead to a confrontation within the family, and the ultimate debacle.

आजादी से पहले की पृष्ठभूमि पर आधारित यह फिल्म एक किसान संकप्पाया और उसके परिवार की कहानी है। खेती के प्रति अपने जुनून के कारण संकप्पाया ऐसी मिटटी में संतरे जगाने की कोशिश करता है, जो उनके लिए उपयुक्त नहीं है। इस कोशिश में उसकी लगातार छह फसलें खराब होती हैं और उस पर कर्ज़ का बोझ बदता जाता है। उसका पुत्र खेती और गांव से दूर जाकर दुनिया देखना चाहता है। इससे परिवार में होती है झगडों की शुरूआत और अंत में हाथ लगती है असफलता।

SYNOPSES / सारांश

SHAHID

Shahid traces the true story of slain human rights activist and lawyer Shahid Azmi. In the backdrop of communal violence unleashed in Mumbai since 1993, we see a remarkable tale unfold. From attempting to become a terrorist to being wrongfully imprisoned under a draconian anti-terrorism law to becoming a criminal lawyer, it traces the inspiring personal journey of a bay who became an unlikely messiah for human rights.

शाहिद दिवंगत मानवाधिकार कार्यकर्ता और वकील शाहिद आजमी की सच्ची कहानी है। 1993 में मुंबई में हुए सांप्रदायिक दंगों की पृष्ठमूमि में हम एक सच्ची कहानी को अपनी आंखों के सामने खुलते हुए देखते हैं। एक आतंकी बनने की कोशिश से लेकर एक सख्य आतंक रोधी कानून के तहत गुलत तरीके से जेल में बंद किए जाने के बाद फौजदारी मामलों का वकील बनने तक एक युवा लड़के के निजी जीवन की कहानी है, जो मानवाधिकारों का एक मसीहा बनकर उमरा।

SWAPAANAM (The Voiding Souls)

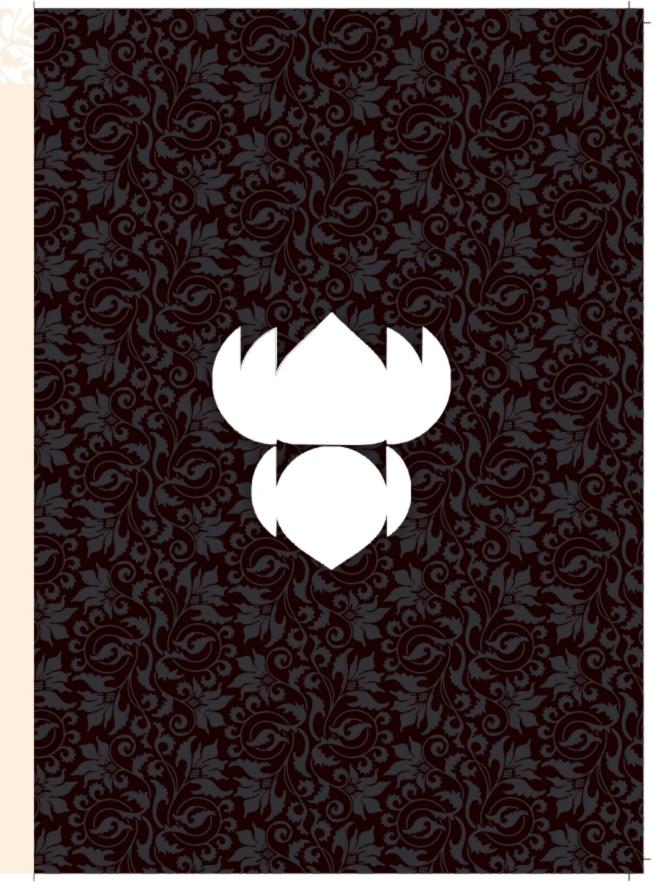
Unequalled in playing the chenda, Unni, and Nalini, peerless in Mohiniyattam, are drawn to each other. Their passion cannot hold up against the tumults of Unni's life. A brother and a father figure, whose love sours to jealousy and hate, a wife who despises his drumming and a mother from whom the truth about his birth is not forthcoming all hasten the tempo to an inevitable dark end.

चंडा वादन में दक्ष उन्नी और मोहिनीअट्टम में बेजोड़ नलिनी एक दूसरे से प्यार करते हैं। लेकिन उनका प्यार उन्नी के जीवन में आए कोलाइल के सामने नहीं टिक पाता। एक माई और पितातुल्य व्यक्ति, जिसका प्यार अब ईर्ष्या और घृणा में बदल जाता है, एक पत्नी, जिसे चसका द्रम बजाना जरा भी पसंद नहीं है और एक मां, जो उसके जन्म की सच्चाई बताने में असमर्थ है, सभी मिलकर इस फिल्म की गति बढ़ाते हैं और इसे एक अपरिहार्य दुखद अंत तक पहुंचाते हैं।

VALLINAM

Krishna is a good basketball player in Trichy. During a game an accident takes place and his best buddy dies. To get away from the past, Krishna leaves Trichy and moves to a Chennai college. He finds that cricket is the most favored game and given undue advantage in the college sports curriculum. Slowly, he starts a basketball team in the college.

कृष्णन त्रिची का अच्छा बास्केटबॉल खिलाडी है। एक मैच के दौरान हादसे में उसका अभिन्न मित्र जान गंवा देता है। अपने अतीत से दूर जाने के लिए कृष्णा त्रिची से चेन्पई चला जाता है। वडां उसे क्रिकेट की दीवानगी है क्योंकि कॉलेज के पाठ्यकम में इसे ग़ैर वाजिब तरजीड़ दी जाती है। घीरे धीर वह कॉलेज में बारकेटबॉल टीम खढी कर लेता है।



NON-FEATURE FILMS **AT A GLANCE**



ACCSEX (ENGLISH, HINDI) Special Mention



DHARMAM (TAMIL) pecial Mention



ANANTHAMURTHY -NOT A BIOGRAPHY... BUT A HYPOTHESIS (ENGLISH) Special Jury Award (shared)



FORESTING LIFE (HINDI, ASSAMESE) Best Environment Film Including Agriculture



AT THE CROSSROADS: NONDON BAGCHI LIFE AND LIVING (ENGLISH, BENGALI) Special Mention



GULABI GANG (HINDI, BUNDELKHANDI) Best Film On Social Issues Best Editing Arjun Gourisaria



CANDLES IN THE WIND (PUNJABI, HINDI) Special Mention



HEYRO PARTY (BENGALI) Best Film On Family Values



CHASING THE RAINBOW (ENGLISH) Best Promotional Film (shared)



KANKEE O SAAPO (ODIA) Best Narration/ Voice Over Lipika Singh Darai



CHIDIYA UDH (No Dialogues) Best Direction Pranjal Dua Best Audiography Gautam Nair



KANYAKA (MALAYALAM) Best Debut Film Of A Director



(HINDI, URDU, ENGLISH) Best Investigative Film

KATIYABAAZ



KUSH (HINDI) Best Promotional Film (shared)



MANDRAKE ! MANDRAKE!





O FRIEND, THIS WAITING! (ENGLISH, TELUGU)

Best Arts /cultural Film (shared)



RANGBHOOMI (HINDI) Best Non Feature Film



TAMAASH (KASHMIRI) Special Jury Award

(shared)



THE LAST ADIEU (ENGLISH)

Best Biographical / Historical Reconstruction



THE LOST BEHRUPIYA (HINDI)

Best Arts /cultural Film (shared)



THE PAD PIPER (ENGLISH)

Best Science & Technology Film



THE QUANTUM INDIANS (ENGLISH)

Best Educational Film



YUGADRASHTA (ASSAMESE)

Best Music Direction Anurag Saikia

BEST NON-FEATURE FILM सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म SWARNA KAMAL / स्वर्ण कमल ₹ 1,50,000/-

RANGBHOOMI । रंगभूमि





Citation

For an innovative and artistic exploration of the themes and concerns of the celebrated pioneer of Indian cinema, during a relatively unknown phase of his life, which leaves the viewer moved and shaken.

भारतीय सिनेमा के पुरोघा के सरोकारों का कलात्मक एवं आविष्कारी चित्रण करती एक फिल्म जो उनके जीवन के अनछए पहलुओं को कुछ इस तरह पेश करती है कि दर्शक स्तब्ध रह

RANGBHOOMI रंगभूमि

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 80 min

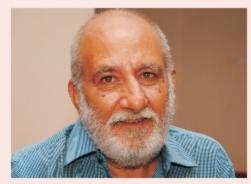
Direction: Kamal Swaroop Production: Films Division Cinematography: Ashwani Kaul Editing: Tanushree Das Music: Rajat Dholakia Cast: Anita Kanwar, Gopi Desai, Lalit Tiwari, Aditya Lakhia

SYNOPSIS

world of cinema and decided to take up theatre. While in Varanasi, Phalke wrote a semi-autobiographical play titled Rangbhoomi which form the core of this cinematic exploration.

Rangbhoomi traces the contours of Dadasaheb Phalke's रंगगूमि सिने जगत से मोह भंग होने के पश्चात थियेटर की ओर उन्मख life in Varanasi after he withdrew, disillusioned, from the 🛮 हुए दादासाहेब फाल्के के रंगमंच एवं फिल्मी सफर को अंकित करती है। वाराणसी में फाल्के ने अर्घ आत्म कथात्मक नाटक *रंगममि* लिखा जो बाद में उनके सिनेमेटिक सफर की धुरी साबित हुआ।

PROFILE



KAMAL SWAROOP

Kamal Swaroop studied Direction at FTII, Pune. He made some science programmes and TV plays for ISRO, Ahmedabad, during 1975-76 and some documentaries for Films Division during 1977-78. He wrote dialogue for some films for Saeed Akhtar Mirza and Kumar Shahani and art direction for a Mani Kaul film. He wrote, produced and directed Om-Dar-B-Dar for NFDC in 1988. He has also conducted workshops & lecturers for visual arts and communication.

कमल स्वरूप ने एफटीआईआई, पुणे में निर्देशन में पढ़ाई की। उन्होंने 1975-78 में इसरो, अहमदाबाद के लिए कुछ टीवी नाटक बनाए और 1977-78 में फिल्म्स डिवीजन के लिए कुछ वृत्तचित्र फिल्मों का निर्माण किया। उन्होंने सईद अस्तर मिर्जा और कुमार शाहनी की फिल्मों के लिए संवाद लिखे और मणि कौल की फ़िल्म के लिए कला निर्देशन किया। उन्होंने 1971 में एनएफडीसी के लिए ओम-दर-ब-दर प्रोडयुस की और उसका लेखन व निर्देशन भी किया। उन्होंने विजुअल आदर्श और कम्युनिकेशन के लिए कार्यशालाएं और व्याख्यान भी आयोजित किए।



FILMS DIVISION

The Films Division of India was established in 1948. For more than six decades, the organization has relentlessly striven to maintain a record of the social, political and cultural imaginations and realities of the country on film. It has actively worked in encouraging and promoting a culture of film-making in India that respects individual vision and social commitment. It holds more than 8000 documentaries, short films and animation films in its archives.

फिल्म्स ढिवीजन ऑफ इंडिया की स्थापना 1948 में हुई। छह दशक से भी अधिक समय से यह संगठन निरंतर देश की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक कल्पनाओं और वास्तविकताओं को फिल्मों में उतारने के लिए कार्यरत है। उसने भारत में फिल्म निर्माण को प्रोत्साहन और बढ़ावा देने तथा वैयक्तिक सोच एवं सामाजिक प्रतिबद्धता के लिए सक्रिय कार्य किया है। उसके बैनर तले 8000 से अधिक डॉक्य्मेंट्री फिल्मों, लघु फिल्मों और एनीमेशन फिल्मों का निर्माण हुआ है।

BEST DEBUT NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 75,000/-

KANYAKA । कन्याका





Citation

'For its wholly convincing mise-en-scene set in a convent run by Malayali nuns, wherein the grief and guilt of the young protagonist is presented in a manner that leaves a lot to the imagination of the viewer."

मलयाली ननों द्वारा संघालित कॉन्वेंट की पृष्ठभूमि पर बनी एक दर्शनीय फ़िल्म, जो एक युवा नन की पीख़ और अपराध बोध को इस प्रकार पेश करती है कि दर्शकों के लिए अनेक प्रश्न खडे हो जाते हैं।

KANYAKA कन्याका

Year 2013 / Malayalam / 35mm / Colour / 11 min Direction: Christo Tomy Production: SRFTI Cinematography: Lalitha Prasad Kalluri Editing: Gautum Nerusu Sound: Arka Ghosh

SYNOPSIS

seriously ill while all the others are preparing for the anniversary of the convent school. Sister Nirmala who looks after Sister Philomena is assigned to be with the actress Urvasi, the chief guest for the function. Sister Nirmala's happiness has no bounds as she adores the star. Things take a decisive turn when on the day of the anniversary, Sister Nirmala is asked to stay back and look after Sister Philomena whose condition has unexpectedly deteriorated.

In the 1990s in a convent in Kerala, Sister Philomena is यह 1990 के दशक की कहानी है जिसमें केरल की सिस्टर फिलामेना गंभीर रूप से बीमार हैं जबकि कॉन्वेंट के बाकी सदस्य रकुल की वर्षगांठ मनाने में जुटे हैं। सिस्टर निर्मला, जो सिस्टर फिलामेना की तीमारदारी में लगी हैं, को समारोह की मुख्य अतिथि अभिनेत्री उर्वशी के साथ रहने की जिम्मेदारी दी जाती है। सिस्टर निर्मला की खुशी का ठिकाना नहीं है क्योंकि वह अमिनेत्री उर्वशी को बहुत पसंद करती हैं। कहानी उस समय मोड लेती है जब समारोह के दिन सिस्टर निर्मला को सिस्टर फिलोमेना के साध रहने को कहा जाता है क्योंकि उनकी तबीयत बिगड गई है।

PROFILE



CHRISTO TOMMY

Christo Tommy did his Bachelor of Mass Communication and Video Production from Mar Ivanios College, Kerala University. He is a second-year PG Diploma student in film direction and screenplay writing at SRFTI.

किस्टो टॉमी ने मार इवानियोस कॉलेज, केरल युनीवर्सिटी से मास कम्यनिकेशन एंड वीडियो प्रोडक्शन में रनातक किया। वह एसआरएफटीआई में फ़िल्म निर्देशन एवं रक़ीनप्ले के लिए पीजी डिप्लोमा के दूसरे वर्ष के छात्र हैं।



SATYAJIT RAY FILM TELEVISION INSTITUTE

Named after Satyajit Ray, the SRFTI is an autonomous academic institute under the Government of India's Ministry of Information and Broadcasting. At present, SRFTI runs three-year postgraduate diplomas, offering specialization in direction and screenplay writing, cinematography, editing, sound design and production management.

सत्यजीत रे के नाम पर बनी एसआरएफटीआई भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्त अकादिमक संस्थान है। इस समय एसआरएकटीआई तीन साल का पोस्टग्रेजुएट ढिप्लोमा पाठ्यक्रम के साध निर्देशन, पटकथा, लेखन, सिनेमेटोग्राफी, संपादन, साउंड किजाइन और प्रोडक्शन प्रबंधन में विशेषज्ञता प्रदान करता है।

BEST BIOGRAPHICAL / HISTORICAL RECONSTRUCTION FILM सर्वश्रेष्ठ जीवनीपरक / ऐतिहासिक पुनर्निर्माण फ़िल्म RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

THE LAST ADIEU। द लास्ट ऐड्यू





Citation

'For its insight into the work of an exceptionally passionate documentary filmmaker blended with a frank and moving account of his daughter's attempt to come to terms with his estrangement from the family."

परिवार से विमुख, अत्यंत निष्ठावान फिल्मकार पर बनी एक असाधारण डॉक्युमेंट्री, जिसमें एक बेटी अपने पिता के जीवन का भावविष्टवल करने देने वाला वृतांत पेश करती है ।

THE LAST ADIEU । द लास्ट ऐड्यू

Year 2013 / English / Digital / Colour / 92 min

Direction: Shabnam Sukhdev Production: Films Division Editing: Jabeen Merchant Sound: Mohandas V.P. Music Venkatesh Shastri

SYNOPSIS

unravel the past and make a connection with her filmmaker father, S. Sukhdev, who revolutionized documentary film-making in India in the mid-1960s and died at the age of 46, leaving behind an unresolved relationship with his daughter. With the help of archival audio recordings, old photographs and Sukhdev's films, she constructs a picture of her father as she struggles to love and respect him for

This is a personal quest of a film-maker daughter to यह फ़िल्मकार बेटी की अपने फ़िल्मकार पिता एस. सुखदेव के अतीत की तलाश है जिन्होंने 1960 के दशक के मध्य में भारत में डॉक्य्मेंट्री फिल्मों के निर्माण में क्रांति लायी थी और अपनी बेटी के साथ अनसुलझे रिश्तों की कडी छोडकर वह 46 वर्ष की उम्र में चल बसे थे। अमिलेखों में कैद ऑडियो रिकॉर्डिंग्स, पुराने चित्रों और सुखदेव की फिल्मों के माध्यम से वह अपने पिता की संपूर्ण तस्वीर बनाती हैं और वह आदर एवं स्नेह प्रकट करने के लिए संघर्ष करती हैं जो वाकई उनके बीच था।

PROFILE



SHABNAM SUKHDEV

Shabnam Sukhdev specialized in screenwriting and direction from the FTII, Pune. She has produced, written and directed over 25 television films, serials, shorts and documentaries both in India and Canada. She is currently working in the capacity of Advisor, Outreach Initiatives at the FTII.

शबनम सुखदेव ने एफटीआईआई, पुणे से पटकथा लेखन और निर्देशन में विशेषज्ञता प्राप्त की। उन्होंने 25 से अधिक फिल्मों, धारावाहिकों, लघु एवं ढॉक्य्मेंट्री फिल्मों का भारत और कनाढा में निर्माण, निर्देशन एवं लेखन किया। वह इस समय एफटीआईआई में आउटरीच इनीशिएटिव के लिए सलाहकार के तौर पर कार्य कर रही हैं।



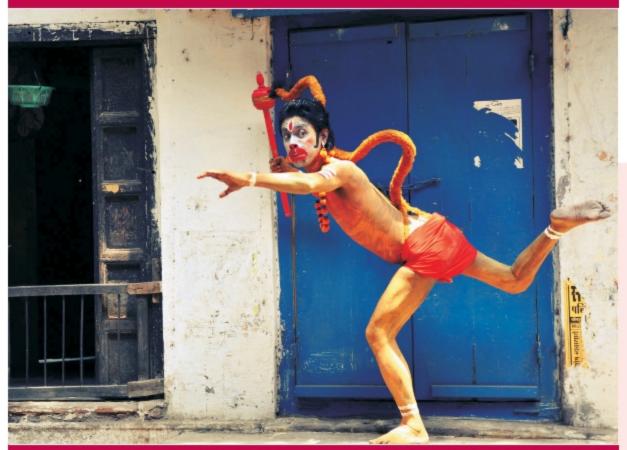
FILMS DIVISION

The Films Division of India was established in 1948. For more than six decades, the organization has relentlessly striven to maintain a record of the social, political and cultural imaginations and realities of the country on film. It has actively worked in encouraging and promoting a culture of film-making in India that respects individual vision and social commitment. It holds more than 8000 documentaries, short films and animation films in its archives.

फिल्म्स डिवीजन ऑफ इंडिया की स्थापना 1948 में हुई। छह दशक से मी अधिक समय से यह संगठन निरंतर देश की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक करुपनाओं और वास्तविकताओं को फिल्मों में उतारने के लिए कार्यरत है। उसने भारत में फिल्म निर्माण को प्रोत्साहन और बढ़ावा देने तथा वैयक्तिक सोच एवं सामाजिक प्रतिबद्धता के लिए सक्रिय कार्य किया है। उसके बैनर तले 8000 से अधिक डॉक्यमेंट्री फिल्मों, लघु फिल्मों और एनीमेशन फिल्मों का निर्माण हुआ।

BEST ARTS /CULTURAL FILM (SHARED) सर्वश्रेष्ठ कला / सांस्कृतिक फ़िल्म (साझा) RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

THE LOST BEHRUPIYA । द लॉस्ट बेहरूपिया





Citation

For a near-surreal depiction of a dying art form in a globalized society. The film combines elements of drama and visual art with a lament for a rich cultural

वैश्विक होते समाज में एक मृत प्राय होती हुई कला का सृष्ट्म चित्रण करने वाली फ़िल्म। यह सांस्कृतिक परंपरा को समृद्ध बनाये रखने के लिए नाटक एवं दृश्य कला का संगम कराती है।

THE LOST BEHRUPIYA। द लॉस्ट बेहरूपिया

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour 10 min

Direction: Sriram Dalton Editing: Sriram Dalton Production: Holybull Entertainment LLP Cinematography: Kailash Parihar, Ankur Rai, Saket Saurabh Sound: Avinash Singh Music: Vijay Verma

SYNOPSIS

perform on the street and are known to change their costume every day. The costumes of Behrupiyas, often inspired by popular mythology, showcase the vast range of Indian visual culture. The art form is now in decline with most practitioners living in poverty. This is the story of a behrupiya, who is going through a bad phase in modern society and how society is forcing him to shift his profession.

Behrupiyas are a community of impersonators who बेहरूपिया विविध रूप धरने वालों का समुदाय है जो रोज अपनी वेशभूषा बदलने के लिए जाने जाते हैं। उनकी वेशभुषा अक्सर मिथकों पर आधारित होती है और वे भारत की दश्यात्मक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह कला अब लुप्तप्राय: होने के कगार पर है। यह फिल्म एक बेहरूपिया की कहानी है जो आधनिक समाज में कठिन दाँर से गुजर रहा है और इसमें दिखाया गया है कि कैसे समाज उसे अपना पेशा बदलने के लिए मजबर करता है।

PROFILE



SRIRAM DALTON

Sriram Dalton has done his bachelor's in Fine Arts from BHU in 2001. He worked as a cinematography assistant in movies like Kisna (2004), Wagt (2005), Family (2006), No Entry (2006), God Tussi Great Ho (2007).

श्रीराम डाल्टन ने 2001 में बीएवयू से फाइन आर्ट्स में स्नातक किया। उन्होंने किसना (2005), फीमिली (2006) नो एंट्री (2006) गाँउ तुस्सी ग्रेट हो (2007) जैसी फिल्मों में छायांकन सहायक के तौर पर काम किया।



HOLYBULL ENTERTAINMENT LLP

With Rupesh Sahay as producer, Holybull Entertainment LLP is a film production company which has produced many ad films and short films, and public awareness short films for Jharkhand government. It is currently working on a feature film called Spring Thunder, based on rampant mining in Jharkhand.

रूपेश सहाव ने निर्माता के तौर पर जन जागरूकता के लिए होलीबुल इन्टरटेनमेन्ट एलएलपी फिल्म प्रोडवशन कम्पनी के लिए अनेक विज्ञापन फिल्में और लघ फिल्मों का निर्माण झारखंड सरकार के लिए किया है। वह इस समय झारखंड के खादानों पर आधारित *सिगंग थंडर* नामक फीचर फिल्म पर काम कर रहे हैं।

BEST ARTS /CULTURAL FILM (SHARED) सर्वश्रेष्ठ कला / सांस्कृतिक फ़िल्म (साझा) RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

O FRIEND, THIS WAITING!। ओ फ्रैंड, दिस वेटिंग!





Citation

'For its wholly unconventional investigation of the Devadasi tradition in South India, combining an appreciation of this delicate and sensuous art form with a genuine sociological exploration.

दक्षिण भारत में प्रचलित देवदासी प्रथा की अपरम्परागत दृष्टि से पढ़ताल करती फिल्म जिसमें इस अत्यंत संवेदनशील कला को विशुद्ध सामाजिक सरोकार के आइने से देखा गया है।

O FRIEND, THIS WAITING!। ओ फ्रैंड दिस वेटिंग!

Year 2013 / English / Telugu / Digital / 32 min

Direction: Sandhya Kumar and Justin McCarthy Editing: Sandhya Kumar Production: Justin McCarthy Cinematography: Amin Mahanti Sound: R Elangovan

SYNOPSIS

Such were the padams of Kshetrayya. A wandering poetmusician, Kshetrayya wrote for devadasis, the dancing courtesans at the courts of the seventeenth-century Nayaka kings. O Friend, This Waiting! reflects on the entwined fortunes of the padams and the women they were written for while dwelling in the performance spaces of temples and courts of the Nayaka period.

Could a song be full of love, and yet banal and trifling? वया प्यार से भरा गीत साधारण और तुच्छ हो सकता है? मशहूर कवि और संगीतकार क्षत्रैया ने सत्रहवीं सदी के नायक राजाओं के समय के देवदासी प्रथा पर यह कहानी लिखी है। ओ फ्रेंड. दिस वेटिंग नायकों के समय की मोदिरों में कार्यरत देवदासियों की व्यथाकथा बयान करती है।

PROFILE



JUSTIN MCCARTHY, SANDHYA KUMAR

Justin McCarthy is an American-born Western classical pianist, Bharatanatyam dancer and choreographer. He moved to India in 1979, learnt Bharatanatyam from Leela Samson for ten years, before beginning to teach it at the Shriram Bharatiya Kala Kendra at Delhi, where he has been teaching ever since. Sandhya Kumar holds an MFA in Film from San Francisco Art Institute, and an MA in Mass Communication from Jamia Millia University, New Delhi, and has been making documentaries/experimental shorts since 2007.

अमेरिका में जन्में जस्टिन मेकार्थी पश्चिमी शास्त्रीय प्यानिस्ट, भरतनाट्यम प्राप्त की। नर्तक और नृत्य निर्देशक हैं। श्रीराम भारतीय कला केन्द्र में शिक्षण से पहले, वह 1979 में भारत आये और लीला सेमसन से दस सालों तक भरतनाट्यम की शिक्षा प्राप्त की। **संध्या कुमार** ने सेन फ्रांस्सिको कला संस्थान से एमएफए की डिग्री ली तथा जामिया मिलिया विश्वविद्यालय नई दिल्ली से जन संचार में एमए किया। वह 2007 से डोक्युमेंट्री / प्रयोगात्मक लघु फिल्मों का निर्माण कर रही हैं।



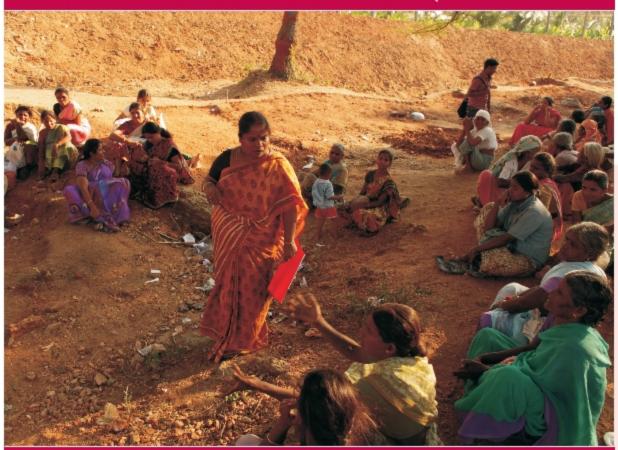
JUSTIN MCCARTHY

Justin McCarthy is an American-born Western classical pianist, Bharatanatyam dancer and choreographer. He moved to India in 1979, learnt Bharatanatyam from Leela Samson for ten years, before beginning to teach it at the Shriram Bharatiya Kala Kendra at Delhi, where he has been teaching ever since.

अमेरिका में जन्में जस्टिन मेकार्थी पश्चिमी शास्त्रीय प्यानिस्ट, मरतनाट्यम नर्तक और नृत्य निर्देशक हैं। श्रीराम भारतीय कला केन्द्र में शिक्षण से पहले, वह 1979 में भारत आये और लीला सेमसन से दस सालों तक भरतनाटयम की शिक्षा

BEST SCIENCE & TECHNOLOGY FILM सर्वश्रेष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी फिल्म RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

THE PAD PIPER । द पैड पाइपर



Citation

For its portrayal of a sensitive man with a profound belief in appropriate technology who came up with a simple piece of engineering - an affordable sanitary napkin that has had an extraordinary impact on the health of millions

एक अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति जो समुचित प्रौद्योगिकी में विश्वास रखता है और वह ऐसी तकनीक खोज निकासता है, जिससे किफायती सेनेटेरी नेपकिन बनाए जा सकें ताकि लाखों गरीब महिलाओं के स्वास्थ्य की देखभाल हो सके।

THE PAD PIPER। द पैड पाइपर

Year 2013 / English / Digital / Colour / 52 min

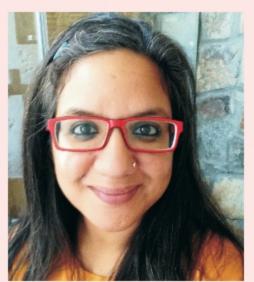
Direction-Production: Akanksha Sood Singh Cinematography-Editing-Sound: Sanjeev Monga Cinematography: Praveen Singh Music: Ashwani Verma Narration: Rupa Krishnan

SYNOPSIS

roots innovator, Arunachalam Muruganantham. It अरुणाचलम मुरुगानंतम की कहानी यह बताती है कि उनके आविष्कार से explores how his innovation, a low-cost sanitary-padmaking machine, is changing the face of menstrual hygiene for thousands of women across India. In itself it may not sound path-breaking, but this simple machine has the potential to change lives of women across the world and give them dignity.

This is the incredible story of a school dropout and grass- रकूल की पढ़ाई अधूरी छूटने के बाद जमीन से जुड़े आविष्कारक कैसे कम लागत के सेनेटरी पैड बनाने वाली मशीन से भारत भर में रजस्वला महिलाओं के स्वास्थ्य का नजारा बदल जाता है। सुनने में यह बात क्रांतिकारी नहीं लगती लेकिन यह साधारण मशीन दनियाभर में महिलाओं को मर्यादित जीवन दे सकती है।

PROFILE



AKANKSHA SOOD SINGH

Akanksha Sood Singh is a producer, director, researcher and still photographer. Starting out a decade ago, Akanksha is at the forefront of international natural history and science documentary programming in India. With a debut in research and production, she has gone from strength to strength, transforming small media houses into powerful multidimensional production companies and opening doors for Indian film-makers to direct commissions from international broadcasters in the wildlife film genre.

आकांक्षा सुद सिंड एक निर्माता, निर्देशक, शोधकर्ता और रिटल फोटोग्राफर हैं। करीब एक दशक पहले अपने करियर की शुरूआत करने वाली आकांक्षा भारत में अंतरराष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास और वैज्ञानिक वृत्तचित्र प्रोग्राम निर्माण क्षेत्र में बड़ा नाम हासिल कर चुकी हैं। शोध और निर्माण के साथ शुरूआत करने वाली आकांक्षा ने अपनी विशेषज्ञता का भरपूर इस्तेमाल करते हुए छोटे छोटे मीडिया हाउसेज को बहु-आयामी प्रोडक्शन कंपनियों में तब्दील करने में अहम भूमिका निभाई और वन्य जनजीवन फिल्म श्रेणी में भारतीय फिल्म निर्माताओं के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रसारकों के लिए काम करने के रास्ते प्रशस्त किए हैं।

BEST PROMOTIONAL FILM (SHARED) सर्वश्रेष्ठ प्रमोशनल फिल्म (साझा)

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

KUSH | कुश



Citation

'For sensitively revisiting a dark phase of Indian history when communal passions ran amuck. The film looks at the impact on young children and questions why we allow history to repeat itself."

यह फ़िल्म भारतीय इतिहास के उस काले दौर की ओर ले जाती है जब सांप्रदायिक उन्माद अपने चरम पर था। एक किशोर मन पर इस उन्माद के प्रभावों को दिखाती फिल्म यह प्रश्न खड़ा करती है कि हम इतिहास को स्वयं को दोहराने की अनुज्ञा क्यों देते हैं।

KUSH। कुश

Year 2013 / Hindi / Digital / Colour / 25 min

Direction: Shubhashish Butiani Production: Red Carpet Moving Pictures Pvt. Ltd. Cinematography: Mike Mcsweeny Editing: Shubashish Butiani and Tom Knight Sound-Music: Dharam and Sandeep

SYNOPSIS

assassinated by her two Sikh bodyguards, causing anti-Sikh riots to erupt throughout the country. A teacher travelling back from a field trip with her class of 10-yearold students struggles to protect Kush, the only Sikh student in the class, from the growing violence around him.

In 1984, Indian Prime Minister Indira Gandhi was भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 1984 में उनके दो सिख अंगरक्षकों ने हत्या कर दी और इसके बाद सिख विरोधी दंगे देश में भड़क उठे। ऐसे हालात में एक टीचर अपनी क्लास के बच्चों के साथ लौटते हुए एकमात्र सिख छात्र कुश की रक्षा करती है।

PROFILE



SHUBHASHISH BHUTIANI

Shubhashish Bhutiani was born in Calcutta and grew up in Mussoprie where he attended Woodstock School, After being heavily involved in the theatre program, he transitioned from acting to writing/directing and went to the United States to learn film-making from the School of Visual Arts in New York. Kush made its world premiere at the 70th Venice International Film Festival where it won the Orizzonti Prize for Best Short Film.

शुभाशीष भृटियानी का जन्म कोलकाता में हुआ जबकि उनका पालन-पोषण मसूरी में हुआ, जहां उन्होंने वुजस्टोंक स्कूल में पढ़ाई की। थिएटर कार्यक्रमों में बद-चदकर हिस्सा लेने के बाद उन्होंने अभिनय से लेखन / निर्देशन का रुख किया और अमेरिका जाकर न्यूयोंर्क में स्कूल ऑफ विज्ञल आदर्स से फिल्म निर्माण की बारीकियां सीखीं। कुरा का वर्ल्ड प्रीमियर 70वें वेनिस इंटरनैशनल फिल्म फेस्टिवल में हुआ था, जहां इसे सर्वश्रेष्ट शॉर्ट फिल्म की श्रेणी में ऑरिजोंति पुरस्कार से नवाजा गया।



RED CARPET MOVING PICTURES

Red Carpet Moving Pictures is a full service production house based out of Mumbai engaged in making high-quality content in advertising, television and movies. Red Carpet's production team has worked on several international assignments and has aligned with reputed production services companies across the globe.

रेड कार्पेट मूर्विंग पिक्चर्स, मुंबई स्थित एक फुल सर्विस प्रोडक्शन हाउस है, जो विज्ञापन, टेलीविजन और फिल्मों के लिए उच्चस्तरीय कंटेंट उपलब्ध कराता है। रेड कार्पेट की प्रोडक्शन टीम कई अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं पर काम कर चुकी है और उन्होंने दुनिया भर की प्रतिष्ठित प्रोडक्शन सर्विस कंपनियों के साथ मिलकर काम किया है।

BEST PROMOTIONAL FILM (SHARED) सर्वश्रेष्ठ प्रमोशनल फिल्म (साझा)

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

CHASING THE RAINBOW। चेज़िंग द रेनबो





Citation

For scratching the moral surface of the Indian middle class and holding a mirror for all of us who are torn between self-interests and ethical dilemmas.

यह फिल्म भारतीय मध्यम वर्ग की नैतिकता की सतह को करेदती है और हमें स्वार्थ और सदाचरण की ऊहापोह का अक्स दिखाती है।

CHASING THE RAINBOW। चेज़िंग द रेनबो

Year 2013 / English / Digital / Colour / 23 min

Direction: Charu Shree Ray Production: EduMedia India Cinematography: Avinash Arun Editing: Charu Shree Ray Sound: Bigyna Dahal Music: Bigyna Dahal

SYNOPSIS

work. When Lali finds work at a middle-class home in the city, she quickly learns her domestic chores. But Mithi, the 14-year-old idealistic daughter of the household is adamant that she will teach Lali how to read and write. Although initially supportive of Mithi's efforts to make a difference, her parents are displeased when Lali's studies start affecting her work. Will Lali end up losing everything she worked so hard for?

Nine-year-old Lali's parents have brought her to the city to नौ वर्षीय लाली के माता—पिता उसे काम करने के लिए शहर लेकर आते हैं। लाली को शहर में एक मध्य वर्ग के परिवार के यहां काम करने का मौका मिलता है तो वह बहुत जल्दी घर का सारा कामकाज सीख लेती है। लेकिन उस परिवार की 14 वर्षीय आदर्शवादी बेटी मीठी यह जिद पकड लेती है कि वह लाली को पढ़ना और लिखना सिखाएगी। शुरूआत में मीठी की इस पहल को परिवार पूरा समर्थन देता है, लेकिन जब लाली की पढ़ाई का असर उसके काम पर पड़ने लगता है तो परिवार नाराज होने लगता है। तो क्या लाली को वह सब कुछ खोना पड़ेगा, जिसके लिए

PROFILE



CHARU SHREE ROY

Charu Shree Roy graduated from FTII as an editor. She directed Hum Jo Taareek Raahon Mein Maarey Gaye, a non-fiction feature for the Ministry of Information and Broadcasting, Delhi, She has also worked on several films as an editor.

चारू श्री रॉय ने एफटीआईआई से संपादन की पढ़ाई की है। उन्होंने सचना एवं प्रसारण मंत्रालय के लिए एक नॉन-फिक्शन फिल्म हम जो तारीक राहों में मारे गए भी निर्देशित की है। चन्होंने कई फिल्मों का संपादन भी किया है।



EDUMEDIA

EduMedia enriches the lives of children through progressive initiatives using media. With over 15 years of focused experience, creative methodology and extensive research, EduMedia has continuously created inspiring and innovative offerings that are benchmarks in the Indian education space. It reaches out to over 3 million children from over 30,000 schools across the Indian subcontinent annually.

मीडिया के प्रगतिशील इस्लेमाल के माध्यम से एड्मीडिया बच्चों के जीवन को समृद्ध बनाता है। करीब 15 वर्ष के गहन अनुभव, रचनात्मक तरीकों और गहन शोध के साध एड्रमीडिया ने निरंतर ऐसी प्रेरणादायक और नवप्रवर्तक प्रस्तुतियां दी हैं, जिन्होंने भारतीय शिक्षा क्षेत्र में मानक स्थापित किए हैं। भारतीय उप-महाद्वीप में 30,000 से भी ज्यादा स्कूलों के जरिये 30 लाख से अधिक लोगों तक इसकी पहुंच है।

BEST ENVIRONMENT FILM INCLUDING AGRICULTURE सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फिल्म (कृषि सहित) RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

FORESTING LIFE। फ़ॉरेस्टिंग लाइफ़





Citation

'For its earthy look at a man, the forest he created all by himself, and the heroic effort that is necessary to sustain that forest without any government help.

यह फिल्म ऐसे व्यक्ति का चित्रण है जो खुद एक जंगल का निर्माण करता है और अपने नायकोचित कार्य से यह साबित करता है कि सरकारी मदद के बिना भी जंगलों को बचाया जा सकता है।

FORESTING LIFE। फ़ॉरेस्टिंग लाइफ़

Year 2013 / Hindi/Assamese / Digital / Colour / 69 min

Direction: Aarti Srivastava Production: Humanity Watchdog Foundation Cinematography: Ravi Baliyan Editing: Aarti Srivastava and Vijay Yadav Sound-Music: Sandeep Dharam

SYNOPSIS

deforestation, this story is about one man's generous drive behind creating the world's first manmade forest on a sandbar. It is the biggest forest in the middle of the river Brahmaputra in Assam, India. This feature takes an inside look at the life of Jadav Payeng who single handedly planted trees over the last 35 years and transformed a 1400 acre sandbar into a self-sustaining forest ecosystem.

In a world where uncaring eco-terrorists undertake इस दुनिया में जहां प्रकृति के प्रति असंवेदनशील लोग जंगलों की कटाई में लगे हैं, यह फिल्म एक अदम्य इच्छा शक्ति रखने वाले व्यक्ति की कहानी है जो मरूस्थल पर मानव निर्मित जंगल का निर्माण करता है। यह बड़ा जंगल असम के ब्रह्मपुत्र नदी के बीचोबीच स्थित है। यह जादव पाइंग की कहानी है जो अकेले पिछले 35 सालों से 1400 एकड मरूस्थल पर वृक्षारोपण कर पारस्थितिक संतुलन बनाने के लिए प्रयासरत हैं।

PROFILE



AARTI SRIVASTAVA

Aarti is an award-winning documentary film-maker and the founder of Humanity Watchdog Foundation (HWF). Her quest to tell human stories with a vision to drive change led her to produce documentaries like Land of Widaws, White Knight and Foresting Life, which gathered critical acclaim globally. Over the last 10 years, she has been involved with journalism, film and television and worked on projects with multinationals like AXN, CNBC, World-bank, Discovery, Channel 4, Colors and several others.

आरसी पुरस्कार प्राप्त वृत्तचित्र निर्माता है और हयूमैनिटी वॉचडॉग फाउंडेशन की संस्थापक भी हैं। परिवर्तनपरक मानवीय कथाओं को वित्रांकित करने की इच्छाशक्ति से प्रेरित होकर उन्होंने *लैंड ऑफ विडोज, व्हाइट नाइट* और *फोरेस्टिंग लाइफ* जैसे क्तचित्रों का निर्माण किया है, जिन्हें दुनिया भर में सराहा गया है। पिछले 10 वर्ष के दौरान वह पत्रकारिता, फिल्म और टेलीविजन से भी जुडी रही हैं और उन्होंने एएक्सएन, सीएनबीसी, वर्ल्य-बैंक, डिस्कवरी, चैनल 4, कलर्स और भी कई अन्य बहुराष्ट्रीय चैनलों में काम किया है।



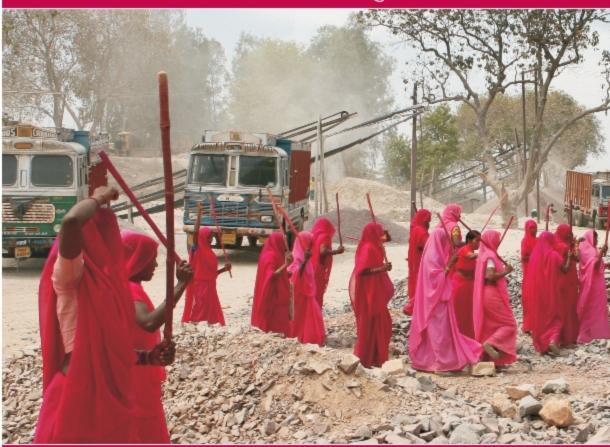
HUMANITY WATCHDOG FOUNDATION

Humanity Watchdog Foundation focuses on social innovations for transformative ideas to serve as a social mobilizer, an advocate or an agenda setter, influencing public and policy institutions in a socially desirable direction. It will promote human rights and bring social advancement through the use of media to engage humanity at large for positive influence and collective progress.

ह्यूमैनिटी वॉचडॉम फाउंडेशन परिवर्तनशील विचारों के लिए सामाजिक नवप्रवर्तक और एक सामाजिक प्रेरक, एक समर्थक और एजेंडा सेट करने का कार्य करता है, सामाजिक रूप से इच्छित दिशा में सार्वजनिक और नीतिगत संस्थानों को प्रमावित करता है। यह मानवाधिकार को बढावा देने के साथ ही सकारात्मक प्रमाव और संयुक्त प्रगति में मीडिया के इस्तेमाल के जरिये सामाजिक आधुनिकता लाता है।

BEST FILM ON SOCIAL ISSUES सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

GULABI GANG । गुलाबी गैंग





Citation

'For its powerful depiction of a crusader for the subaltern that takes us deeper into the continuing struggles of the rural Indian woman set in a milieu of

पुरुष प्रधान समाज में अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने वाली ग्रामीण भारतीय महिलाओं की अनुठी प्रस्तुति।

GULABI GANG। गुलाबी गैंग

Year 2013 / Hindi / Bundelkhandi / Digital / Colour / 96 min

Direction: Nishtha Jain Production: Piraya Film As, Raintree Films, Final Cut for Real Aps Cinematography: Rakesh Haridas Editing: Arjun Gourisaria Sound-Music: Peter Schultz

SYNOPSIS

rebellion with an unusual cast of characters. These are the pink-sari-clad women of the Gulabi Gang, who use words as weapons - demanding their rights, submitting petitions and haranguing corrupt officials. As it travels through the dusty and desolate landscape, Gulabi Gang uncovers a complex story, disturbing yet heartening.

Bundelkhand in central India, a region notorious for its सशस्त्र बागी डकैतों के लिए कुख्यात मध्य भारत का बुंदेलखंड क्षेत्र, rebels-turned-armed bandits, is witnessing a new kind of अनोखे पात्रों के विद्रोह का साक्षी है। इसमें गुलाबी साठी पहनने वाली महिलाएं गुलाबी गैंग बनाती हैं और अपने शब्दों को हथियार बनाकर अपने हक की लडाई के लिए भ्रष्ट अधिकारियों का सामना करती हैं। धूल धूसरित रास्तों से होते हुए गुलाबी गैंग की संघर्षरत महिलाओं की कहानी हिलाकर रख देती है।

PROFILE



NISHTHA JAIN

Nishtha Jain graduated from MCRC, Jamia, Delhi, and did her specialization in film direction from the FTII, Pune. Since then she's been working as an independent film-maker and lives in Mumbai. Her films include the critically acclaimed City of Photos (2005) which explores the fantasy worlds of street-side photo studios and the multi-award winning Lakshmi and Me (2008).

निष्ठा जैन ने दिल्ली स्थित जामिया यूनिवर्सिटी के एमसीआरसी से पढ़ाई करने के बाद एफटीआईआई, पुणे से फ़िल्म निर्देशन में विशेषज्ञता हासिल की है। तब से लेकर अभी तक वह स्वतंत्र फिल्म निर्देशक के तौर पर कार्य कर रही हैं और मुंबई में ही रहती है। समीक्षकों द्वारा सराही गई उनकी अन्य फिल्मों में 2005 में आई शिटी ऑफ फोटोज है, जो गलियों में मीजूद फोटो स्टुडियो के सपनों की दिनया में ले जाती है और 2008 में आई लक्ष्मी एंड मी।







PIRAYA FILM AS, RAINTREE FILMS. FINAL CUT FOR REAL APS

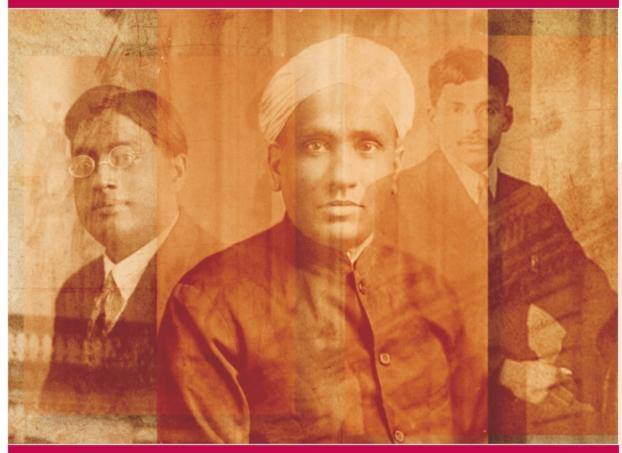
Piraya Film As is an esteemed independent Norwegian production company founded by Torstein Grude which produces creative documentaries of high integrity and standards, and with an ever increasing impact worldwide. Raintree Films is an Indian production company run by Nishtha Jain and Smriti Nevatia and has made several award-winning documentaries. Final Cut for Real Aps, founded by Signe Byrge Sørensen, is dedicated to high-end creative documentaries for the international market

पिराया फिल्म एज, नॉर्वे की एक प्रतिष्ठित स्वतंत्र प्रोजक्शन कंपनी है, जिसकी स्थापना टोरस्टीन ग्रुज ने की थी। यह कंपनी बेहद ईमानदार और कठे मानकों के साध रचनात्मक वृत्तिचित्रों का निर्माण करती है, जो दुनिया भर में काफी प्रभावी साबित होते हैं। रेनद्री फिल्म्स, एक भारतीय प्रोडवशन हाउस है, जिसका परिचालन निष्ठा जैन और स्मृति नेवतिया करती हैं, ने पुरस्कृत कई वृत्तचित्रों का निर्माण किया हैं। फाइनल कट फोर रियल ऐप्स की स्थापना सिरने वायर्ज सोरेनसेन द्वारा की गई है और यह अंतरराष्ट्रीय बाजार के लिए महंगे रचनात्मक वृत्तचित्रों का निर्माण करता है।

BEST EDUCATIONAL FILM सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

THE QUANTUM INDIANS। द क्वांटम इंडियंस





Citation

'For an extremely efficient and precise analysis of the contributions of three renowned scientists in a manner that not only educates today's generation but also provides insights into complex scientific phenomena in an accessible manner.'

तीन प्रख्यात भारतीय वैज्ञानिकों के योगदान का अत्यंत प्रभावशाली और सटीक विवरण देने वाली फिल्म जो न सिर्फ आज की पीढ़ी के लिए शिक्षाप्रद है, अपितु वैज्ञानिक जटिलताओं की परिचायक भी है।

THE QUANTUM INDIANS द क्वांटम इंडियंस

Year 2013 / English / Digital / Colour / 52 min

Direction: Raja Choudhury Production: PSBT and Public Diplomacy Division, MEA Cinematography: Lakshman Chandra Anand Editing: Nitin Tyagi Sound: Shailendra Singh Music: Sandy Singh Narration: David Vickery

SYNOPSIS

In the early part of the twentieth century, three remarkable Indian scientists revolutionized the worlds of physics and science. Satyendra Nath Bose, C.V. Raman and Meghnad Saha gave the world three remarkable discoveries and theories that would change physics and India forever. The Quantum Indians explores how these three brilliant Indian minds emerged out of the colonial shackles of British rule and racial prejudices to have such an impact on the world of science.

प्रारंभिक बीसवीं सदी के तीन बेहतरीन वैज्ञानिक दुनिया में भौतिक और विज्ञान में क्रांति का सूत्रपात करते हैं। सत्येंद्र नाथ बोस, सी. वी. रमन और मेघनाद साहा ने दुनिया को तीन बेजोड़ आविष्कार और सिद्धांत दिए जिससे भौतिक जगत और भारत की तस्वीर सदा के लिए बदल गई। द क्यांटम इंडियंस में इस बात की तलाश की गई है कि इन तीन प्रतिभाशाली मेघाओं ने ब्रिटिश राज की औपनिवेशिक बेडियों और नरलीय मेदभाव को किस तरह तोड़ा और विश्व विज्ञान जगत को प्रभावित किया।

PROFILE



RAJA CHOUDHURY

Raja is an award-winning multimedia producer and film-maker who has created films, websites and digital media campaigns in the US, UK and India. His acclaimed films include Sprittvality in the Modern World: A Dialogue with Ken Wilber and Traleg Rinpoche, I Believe: Universal Values for a Global Society, on the vision of Dr Karan Singh, The Modern Mystic, on Sri M of Madanapalle.

राजा एक पुरस्कार प्राप्त मल्टीमीढिया निर्माता और फ़िल्मकार हैं, जिन्होंने अमेरिका, ब्रिटेन और भारत में फ़िल्मों, वेबसाइटों और ढिजिटल मीढिया अभियानों की रचना की है। उनकी सराहनीय फिल्मों में श्यिरिचुएलिटी इन व मीर्डन वर्ल्ड : ए डायलोंग विव केन विस्वर और ट्रालेग रिनयोंच, डॉ कर्फ सिंह के नजरिये पर आई मिलीव : यूनिर्यसल बैल्यूज फोर एक ग्लोबल सोसायटी और मदनपैल्ले के श्री एम की व मोर्डन मिलिटक शामिल हैं।





PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST & PUBLIC DIPLOMACY DIVISION, MEA

PSBT is a non-governmental, not for profit trust with the mission to create and sustain a credible space for public service broadcasting in India which is independent, participatory, pluralistic and democratic, distanced form commercial imperatives and state/political pressures. Established in 2006, the Public Diplomacy Division of India's Ministry of External Affairs strives to foster a greater understanding of India and its foreign policy concerns.

पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग दूस्ट एक गैर सरकारी और गैर वाणिज्यक न्यास है जिसका मकसद भारत में पब्लिक ब्रॉडकास्टिंग सेवा के लिए प्रतिष्ठित और स्थायी जगह बनाना है और जो स्वतंत्र, सहमागी, बहुलतावादी और लोकतात्रिक है और जो अपने को व्यावसायिक और राज्य/राजनीतिक दवावों से दूर रखता है। मारत के विदेश मंत्रालय का पब्लिक विस्तामें सी विवीजन मारत की छवि और विदेश नीतियों को विश्व के पटल पर अंकित करने के लिए प्रवासरत है।

150 NON-FEATURE FILMS

BEST INVESTIGATIVE FILM सर्वश्रेष्ठ खोजपरक फिल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

KATIYABAAZ । कटियाबाज



Citation

For its cutting-edge investigation into the life of a typical Indian city, the film uses strong characters, juxtapositions and humour to create a visual arch that delineates the haves and have-nots of power."

एक सामान्य भारतीय करबे की गहन पडताल के माध्यम से यह फिल्म तुलनाओं और हास्य से एक दश्य पैदा करती है और लाम उठाने वालों एवं वंचितों को आमने सामने लाती है।

KATIYABAAZ । कटियाबाज्

Year 2013 / Hindi/Urdu/English / Digital / Colour / 84 min

Direction: Deepti Kakkar and Fahad Mustafa Production: Globalistan Films Pyt. Ltd. Cinematography: Maria Trieb-Eliaz, Amith Surendran, Fahad Mustafa Editing: Namrata Rood, Maria Trieb-Eliaz Sound: Kunal Sharma Music Direction: Amith Kilam, Rohul Ram, Nora Kroll-Rosenbaum

SYNOPSIS

Kanpur, the story unfurling along the tangled wires and tracing out lines of conflict of a diabolical complexity that unfolds in several towns and cities across the country. In a city with 15-hour power cuts, hundreds of people risk their lives to steal electricity. With the first female chief of the electricity company vowing to eliminate all illegal connections, the lines are drawn for a battle over electricity.

Sparks will fly! This is a film about the electrical supply in विजली की काँघ है! यह खाँक्यूमेंट्री उलझे हुए तारों से निकलती कानपुर और देशमर के कई शहरों में बिजली आपूर्ति की एक जटिल कहानी है। ऐसे शहर में जहां 15 घंटे तक बिजली की कटौती होती है. सैंकड़ों लोग अपने जीवन पर खेलकर बिजली चोरी करते हैं। बिजली कंपनी की पहली महिला अधिकारी इन गैर कानुनी कनेक्शनों को खत्म करने का संकल्प

PROFILE



FAHAD MUSTAFA, DEEPTI KAKKAR

Born in Kanpur, Fahad Mustafa has lived in Dammam, New Delhi, Vienna and Edmonton. He was an Erasmus Mundus Global Studies scholar. His previous film as director was FC Chechnya (Austria, 2010). Born in Delhi, Deepti Kakkar has been engaged in issues of social development and sustainable livelihood for the last ten years. She has previously directed a film on microfinance in India, and worked on story-development and as production manager on FC Chechnya.

कानपुर में जन्मे फहद मुस्तफा दम्मम, नई दिल्ली, विएना और एडमॉन्टन में रहे हैं। वह एरास्मुस मुंडस ग्लोबल स्टबीज के अध्येता हैं। उनकी पिछली फिल्म एफसी वेवन्या (ऑस्ट्रिया, 2010) थी। दिल्ली में जन्मी दीप्ति कक्कड़ पिछले दस साल से सामाजिक विकास और स्थाई रोजगार के अवसरों को लेकर कार्यरत हैं। जन्तोंने इससे पडले भारत में माइकोफोन पर बनी फिल्म का निर्देशन किया और एफसी खेवन्या के कथानक और विकास तथा प्रोडक्शन मैनेजर के तीर पर भी काम किया।



GLOBALISTAN FILMS

Globalistan Films is an independent production company that aims to tell stories beyond boundaries. It was founded by Deepti Kakkar and Fahad Mustafa.

ग्**लोबलिस्तान फिल्म्स** एक स्वतंत्र निर्माता कंपनी है, जिसका उददेश्य सीमाओं से परे की कहानियां कहना है। इसकी स्थापना दीप्ति कक्कड़ और फ़हद मुस्तफ़ा ने मिलकर की है।

BEST SHORT FICTION FILM सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फ़िल्म

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

MANDRAKE! MANDRAKE! । मैंड्रेक! मैंड्रेक!





Citation

For the deftly crafted story of a young man who transforms a rundown warehouse into an Aladdin's Cave through the fun and frolic of the moving image where magic, mystery and adventure become possible."

एक युवा के जीवन की खुबसुरत शिल्प में पिरोई गई कहानी जहाँ एक वेयरहाउस और रहस्य-रोमांच का संसार पसरा है।

MANDRAKE! MANDRAKE! । मैंड्रेक! मैंड्रेक!

Year 2013 / Hindi / 35mm / Colour / 25 min

Direction: Ruchir Arun Production: FTII, Pune Cinematography: Kavin Jagtiani Editing: Samarth Dixit Sound: Parthasarathi Sanyal Music: Gourab Dutta Cast: Tanaji Dasgupta, Shashi Bhushan, Sumeet Thakur, Anasuya Sengupta

SYNOPSIS

caretaker of a film property godown. There he discovers an old projector with a film can. The film is based on the adventures of Mandrake the magician. While he watches the exploits of this brilliant magician, Babu realizes that all the magical properties that are there in the film are also present in the warehouse with him.

Babu is a Bihari immigrant in Bombay, who works as a विहार से मुम्बई आया बाबू एक फ़िल्म सम्पत्ति के गोदाम का केयरटेकर है। वहां वह फिल्म के साथ एक पुराना प्रोजेक्टर पाता है। यह फिल्म जादगर मैंड्रेक के एडवेंचर्स पर आधारित है। वह प्रतिभाशाली जादगर की जादूगरियों को देखता है, तो उसे अहसास होता है कि फिल्म में देखी गई चीजे वेयरहाउस में भी मौजूद हैं।

PROFILE



RUCHIR ARUN

Ruchir Arun graduated in Mass Communication from St. Xaviers College, Kolkata, His film Man from Maldeo won the Special Jury Award in non-fiction section at the 1st National Students' Film Award and Students Film Festival of India, He has completed his final diploma project as a student at the FTII, specializing in

रुचिर अरुण ने सेंट जेवियर कॉलेज, कोलकाता से ग्रेजुएशन किया। उनकी फिल्म *मैन फ्रॉम मालवेव* ने पहले नेशनल स्टडेंट्स फिल्म अवॉर्ड एंड स्टडेंट्स फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया के गैर फीचर फिल्म सेक्शन में स्पेशल जूरी अवॉर्ड जीता। उन्होंने निर्देशन में विषेशज्ञता के साथ एफटीआईआई से डिप्लोमा पुरा



FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA

Established in 1960, the FTII, Pune, is India's foremost training institute for film-making, cinematography, editing and sound recording. It was set up on the premises of the erstwhile Probhat Film and has trained several pioneers of the New Indian Cinema and innumerable technicians both in mainstream Hindi films and

पुणे में 1960 में स्थापित एफटीआईआई फिल्म निर्माण, निर्देशन, सिनेमेटोग्राफी, संपादन और साउंड रिकॉर्डिंग में प्रशिक्षण देने वाला सर्वोच्च संस्थान है। इसकी स्थापना तत्कालीन प्रभात फ़िल्म की नींव पर हुई थी और इसने नए भारतीय सिनेमा तथा मुख्यधारा की हिंदी एवं क्षेत्रीय फ़िल्मों को अनेक पुरोधा दिए हैं।

BEST FILM ON FAMILY VALUES पारिवारिक मृल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म RAJAT KAMAL / स्वर्ण कमल ₹ 50,000/-

HEYRO PARTY । हेयरो पार्टी



Citation

For its poignant reflection of selfless dreams and aspirations, the film depicts the struggles and dilemmas of a poor family in a simple and compelling

यह फिल्म निस्वार्थ स्वप्नों और आकांक्षाओं का गरिमापूर्ण प्रतिबिंबन करती है और साधारण किंतु संशक्त सिनेमाई भाषा में एक निर्धन परिवार के असमंजस एवं संघर्ष को सामने लाती है।

HEYRO PARTY । हेयरो पार्टी

Year 2013 / Bengali / 35mm / Colour / 31 min

Direction: Deepak Gawade Production: Baishakhi Banerjee and Deepak Gawade Cinematography: Sudipta Muzumdar Editing: Gourabmoy Banerjee Sound-Music: Prashant Vadhyar

SYNOPSIS

ones who are neglected either fall off or find ways to fit in. Such is the story of Debu, the protagonist who wants to fit in. Heyro Party is the story of a young boy who is looking for attention from the outside world, unable to get it from his family. It explores the pathos of old needs passing away and true emotions coming.

Being different is not often accepted by the society. The भिन्न होना समाज में प्रायः खीकार नहीं किया जाता। जो हाशिये पर धकेले जाते हैं वे या तो पतन का शिकार हो जाते हैं या समाज में अपना रास्ता बना लेते हैं। यही कहानी है देबू की, जो समाज में फिट होना चाहता है। *हेयरो पार्टी* एक लडके की कहानी है जो बाहरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है और अपने ही परिवार में ध्यान हासिल नहीं कर पाता। यह पुरानी ज़रूरतों के हाशिये पर जाने और वास्तविक भावनाओं के सामने आने का बयान है।

PROFILE



DEEPAK GAWADE

Deepak Gawade started his career with television serials as production manager and shifted to feature films with Vishal Bharadwaj's Magbool as location manager. He has worked for Milan Luthria (Once Upon a Time in Mumbai and The Dirty Picture) and Neeraj Pandey (A Wednesday and Special Chhabees). This is his debut as director.

दीपक गावडे ने अपने कॅरियर की शुरूआत प्रोडक्शन प्रवंधक के तौर पर टेलीविजन धारावाहिकों से की और लोकेशन मैनेजर के तौर पर विशाल भारद्वाज की फ़िल्म मकबूल से वह फीचर फ़िल्मों में आए। उन्होंने मिलन लूथरा (वंस अपोन ए टाइम इन मुम्बई और उर्टी पिक्चर) तथा नीरज पांडे (ए वैंसडे और स्पेशल छब्बीस) के साथ भी काम किया। यह निर्देशक के तौर पर उनकी पहली फिल्म



BAISHAKHI BANERJEE

Baishakhi Banerjee started her carrier as crime journalist. She moved to Mumbai in 2005 and worked as supervising producer and then creative producer for several television shows like Kandy Flass, Shanna ki Shaadi, Virrudh, Mere Apne, Left Right Left, Choti Bahu 1, Aise Karo Na Vida, Maryaada, Veera, Junoon.

बैसाखी बनर्जी ने अपने कॅरियर की शुरूआत अपराध पत्रकारिता से की। इसके बाद वह 2005 में मुम्बई आ गई और कई टेलीविज़न शो जैसे कैंडी लॉस, शन्नो की शादी, विरूद्ध, मेरे अपने, लैट राइट, छोटी बहु 1, ऐसे करो ना विदा, मर्यादा, वीरा, जुनून के लिए सुपरवाइजिंग प्रोडयुसर एवं क्रिएटिव प्रोडयुसर के तौर पर

SPECIAL JURY AWARD (SHARED) / निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार (साझा) GIRISH KASARAVALLI / गिरीश कासरवल्ली RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1.00,000/-

Year / 2013 / English / Digital / Colour / 75 min

Direction: Girlsh Kasaravalli Production: Films Division Cinematography: G.S. Bhaskar Editing: Mohan Kamakshi Music: Bindu Malini Sound: Gokul Abhishek

> ANANTHAMURTHY...NOT A BIOGRAPHY...BUT A HYPOTHESIS अनतमूर्ति...नॉट ए बायोग्राफी...बट ए हाइपोथीसिस

SPECIAL JURY AWARD (SHARED) / निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार (साझा) SATYANSHU SINGH AND DEVANSHU SINGH / सत्यांश्र सिंह और देवांश्र सिंह RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 1,00,000/-

Year 2013 / Kashmiri / Digital / Colour / 32 min

Direction-Production-Editing: Satyanshu Singh and Devanshu Singh Cinematography: Sahir Raza Sound: Manoj Sikka and

TAMAASH । तमाश





GIRISH KASARAVALLI

In a career spanning thirty years, Girish Kasaravalli has won the National Film Award for Best Feature Film four times: Ghatashraddha (1977), Tabarana Kathe (1986), Thaayi Saheba (1997) and Dweepa (2001). In 2011, he was awarded Padma Shri, the fourth highest civilian award by Government of India. He

was a gold medalist from the FTII, Pune. He has received thirteen National Film Awards.

अपने तीस साल के कॅरियर में **गिरीश कासरवल्ली** ने सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के चार राष्ट्रीय पुरस्कार जीते-*घटशद्धा* (1977) ताबरणा कथे (1986) ताईसाडिया (1997) और द्वीपा (2001)। वर्ष 2011 में उन्हें पदमश्री से सम्मानित किया गया जो भारत सरकार का चौथा सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। उन्हें एफटीआईआई, पुणे में स्वर्ण पदक मिला था। उन्हें तेरह राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिल चके हैं।

Synopsis of the film at page no. 170

Citation

'For the clarity and the insight with which it looks at the work of Ananthamurthy, one of the finest Indian writers, whose work carries exceptional social significance."

'सामाजिक रूप से असाधारण महत्वपूर्ण भारत के वरिष्ठतम लेखकों में से एक श्री अनंतमूर्ति के कार्यों और जीवन के अत्यंत गहन और स्पष्ट चित्रण के



SATYANSHU SINGH AND DEVANSHU SINGH

A medicine graduate, Satyanshu Singh joined brother Devanshu, who was working in films as dialogue coach, script and continuity supervisor and assistant director even before finishing graduation in mass media. Self-

taught film-makers, the two are full-time screenwriters, poets, and teachers and aspire to direct their first feature soon.

मेडिसिन में रनातक की पढ़ाई करने के बाद **सत्यांशु सिंह** ने अपने भाई देवांशु के साथ काम करना शुरू किया जो जनसंचार में अपनी रनातक की पढ़ाई पूरी करने से पहले ही फिल्मों में संवाद प्रशिक्षक, पटकथा और निरंतरता निरीक्षक के तौर पर कार्य कर रहे थे। अपने अनुभवों से सीखकर फिल्म निर्माता बने ये दोनों पूर्णकालिक पटकथा लेखक, कवि और शिक्षक हैं और उनका सपना जल्द ही अपनी पहली फीचर फिल्म निर्देशित करना है।

Synopsis of the film at page no. 171

Citation

For presenting a heartwarming story of friendship in a lucid and engaging style and for using elements of the magical and the macabre to create a modern day fable of Kashmir.'

'घनिष्ठ मैत्री और आधुनिक कश्मीर के परिवेश की सम्मोहक प्रस्तुति के लिए।

BEST DIRECTION / सर्वश्रेष्ठ निर्देशन PRANJAL DUA / प्रांजल दुआ SWARNA KAMAL / स्वर्ण कमल ₹ 1,50,000/-

Year 2013 / No Dialogue / 35mm / Colour / 22 min

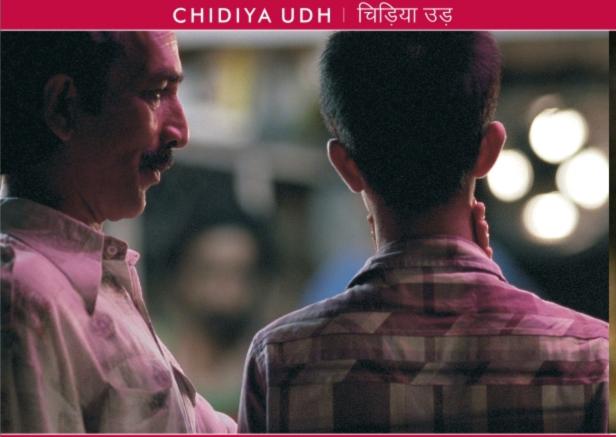
Direction: Pranjal Dua Production: FTII, Pune Cinematography: Sushant Arora Editing: Shweta Rai Sound: Gautam Nair Cast Yash Nimse, Sanghmitra Hitaishi, Vijay Shukla

BEST CINEMATOGRAPHY / सर्वश्रेष्ठ छायांकन KAVIN JAGTIANI / कविन जगतियानी RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Hindi / 35mm / Colour / 25 min

Direction: Ruchir Arun Production: FTII, Pune Cinematography: Kavin Jagtiani Editing: Samarth Dixit Sound: Parthasarathi Sanyal Music: Gourab Dutta Cast: Tanaji Dasgupta, Shashi Bhushan, Sumeet Thakur, Anasuya Sengupta

MANDRAKE! MANDRAKE!





PRANJAL DUA

Pranjal Dua is an Indian film-maker who studied at the FTII. His films stem from an overwhelming sense of wonder at the absurdity of the world around him. With his films, he hopes to examine his own identity within

this context of contemporary India. He currently resides in Mumbai.

प्रांजल दुआ ने फिल्म निर्माण की शिक्षा एफटीआईआई से प्राप्त की। उनकी फिल्में दुनिया में यत्र तत्र फैली विसंगतियों के बोध से प्रेरित हैं। अपनी फिल्मों से वह समकालीन भारत में अपने वजूद की पहचान कराते हैं। इस समय वह मुम्बई में रहते हैं।

Citation

'For his unique vision of urban anast told without dialogue. The de-emphasized narrative masterfully blends visual, sound, music and acting."

'शहरी आक्रोश को बिना किसी संवाद के अनुठे अंदाज में प्रस्तुत किया गया है। इसमें वृत्तात बहुत कौशल से दृश्यों, ध्वनि, संगीत और अभिनय से सामने आया है।



KAVIN JAGTIANI

Kavin Jagtiani did a diploma in cinematography from the FTII, Pune. He has shot a number of commercials and music videos. He has also worked as an assistant camera operator on films like Kaminey and Omkara. कविन जगतियानी ने एकटीआईआई, पुणे से सिनेमेटोग्राफी में ढिप्लोमा किया है। उन्होंने कई विज्ञापन और म्युजिक वीडियो की शुटिंग की है। उन्होंने कमीने और ओमकारा जैसी फिल्मों में असिस्टेंट कैमरा ऑपरेटर के तीर पर भी काम किया है।



Reliance Media Works is a film and entertainment services company. It offers end-to-end integrated services across the entire film and media services value chain to production houses, studios and broadcasters. रिलायंस मीढिया वर्क्स एक फिल्म और मनोरंजन सेवाएं प्रदान करने वाली कम्पनी है. वह फिल्म के लिए सभी प्रकार की सेवाएं प्रदान करती है।

Citation

For exhibiting a wide spectrum of hues, both colour and black and white, while picturising the action in a dark warehouse full of unlikely light sources as also for the simulation of a silent era film with amusing trick photography."

'अनेक असंभावित प्रकाश स्त्रोतों से भरे एक अंधेरे वेयर हाउस में रंगों और श्वेत-श्याम के असंख्य रूप सामने आते हैं और मूक फिल्मों का युग द्विक फोटोग्राफी से साकार होता है (

160 NON-FEATURE FILMS

NATIONAL FILM AWARDS'13 161

BEST AUDIOGRAPHY / सर्वश्रेष्ठ ऑडियोग्राफी GAUTAM NAIR / गौतम नायर RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / No Dialogue / 35mm / Colour / 22 min

Direction: Pranjal Dua Production: FTII, Pune Cinematography: Sushant Arora Editing: Shweta Rai Sound: Gautam Nair Cast: Yash Nimse, Sanghmitra Hitaishi, Vijay Shukla

Year 2013 / Hindi/Bundelkhandi / Digital / Colour / 96 min

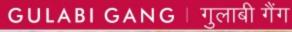
Direction: Nishtha Jain Production: Raintree Films, Piraya Film As, Final Cut for Real Ass Cinematography: Rakesh Haridas Editing: Arjun Gourisaria Sound-Music: Peter Schultz

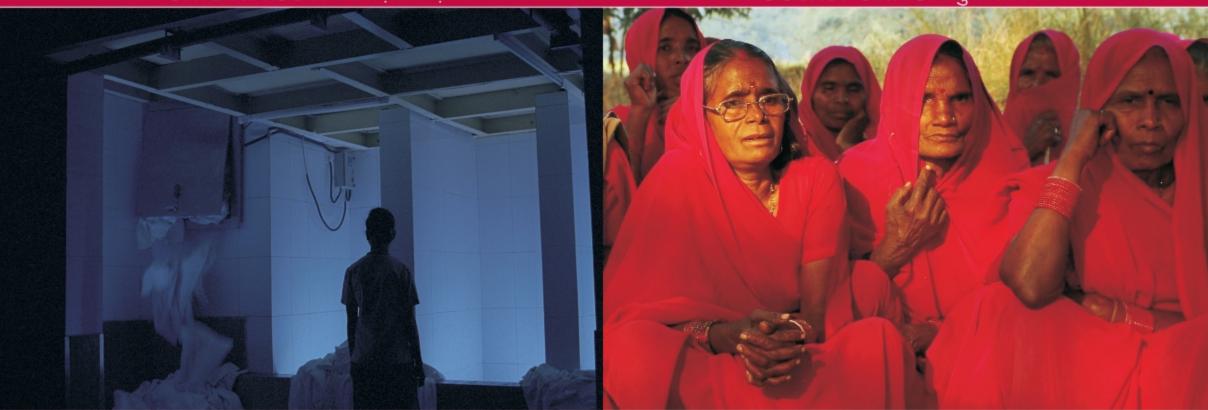
BEST EDITING / सर्वश्रेष्ठ संपादन

ARJUN GOURISARIA / अर्जून गौरीसरिया

RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

CHIDIYA UDH | चिड़िया उड़







GAUTAM NAIR

Gautam Nair is a graduate in audiography from the FTII, Pune. He has previously won the National Film Award for audiography in a non-feature film in 2011. He is currently based in Mumbai.

गौतम नायर ने एफटीआईआई, पुणे से ऑडियोग्राफी में रनातक किया। उन्होंने 2011 में भी गैर फीचर फिल्म श्रेणी में ऑडियोग्राफी के लिए पुरस्कार प्राप्त किया था। वह इस समय मुम्बई में ऑडियोग्राफी कर रहे हैं।

Synopsis of the film at page no. 170

Citation

'For a layered and resonant soundtrack with elements of ambiguity and discord contributing to an overwhelming sense of urban disconnect."

'आज की शहरी जिदंगी में विलगाव, असंवेदनशीलता और भावविहीनता की ध्वन्यात्मक प्रस्तुति के लिए।'



ARJUN GOURISARIA

Arjun Gourisaria studied editing at the FTII, Pune. He started working as a professional editor in 1989 and, in 1995, went on to establish a feature-film and advertising production company by the name of Black Magic Motion Pictures. Among others, the

company produced the National Award-winning Bengali film, Patalghar, as well as Sthaniya Sambaad, which won the best film award at the New York Indian Film Festival.

अर्जुन गौरीसरिया ने एफटीआईआई. पुणे में संपादन का अध्ययन किया। उन्होंने 1989 में पेशेवर संपादन की शरूआत की और 1995 में ब्लैक मैजिक मोशन पिक्चर्स नाम से एक फीचर फिल्म एवं विज्ञापन प्रोडक्शन कंपनी स्थापित की। इस कंपनी ने अन्य के अलावा राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त बंगाली फिल्म *पातालघर* और न्ययोंर्क फिल्म फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार जीतने वाली फिल्म स्थानीय संवाद का निर्माण किया।

Citation

'For imparting the film with its structure and rhythm, tempo and drama, movement and exposition."

'इनका संपादन फिल्म को उसके ढांचे और लय में तथा उसकी गति और नाटकीयता में अभिवृद्धि करता है।

BEST MUSIC DIRECTION / सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन ANURAG SAIKIA / अनुराग सैकिया RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Assamese / 35 mm / Colur / 59 min

Direction: Bhaskar Jyoti Mahanta Production: Swapnali Mahanta Cinematography: Suman Dowerah Editing: Ramen Bora Sound: Amrit Pritam Dutta Music: Anurag Saikia

BEST NARRATION/ VOICEOVER / सर्वश्रेष्ठ वृत्तांत / वॉयसओवर LIPIKA SINGH DARAI / लिपिका सिंह दरई RAJAT KAMAL / रजत कमल ₹ 50,000/-

Year 2013 / Odia / Digital / Colour / 16 min

Direction-Editing-Sound-Narration: Lipika Singh Daral Production-Cinematography: Indraneel Lahiri

YUGADRASHTA । युगद्रष्टा

KANKEE O SAAPO । कांकी ओ सापो





ANURAG SAIKIA

Anurag was born in Assam, and learnt Western classical music from Syed Sadullah who also taught him to play piano and guitar. He also learnt Indian classical music under the guidance of Pt. Karuna Sankar Thakuria. Anurag owns a full-fledged audio workstation with all

modern gear and equipments in Mumbai.

अनुराग का जन्म असम में हुआ। उन्होंने सैयद सदउल्लाह से पश्चिमी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली है और उन्हीं से पियानो और गिटार बजाना भी सीखा है। अनुराग ने पंडित करुणा शंकर ठाकरिया के निर्देशन में भारतीय शास्त्रीय संगीत की दीक्षा भी ली है। अनुराग के पास मुंबई में एक ऑडियो वर्कस्टेशन है, जो सभी आधुनिक वाच यंत्रों से सुसज्जित है।

Synopsis of the film at page no. 171

Citation

'For its spectacular blending of folk elements with a rich and nuanced classicism that conveys an enthralling period feel.

'लोक संगीत के माधुर्य से आप्लावित फ़िल्म में युग का अहसास साकार रूप ले लेता है।

IPIKA SINGH DARAI

Lipika Singh Darai hails from Mayurbhani district of Odisha. She was trained in Hindustani classical vocal music by Guru Prafulla Das, on whose memory she made her first film Eka Gachha Eka Manisa Eka Samudra, which won the Rajat Kamal for the Best Debut Film of a Director in the non-feature section at

the 60th National Film Awards.

सिपिका सिंह दरई ओडिशा के मयूरमंज जिले की हैं। उन्हें हिंदुस्तानी क्लासिकल गायन संगीत की शिक्षा गुरु प्रफुल्ल दास से मिली जिनकी स्मृतियों के बारे में उन्होंने अपनी पहली फिल्म एका गच्छर, एक मनीशा एका समुद्रा बनाई जिसे 60वें राष्ट्रीय फिल्मोत्सव में गैर फीचर फिल्म श्रेणी में निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रथम गैर फीचर फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

Synopsis of the film at page no. 171

Citation

For its soulful and enigmatic interior dialogue between two generations that operates at an allegorical level, gently synthesizing apparently unrelated visuals leaving the viewer with a strong sense of evocation."

'दो पीढ़ियों के आत्मीय अंदरूनी संवाद को अभिव्यक्त करता वृत्तांत, जो असंबंधित प्रतीत होने वाले अवयवों को कोमलता से समाहित कर दर्शक के मन में सप्तक्त भावबोध जगाता है (

NATIONAL FILM AWARDS'13 165

SPECIAL MENTION / विशेष उल्लेख SHWETA GHOSH / श्वेता घोष CERTIFICATE / प्रशस्ति पत्र

Year 2013 / English/Hindi / Digital / Colour / 52 min

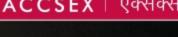
Direction-Editing: Shweta Ghosh Production: PSBT Cinematography: Divya Cowasji Sound: Anindo Bose Music: Sandunes, Paralights, The Mayris Narration: Divya Cowasji, Persis Taraporevala, Shazia Nigar, Shilpi Gulati

SPECIAL MENTION / विशेष उल्लेख KAVITA BAHL AND NANDAN SAXENA / कविता बहल और नंदन सक्सेना CERTIFICATE / प्रशस्ति पत्र

Year 2013 / Punjabi/Hindi / Digital / Colour / 52 min

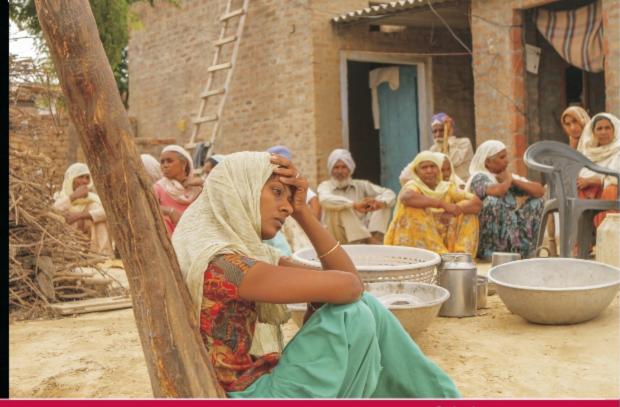
Direction: Kavita Bahl and Nandan Saxena Production: PSBT Editing-Cinematography: Nandan Saxena Music: Ustad Bahauddin Mohiuddin Dagar

ACCSEX । एक्सेक्स





CANDLES IN THE WIND । कैंडल्स इन द विंड





SHWETA GHOSH

Citation

Shweta Ghosh lives in New Delhi and works as an independent documentary film-maker and researcher. A silver medalist from the School of Media and Cultural Studies, Tata Institute of Social Sciences, Mumbai, she has explored her interest in food, travel, music and disability through research and film projects.

श्वेता घोष दिल्ली में रहती हैं और एक स्वतंत्र वृत्तिचित्र निर्माता और शोधकर्ता के तौर पर कार्य करती हैं। टाटा स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई के स्कूल ऑफ मीडिया एण्ड कल्बरल स्टडीज से रजत पदक प्राप्त खेता ने भोजन, सेर-सपाटा, संगीत और विकलांगता में अपनी दिलचस्पी को शोध और फिल्मी परियोजानाओं के जरिये और बेहतर तरीके से समझने की कोशिश की है।

Synopsis of the film at page no. 170

'For vigorously taking up the challenge of exploring sexuality in women perceived to be differently abled.

'एक विकलांग महिला की यौनिकता को खोजने की सघन चनौती के लिए।



AVITA BAHL AND NANDAN SAXENA

Nandan Saxena and Kavita Bahl work in the genres of documentary and poetry films. Their oeuvre spans the domains of ecology, livelihoods, development and human rights. Their films explore man's relationship with his environment. They conduct

workshops to initiate inquisitive minds into film-making and photography.

नंदन सक्सेना और **कविता बहल** लघु एवं काव्य फ़िल्मों के क्षेत्र में सकिय हैं। उनकी क्तियाँ पारिरिधतिकी, आम जीवन और विकास एवं मानवाधिकारों तक फैली हैं। उनकी फिल्में मानव के पर्यावरण के साथ रिश्तों को तलाशती हैं। वे फिल्म निर्माण और फोटोग्राफी के प्रसार के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करते हैं।

Synopsis of the film at page no. 170

Citation

For its chilling depiction of the ground realities in the bread basket of India. The tone and texture of the film contradict the prevalent narrative of it being the best place to live and work.

भारत के सर्वाधिक अन्न उत्पादक क्षेत्र की जमीनी वास्तविकताओं के ह्रदयविदारक चित्रण के लिए। फिल्म इस भ्रम को तोड़ती है कि यह रहने और काम करने के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान है।'

SPECIAL MENTION / विशेष उल्लेख MADONNE M. ASHWIN / मेडोन्न एम. अश्विन CERTIFICATE / प्रशस्ति पत्र

Year 2013 / Tamil / Digital / Colour / 8 min

Direction: Madanne M. Ashwin Production: Curio Films Cinematography: Raja Bhattacharlee Editing: Abhinay Sunder Nayak Sound: Abhinav Sunder Nayak

SPECIAL MENTION / विशेष उल्लेख RAJDEEP PAUL AND SARMISHTHA MAITI / राजदीप पॉल और शर्मिष्ठा मैती CERTIFICATE / प्रशस्ति पत्र

Year 2013 / English, Bengali / Digital / Colour / 70 min

Direction-Editing: Rajdeep Paul and Sarmishtha Maiti Production: Urmi Basu Cinematography: Mrinmoy Mondal Sound: Partha

AT THE CROSS ROADS: NONDON BAGCHI LIFE AND LIVING एट द क्रॉस रोड्स : नंदन बागची लाइफ एंड लिविंग





MADONNE M. ASHWIN

Madonne M. Ashwin worked as a software engineer for an MNC before joining a reputed film institute called Film Camp in Bangalore. After the course, he participated in a Tamil TV reality show called Noalaya Iyakunar, for short film makers and started making short films. He won the award for the best director of the season from a jury comprising of veteran Tamil film-

makers.

मेडोन्न एम. अश्विन बेंगलुरु स्थित एक प्रतिष्ठित फ़िल्म संस्थान फ़िल्म कॅंप में आने से पहले एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के साथ सॉफ्टवेयर इंजीनियर के तौर पर कार्यरत थे। पाठ्यक्रम पूरा होने के बाद उन्होंने लघु फिल्म निर्माताओं के लिए बनाए गए एक तमिल टीवी रिएलिटी शो *नालया इएकुनार* में हिस्सा लिया और फिर शुरू हुआ सिलसिला लघु फिल्में बनाने का। उन्हें दिग्गज तमिल फिल्म निर्माताओं के एक निर्णायक मंडल ने इस सीज़न का सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के पुरस्कार से सम्मानित किया।

Synopsis of the film at page no. 170

Citation

'For its searing critique of middle-class hypocrisy and a corrupt society as seen through the eyes of an impressionable child.

एक मासम बच्चे की दृष्टिं से मध्यम वर्ग के पाखंड और स्रष्ट समाज के चित्रण के लिए।'



RAJDEEP PAUL AND SARMISHTHA MAITI

Rajdeep Paul and Sarmishtha Maiti are independent film-makers based in Kolkata who have been working jointly for the last few years doing independent film projects of different genres.

राजदीप पॉल और शर्मिष्ठा मैती कोलकाता में रहने वाले स्वतंत्र फिल्म निर्माता है, जो पिछले कछ साल से साथ मिलकर विभिन्न श्रेणियों की स्वतंत्र फिल्म परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं। शर्मिष्ठा मैती ने जाधवपुर यूनिवर्सिटी से तुलनात्मक साहित्य में रनातकोत्तर की पढ़ाई की है और एसआरएफटीआई से सिनेमा (संपादन में विशेषज्ञता) के साथ पीजी डिप्लोमा किया है। राजदीप पॉल ने फिल्म बनाने के अपने सपने को पूरा करने के लिए अपना इंजीनियरिंग करियर छोड़कर एसआरएफटीआई से सिनेमा (पटकथा और निर्देशन में विशेषज्ञता) में पीजी डिप्लोमा किया।

Citation

'For an entertaining biography of a wonderfully engaging personality, with shades of a near chaotic lifestyle, set in a period known for its path-breaking music."

'लीक से हटकर माने जाने वाले संगीत युग की पृष्ठभूमि में अराजक जीवन शैली की छायाओं के साथ एक अद्भुत रूप से बाँघ लेने वाले व्यक्ति के मनोरंजक चित्रण के लिए।

Synopsis of the film at page no. 170

168 NON-FEATURE FILMS

NATIONAL FILM AWARDS'13 169

ACCSEX

Within stifling dichotomies of normal and abnormal, lie millions of women negotiating with their identities. This film explores notions of beauty, the Tdeal body and sexuality through four storytellers, four women who happen to be persons with disability. Through the lives of Natasha, Sonali, Kanti and Abha, it brings to the fore questions of acceptance, confidence and resistance to the normative.

सामान्य एवं असामान्य विसंगतियों की घुटन में लाखों महिलाएं अपनी पहचान की तलाश कर रही हैं। इस फिल्म में सींदर्य और 'आदर्श शरीर' की घारणाओं को सामने लाने का प्रयास किया गया है और चार विकलांग महिलाओं की यीनेच्छाओं को प्रकट किया गया है। नताशा, शोनाली, कांति और आभा के माध्यम से आम जीवन से इटकर स्वीकार्यता, आत्म विश्वास और प्रतिरोध को सामने लाया गया है।

ANANTHAMURTHY...NOT A BIOGRAPHY...BUT A HYPOTHESIS

Dr U.R. Ananthamurthy, renowned Kannada writer and winner of the Jnanapeeth Award, is a thinker of international repute, also widely recognized for his social activism. This film foregrounds the vision of his fiction and his reflections on Gandhian thought, socialism and diverse cultural issues that are explicated by critics and thinkers who have been interacting with him for several decades. ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात कन्नढ लेखक ढॉ. यू. आर. अनन्तमूर्ति अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विचारक हैं और अपनी सामाजिक सक्रियता के लिये जाने जाते हैं। यह फिल्म उनके उपन्यासों, गांधीवादी विचारों, सामाजिक एवं विभिन्न सांस्कृतिक सरोकारों का प्रतिबिन्न है, जो कई दशकों से उनके सम्पर्क में आने वाले समालोचकों एवं विचारकों के व्याख्यान का विषय रहे हैं।

AT THE CROSSROADS: NONDON BAGCHI LIFE AND LIVING

This is a biographical documentary on eminent Indian percussionist and exponent of rock and jazz music, Nondon Bagchi, who still plays his brand of '60s rock at the age of 60 with his band Hip Pocket and is an inseparable member of the internationally acclaimed Carlton Kitto Jazz Ensemble. The film takes a deeper look into the musical journey of Nondon Bagchi and his entire generation of musicians. It is also a critical study of the evolution of music in Kolkata.

यह प्रख्यात भारतीय रॉक एंड जैज संगीतकार नंदन बागची के जीवन पर आधारित है जो अब भी साठ के दशक का अपना बैंड 😥 की उम्र में भी बजाते हैं और उनका बैंड हिप पॉकेट अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कार्ल्टन किटओ जैज एन्सेंबल का अट्ट हिस्सा है। यह फिल्म नंदन बागची और उनके साथ की समुची पीढ़ी की संगीत यात्रा को प्रस्तुत करती है। यह कोलकाता में संगीत के प्रादर्भाव का विश्लेषण भी देती है।

CANDLES IN THE WIND

Punjab, the food bowl of India, is in the news for policy-induced non-remunerative agriculture and escalating farm-suicides. Women of rural Punjab have long forgatten to sing the songs of harvest. This film documents the march of widows of the Green Revolution as they renegotiate the rules of engagement and the politics of domination in their bid to survive. Their struggle gives us a window into the social-economic flux in rural India.

भारत के सर्वाधिक अन्न उत्पादक क्षेत्र पंजाब, जो कि नीति जनित अलाभकारी कृषि तथा किसानों की आत्महत्वाओं के कारण सर्खियों में रहता है। पंजाब की ग्रामीण महिलाएं फसल कटाई के गीत गाना लंबे समय से मूल चुकी हैं। हरित क्रांति के कारण विश्वता हुई महिलाएं राजनीतिक प्रमुख को मंग करने का ठान लेती हैं क्योंकि उन्हें जीना है। उनका यह संघर्ष ग्रामीण भारत की सामाजिक आर्थिक परिस्थिति से परिचित कराता है। फिल्म इसी का दस्तावेज है।

The giant wheels of the city grind thousands between them. A young bay from a chicken farm and a housekeeping girl in a luxury hotel - each one must give the other strength to try and escape this fate, as nameless chicken continue to feed the city slaughterhouses.

शहरों के विशाल पहिये हजारों को रींद जाते हैं। मुर्गा फॉर्म का एक द्वा और लग्जरी होटल की हाउसकीपिंग करने वाली एक लड़की एक दूसरे को सहारा देते हुए अपनी नियति को बचाने का संघर्ष करते हैं जबकि अनाम मुने शहर के कसाइखाने में कटते रहते हैं।

DHARMAM

Arjun is getting ready for a fancy dress competition. His mam is rehearsing him to recite the English dialogues. Arjun argues about how a beggar would talk in English instead of in Tamil. A traffic constable, on his first day at work, offers money to a beggar. At work, a traffic sub-inspector makes the constable collect bribes. The beggar encounters Arjun, alone in a car. The beggar expresses his pain as a poem in Tamil. In the competition, Arjun recites the Tamil poem which the beggar had recited. The constable affers the bribe he collected to the beggar. The sub-inspector hangs his head in shame.

अर्जुन एक फैंसी ढ्रेस पार्टी के लिए तैयार हो रहा है। उसकी मां अंग्रेजी संवाद बोलने का अभ्यास करा रही है। अर्जुन इस बात का तर्क दे रहा है कि कैसे कोई मिखारी तमिल के बजाए अंग्रेजी में बोलेगा। एक यातायात पुलिस वाला अपनी स्यूटी के पडले दिन भिखारी को पैसे देता है। यातायात सब इंस्पेक्टर कांस्टेबल से रिश्वत जमा कराता है। निखारी का सामना अकेले एक कार में अर्जुन से होता है। निखारी अपनी पीढ़ा को तमिल कविता के रूप में व्यक्त करता है। प्रतियोगिता में अर्जुन वही तमिल कविता सुनाता है जो मिखारी ने उसे सुनाई थी। यातायात पुलिस वाला मिखारी को वही पैसे देता है जो उसने रिश्वत में जमा किए थे। सब इंस्पेक्टर का सिर शर्म से

SYNOPSES / सारांश

KANKEE O SAAPO

The film is a conversation between a girl and her grandaunt whom she calls her Aai. Two screens run simultaneously throughout the film giving a notion of a letter. The dialogue arising from the two screens trigger a sense of conflict between the inside and the outside, the old and the new, land and the sea, night and day, village and the city, visual and aural.

फिल्म एक लडकी और उसकी ताई के बीच का संवाद है जिसे वह आई कहकर बुलाती है। दो स्कीन इसमें लगातार साथ-साथ चलती हैं और यह फिल्म एक खत का अङसास कराती है। दोनों रक़ीन के संवाद बाहरी और भीतरी, पुराने और नए, जमीन और समुद्र, रात और दिन, गांव और शहर, दृश्य एवं वृतांत के बीच का टकराव पेश करते हैं।

TAMAASH

Anzar faces scorn from his elders for his poor performance in school and is constantly compared to the other school kids. Expected to outscore the high-achieving Sadat in the next exam, he seeks the help of a mysterious stranger. But following his advice may have serious and unintended consequences for Anzar and his kid brother.

अंजर को स्कल में अच्छे नंबर न लाने के कारण हमेशा खंट पडती रहती है और उसकी स्कल के दसरे बच्चों से तलना की जाती है। सादत अगली परीक्षा में अव्यल आने के लिए एक रहस्यमय अजनबी की मदद लेता है किन्तु उस अजनबी की सलाह के अंजर और उसके भाई के लिए अनवाहे परिणाम होते हैं।

YUGADRASHTA

The film, based on the life and times of Pitambar Dev Goswami (1885-1962), starts with the central character along with his biographer Gangadhar discussing the extraordinary life of the Sattradhikar - the chief of the Vaishnavite monastery called Garmur Sattra of Majuli, the huge river island of great ethno classical heritage. It shows the pontiff's effort in spreading education. It ends with the arrival of dawn when the pontiff spells out his dream of a greater Assam where all communities like the Boro, the Mising and the

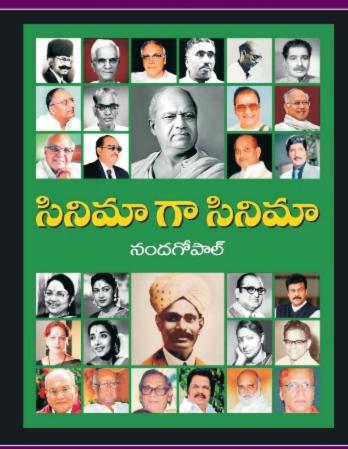
वह फिल्म पीताम्बर देव गोस्वामी (1885–1962) के जीवन और काल पर आधारित है। यह केंद्रीय किरदार और के आत्म कथा लेखक गंगाधर के साथ शरू होती है और इसमें महान प्राचीन विरासत से लबरेज गरमुर सत्र मजुली के वैणव मठ के प्रमुख सत्राधिकार के असाधारण जीवन की कहानी है। यह उनके शिक्षा प्रसार को दर्शाती है। यह बृहद असम के सूर्योदय से समाप्त होती है जिसमें सभी समुदाय जैसे बोड़ो, मिसिंग और मुस्लिम सभी सदभाव से जिएंगे।

NATIONAL FILM AWARDS'13 171 170 NON-FEATURE FILMS



BEST BOOK ON CINEMA सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक SWARNA KAMAL / स्वर्ण कमल ₹ 75,000/-

CINEMA GA CINEMA



Citation

'Cinema Ga Cinema is a refreshing treatise on various aspects of film-making from its beginning in the early 20th century to the present and even into the future. Veteran film journalist Shri Nandagopal deals in an exhaustive, research-based and yet elegant manner with different aspects of the art of cinema, aesthetic values, roles of dance and music, photography, costumes and myriad other aspects of film-making not just in India but even in world cinema. His extensive exposure and experience in the film industry lends richness to all parts of the book.'

सिनेमा गा सिनेमा फिल्म निर्माण कला के विमिन्न पहलुओं पर ताज़ा निकंब पेश करते हुए प्रारंभिक 20वीं सदी से वर्तमान तक और भविष्य में भी सिनेमा की संभावनाओं को खोजती है। जाने माने फिल्म पत्रकार नंदगोपाल ने सिनेमा के अलग—अलग पक्षों, कलात्मक मूल्यों, संगीत तथा नृत्य की भूमिकाओं, फोटोग्राफी, वेशनूषा समेत फिल्म निर्माण के सैंकड़ों अन्य पक्षों पर गहन, शोवपरक और सीम्य तरीके से अपना चिंतन प्रस्तुत किया है। और उन्होंने मारत के ही नहीं बल्कि विश्व सिनेमा पर भी दृष्टि डाली है। फिल्मोद्योग में जनका व्यापक अनुभव इस पुस्तक को बेहद समृद्ध बनाता है।

CINEMA GA CINEMA सिनेमा गा सिनेमा

Telugu: Author: Nandagopal Publisher: Praga India, Hyderabad

SYNOPSIS

Cinema Ga Cinema [Cinema as Cinema] is so designed as to help the reader learn and study each and every facet of film-making from the point of view of key figures involved on both sides of camera. It looks back at the cinematic past, evaluates the artistic, technical and aesthetic accomplishments of the great masters of cinema. It is an attempt to raise the standard of film literacy.

सिनेमा गा सिनेमा कैमरा के आगे और पीछे रही हस्तियों के माध्यम से फिल्म निर्माण के प्रत्येक पहलू से पाठक को परिचित कराती है और उसका गहन अध्ययन पेश करती है। यह सिनेमा के अतीत को झांकती है और सिनेमा के महान व्यक्तित्वों का कलात्मक, तकनीकी और साँदर्यात्मक उपलब्धियों का मूल्यांकन करती है। यह फिल्म निर्माण और समझ के मानक को उन्नत बनाने का प्रयास करती है।

PROFILE



Author: NANDAGOPAL

With his path-breaking journals Kinema and Tefugutera, Nandagopal carved a niche for himself as a never-failing advacate for good and meaningful cinema. He participated in the first Film Appreciation Course held by FTII, Pune, was a member of the Advisory Panel, CBFC, for 8 years, and a delegate of IFFI and FILMOTSAV for 20 years. His long association with the living legends of Indian cinema has made him an authority on cinema.

नंदगोपाल ने अपनी लीक से हटकर पत्रिका सिनेमा और तेलुगुतेश के माध्यम से अच्छे और सार्थक सिनेमा के अनन्य पैरोकार के रूप में अपना स्थान बनाया है। उन्होंने एफटीआईआई, पुणे में पहले फिल्म एप्रिसिएशन कोर्स में हिस्सा लिया। वह आठ साल तक सीबीएफसी के सलाइकार मंहल के सदस्य रहे और बीस वर्ष लक आईएफएफआई तथा फिल्मोत्सव के प्रतिनिधि रहे। भारतीय सिनेमा जगत की प्रख्यात हरितयों के साथ उनका नजदीकी संबंध उन्हें सिनेमा का प्रामाणिक लेखक बनाता है।

PRAGA INDIA HYDERABAD

Publisher: PRAGA INDIA, HYDERABAD

Praga India is a sole proprietorship firm of N. Kalpana Devi which has 20 years' standing as graphic designers and in print services. Cinema Ga Cinema is its maiden publishing venture.

ष्मागा इंढिया एन. कल्पना देवी की प्रोपराइटर फर्म है जो बीस सालों से ग्राफिक ढिजाइनिंग और प्रिंट सेवाएं प्रदान कर रही है। सिनेमा गा सिनेमा इसका पहला प्रकाशन है।

174 BEST WRITING ON CINEMA NATIONAL FILM AWARDS' 13 175

BEST FILM CRITIC सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म समीक्षक SWARNA KAMAL / स्वर्ण कमल ₹ 75,000/-

ALAKA SAHANI । अलका साहानी



PROFILE

Alaka Sahani is a Senior Assistant Editor with The Indian Express, Mumbai, and heads its Features section. During her journalistic career spanning over 15 years, she has worked for Hindustan Times (Kolkata and Mumbai) and The Times of India, Kolkata. Through her articles she tries to highlight different facets of cinema beyond the glamour and gossip. She is currently working on a book on Achhut Kanya for HarperCollins Publishers India.

खलका साहानी इतियन एक्सप्रेस, मुम्बई की वरिष्ठ सहायक संपादक हैं और इसके फीचर सेक्शन की प्रमुख हैं। अपने 15 वर्ष के पत्रकारिता जीवन में उन्होंने हिंदुस्तान टाइन्स (कोत्स्काता एवं मुम्बई) और टाइन्स ऑफ इंडिया, कोलकाता में कार्य किया। अपने लेखों के जरिए वह ग्लेमर और गपशप से परे सिनेमा के विभिन्न पहनुओं को सामने लाती रही हैं। वह इस समय हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया के लिए एक पुस्तक अछूत कन्या पर कार्य कर रही है।

Citation

Through her articles published in 2013, film critic Alaka Sahani has highlighted facets of cinema beyond glamour and gossip by delving deeper into the contemporary relevance of iconic film makers. The Jury recommends her for the award for the non-mainstream theme of her articles and the sensitivity with which she has presented these

issues.' फिल्म समीळक अलका साहानी ने 2013 में प्रकाशित हुए अपने आलेखों के माध्यम से ग्लैमर और गपशप की दुनिया से परे असिता के पोचन पहलूजों को उभारा था। जूरी ने इन आलेखों में विकिष्ठ विषयों पर उनके संवेदी समीक्षात्मक दृष्टिकोण के लिए उन्हें नॉन–मेनस्ट्रीम थीम के लिए पुरस्कार हेतु चुना है।

